संघर्ष, प्रेम और क्षति की कहानी

कलयुग का मजनू

रमेश चंद्र विद्यार्थी

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Ramesh Chandra Vidyarthy 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-820-9

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: January 2026

प्राक्कथन

मनुष्य का निजी जीवन अत्यंत ही गूढ़ एवं जटिल होता है। अपने जीवन का रहस्य सिर्फ वही जानता और समझता है, जो जीवन को जीता है। दूसरे को सिर्फ वही पता होता है जो वह व्यक्ति व्यक्त करता है अथवा दर्शाता है। दूसरे व्यक्ति ने जैसा चश्मा पहन रखा है, उसे संसार वैसा ही दिखाई देता है। आदमी की सोच और नीयत निजी होती है, उसे कोई बदल नहीं सकता। ये बात अलग है कि जब उसके ऊपर बीतती है तो उसके चश्मे का रंग बदल जाता है। कुछ लोग संसार में घूम-घूमकर अपनी कपटपूर्ण झूठी बातों से लोगों को बरगलाने का कुत्सित प्रयास करते हैं तथा लोगों पर कीचड़ उछालने का कोई अवसर नहीं छोड़ते। वहीं कुछ लोग अपनी दुखद घटनाओं को हृदय में समेटे हुए शान्तिपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं। यह पुस्तक एक व्यक्ति के साथ घटित लगभग दो वर्ष के निजी जीवन की सत्य घटनाओं पर आधारित है। उन्नीस वर्षीय एक सीधे-सादे युवक को जब निर्ममता पूर्वक घर से बेदखल कर दिया जाता है तो वह अत्यंत निरीह हो जाता है। यदि अन्य लोग उसकी तात्कालिक सहायता न करें, तो उसे भूखे पेट रहना पड़ सकता है। घर से बेदखल बेसहारा व्यक्ति को यदि सही रास्ता मिल गया तब तो वह सम्हलकर आगे बढ़ जायेगा, नहीं तो उसका भटकना निश्चित है। सच्चा प्यार व्यवहारिक नहीं होता है, इसीलिए वह प्राप्त नहीं हो सकता। सच्चा प्यार किया नहीं जाता, बल्कि हो जाता है। जो प्यार सोच-समझकर देखभाल कर किया जाता है वह दिल से निकला सच्चा प्यार नहीं होता। सच्चा प्यार अपने आप हो जाता है, बिना कुछ सोचे समझे दिल किसी और का हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने प्यार पर गर्व करने लगता है और उसे पाने के लिए अपना जीवन दांव पर लगा देता है। यदि यह प्यार इत्तेफाक से हासिल हो जाये तो उसके लिए संसार में इससे बड़ी कोई उपलब्धि नहीं, नहीं तो उसका जीवित रहना नामुमकिन सा हो जाता है। एक आदर्श व्यक्ति अपने आदर्श को व्यवहार में उतारना चाहता है, उसे सफलता-असफलता की परवाह नहीं होती। आदर्श जीवन पर उसे अत्यधिक गर्व होता है। इस पुस्तक में वर्णित प्रेम किशोरवय से

नवयौवन की दहलीज में कदम रखने वाले नवयुवकों की सहज मनोवृत्ति को दर्शाता है, वही भावनायें, वही जज़्बात जिनसे शायद ही कोई युवा अछूता रह जाता हो।यह पुस्तक उन लोगों के दिलों को छू लेगी जो सच्चे प्यार पर गर्व करते हैं और जिनके जीवन में इससे मिलती-जुलती घटनाएं घटित होती हैं। उनके दिलों को बहुत सुकून मिलेगा। इस संसार में आदर्शवादी व्यक्तियों की कमी नहीं है। व्यवहारवादी लोगों को यह कहानी शायद पसंद न आए। सभी भावुक एवं सुधी पाठकों से मेरा अनुरोध है कि कहानी पढ़ने के उपरान्त अपना अनुभव लेखक से अवश्य साझा करें।

सर्वहित आकांक्षी।

राजेन्द्र कुमार,
सहायक आबकारी आयुक्त।

एक



शागिर्द लगभग बीस वर्ष का हो गया है। वह टीन एज को पार कर क्रीम एज मे प्रवेश कर चुका है। बीस वर्ष की तरुणाई उसके चेहरे, उसके शरीर व उसके हाव-भाव से साफ झलक रही है। उसका संघर्षमय जीवन, उसके बात-व्यवहार व उसकी आदतों से स्पस्टतः प्रतिबिंबित होता है।

शागिर्द का बाल्यकाल बहुत ही कठिन था। उसके मां-बाप खेतिहर मजदूर थे। वह अपने मां-बाप की पांच औलादों में चौथी सन्तान है। दो भाई, एक बहिन उससे बड़े हैं, जबकि एक भाई-दीपक उससे छोटा है। मां-बाप के लिए सबसे बड़ा व सबसे छोटा लड़का सबसे प्यारा होता है, जिन्हे बड़े प्यार से 'बड़ंगवा' एवं 'छुटंगवा' कहकर पुकारा जाता है।

शागिर्द सबसे छोटे भाई से जस्ट बड़ा था। उसे मां-बाप अथवा परिवार के अन्य सदस्यों का कोई खास लाड़-प्यार नही मिला था। उसकी परवरिश पर मां के सिवाय किसी का कोई खास ध्यान न था। मां ने उसे मेड़ में लिटाकर, खेतों में काम करते हुए पाल-पोष कर बडा किया था। शागिर्द बचपन से ही सीधा-सादा शर्मीला लड़का था। वह कभी किसी चीज के लिए हठ नहीं करता था। वह पांच वर्ष की उम्र से ही मां-बाप की यथासंभव मदद करने लगा था, कुछ नही तो पिता जी की पीठ पर चढ़ जाता और कुछ देर तक यहां-वहां दबाता रहता। डंडा पकड़कर पैरों पर चढ़कर पैर दबा देता, पिता जी को थकान से काफी राहत मिलती।

आठ साल की उम्र तक शागिर्द की पढ़ाई-लिखाई का किसी को कोई ख्याल नही था। पिता जी ने नियम बना रखा था कि एक पढ़ेगा, एक नही पढ़ेगा। क्योंकि सबकी पढ़ाई का बोझ उठाना पिता जी के बस की बात

न थी, फिर खेती के काम मे सहयोग करने वाला भी तो कोई चाहिए। बटाई-तिहाई पर खेती करके या मजदूरी करके सभी बच्चों को पढ़ाना सम्भव न था। पढ़ाई का खर्चा और काम का हर्जा, डबल नुकसान झेल पाना पिता जी के लिए संभव नहीं था। उनका कहना था कि बड़ंगवा पढ़ेगा, मझिलवा नही पढ़ेगा, संझिलवा पढ़ेगा, फिर चौथा नही पढ़ेगा। चौथे नम्बर पर चूंकि शागिर्द था, अतः नही पढ़ाने का नम्बर शागिर्द का था।

गोरेलाल शागिर्द के पारिवारिक बड़े भाई थे,जो उम्र में उससे लगभग 20 वर्ष बड़े थे और तहसील में पटवारी की नौकरी करते थे। एक दिन शागिर्द चारा मशीन मे भैंसों के लिए चारा काट रहा था, उसी समय गोरेलाल वहां से गुजर रहा था, तो अचानक पूंछ बैठा, शागिर्द, तुम स्कूल नहीं जाते हो क्या ?

शागिर्द गोरेलाल के चरण स्पर्श करते हुए---नही भैया ।

गोरेलाल---क्यों ?

शागिर्द---पता नहीं, पिता जी कहते हैं कि तुम्हें घर के काम मे हांथ बंटाना है, स्कूल नही जाना है।

गोरेलाल---अच्छा, हम शाम को चच्चा से से बात करेंगे।

शाम को शागिर्द के पिता जी खेत मे काम करके जब घर वापस आते हैं, उसी समय गोरेलाल भी शागिर्द के घर पहुंच जाता है। गोरेलाल शागिर्द के पिता को 'चच्चा' कहकर पुकारता है। गोरेलाल सागिर्द के पिता से पूछता है---चच्चा, शागिर्द को स्कूल नही भेजते हो क्या ?

शागिर्द के पिता भवानी---नही, उसको नही पढाना है, सब पढ़ाई करेंगे तो खेती-बाडी का काम कौन करेगा। बड़ंगवा-जयराम, बिटिया सुमन, दोनों पढने जाते हैं, जवाहर और सागिर्द को खेती-बाडी के काम मे लगाना है। छुटंगवा को फिर बाद मे देखा जाएगा।

गोरेलाल---नहीं चच्चा ! शागिर्द को स्कूल जरूर भेजना है, इसका दिमाग तेज मालूम पडता है। ये पढ़ाई भी करेगा और सुबह-शाम घर के अन्य कामो मे भी हाँथ बटायेगा, चौबीसो घंटे थोड़े पढ़ाई करना है।

भवानी---अच्छा !

भवानी अपने पढ़े-लिखे भतीजे की बात बहुत मानता है। भवानी गोरेलाल की बात पर सहमत हो गया और बोला---ठीक है गोरेलाल, कल ही गांव के स्कूल मे शागिर्द का दाखिला करवा देते हैं, वहीं पढ़ेगा।

अगले दिन सुबह भवानी शागिर्द को लेकर गांव के स्कूल मे गया और स्कूल के अध्यापक से बात करके कक्षा एक मे नाम लिखवा दिया । उस समय पढ़ाई की सामग्री के नाम पर एक किताब, एक पटिया, चाक, हरेटा, एक झोला व जमीन पर बिछाकर बैठने के लिए जूट की एक फटी बोरी होती थी। यूनिफॉर्म के नाम पर रोज घर मे पहनी जाने वाली शर्ट व पायजामा अथवा कच्छा ही होता था। एक ही किताब मे ओलम, ककहरा, गिनती-पहाड़ा आदि सबकुछ लिखा होता था। पटिया या पाटी अर्थात लकड़ी के पैड पर खड़िया से लिखा जाता था। पाटी भर जाने पर लिखित सामग्री को हरेटा से मिटाया जाता था एवं उसी पटिया पर दोबारा दूसरी सामग्री लिखी जाती थी। हरेटा खरपतवार के हरे पत्ते होते थे।

जिन बच्चों की देखभाल ठीक से होती है, साफ-सुथरे होते हैं, उन्हे हर कोई पसंद करता है। शागिर्द की साफ-सफाई व कपड़ों पर किसी का ध्यान न था, इसलिए उसे कोई पसंद नहीं करता था, न ही कोई उससे कोई दोस्ती करना चाहता था। शागिर्द को इस बात का हमेशा मलाल रहता था। उसकी देखभाल उसके बस मे न थी, क्योंकि इतने छोटे बच्चे के कपड़ों और स्वच्छता का खयाल माँ ही कर सकती है। शागिर्द की माँ पर कई बच्चों की जिम्मेदारी के साथ-साथ काम का बोझ भी था, जिससे वह शागिर्द पर अधिक ध्यान नहीं दे पाती थी। शागिर्द अधिकांशतः अकेला रहता था, जिससे आगे चलकर वह दब्बू एवं संकोची स्वभाव का हो गया। फालतू बातें न करना उसकी आदत मे शुमार हो गया।

स्कूल मे दाखिला लिए दो महीने हो गये, अभी शागिर्द को ठीक से ओलम-ककहरा लिखना नहीं आया था, बमुश्किल सौ तक की गिनती लिखने लगा था, लेकिन उसका आई. क्यू. बहुत तेज था। जब खेतों मे फसल पक जाती तो फसल देखकर वह बता सकता था कि कितने मन अनाज निकलेगा, गेहूं का ढ़ेर देखकर कर बता सकता था कि कितने मन गेहूं होगा। स्कूल मे कक्षा चार-पांच के बच्चो को बोल-बोल कर सवाल लगवाए जाते थे। शागिर्द उन सवालों को बड़े ध्यान से सुनता रहता था और बिना लिखे-पढे, मन ही मन, सवाल का उत्तर निकाल लेता था। जब कक्षा चार-पांच के बच्चे सवाल नही लगा पाते तो शागिर्द उसका उत्तर मास्टर जी को बता देता, बदले मे उसको शाबाशी मिलती।

एक दिन मास्टर जी शागिर्द के घर गए और उसके पिता- भवानी से शागिर्द की तारीफ कर कहने लगे---चाचा ! आपका लड़का तो पढ़ने मे बहुत होशियार है, इसका दिमाग काफी तेज है।

भवानी बडी उत्सुकता से ---अच्छा! ये तो बहुत अच्छी बात है। गोरेलाल भी यही कह रहा था, कि शागिर्द का दिमाग तेज है। अब हम इसको जरूर पढ़ायेंगे।

मास्टर जी---हां भवानी चाचा, आप इसको जरूर पढ़ाइये, हम आपकी हरसंभव मदद करेंगे।

भवानी---लेकिन, मास्टर जी, शागिर्द की उम्र तो काफी हो गई है, शायद आठ साल का हो गया होगा।

मास्टर जी---कोई बात नही, छः महीने बाद जब ये ठीक से पढने-लिखने लगे तो इसको सीधे कक्षा दो में और छः महीने बाद कक्षा तीन में कर देंगे। इससे दो साल बच जाएंगे।

भवानी---हां मास्टर जी, आप सही कह रहे हो। आप जैसा उचित समझो वैसा करो, शागिर्द की पढ़ाई आपके सहारे है।

शागिर्द की पन्द्रह वर्ष की उम्र गांव भदईंपुरवा मे गुजरी। मास्टर जी की सलाह पर शागिर्द का नाम प्राईमरी स्कूल- जटपुरवा मे लिखवा दिया गया, यहाँ पर उसने कक्षा पांच तक की पढ़ाई की। उसके पश्चात उसका दाखिला नवगांव इण्टर कालेज मे कराया गया। नवगांव भदईंपुरवा से लगभग पाँच किलोमीटर दूर था। यहां से शागिर्द ने कक्षा छः से दस तक की पढ़ाई पूरी की।

शागिर्द की गांव की दिनचर्या अत्यंत कठिन थी। वह मजदूर का बेटा था, झोपडी मे पैदा हुआ था। भवानी के घर का कोई भी सदस्य, बच्चा हो या बूढा, फालतू नहीं बैठ सकता था। प्रत्येक का काम उसकी क्षमतानुसार बंटा होता था, जिसे निर्धारित समय पर पूरा करना होता था। स्कूल जाने वाले को भी स्कूल जाने से पहले व स्कूल से लौटने के पश्चात खेत मे काम करना पडता था। चाहे गर्मी हो या सर्दी, सुबह पांच- छः बजे काम की शुरुआत हो जाती थी। आठ बजे घर आकर स्कूल के लिए तैयार होना, खाना खाना और दस बजे स्कूल पहुंचना, शाम को पांच बजे स्कूल से लौटकर खेत से चारा काट कर लाना, हांथ मशीन मे चारा काटना, जानवर को चारा डालना आदि। रात आठ बजे तक खाना खाना, फिर दो घंटे पढाई करना और रात दस बजे सो जाना, यही दिनचर्या थी। पढाई के लिए समय चुराना पडता था।

दो



शागिर्द कक्षा छः मे पढ़ रहा था, तभी उसके सबसे बड़े भाई जयराम की पुलिस मे सिपाही के पद पर नौकरी लग गई। जयराम की तैनाती इलाहाबाद मे हो गई। नौकरी लगने के तीन साल बाद जयराम की शादी भी हो गई। अगले साल हाई स्कूल पास कर लेने पर जयराम शागिर्द को इलाहाबाद लिवा ले गया और के. पी. इन्टर कॉलेज मे कक्षा ग्यारह मे आर्ट साइड मे ऐड्मिशन करवा दिया। शागिर्द ने चूंकि हाई स्कूल आर्ट साइड से किया था, इसलिए इन्टर भी आर्ट साइड से करना बंदिश थी, लेकिन शागिर्द ने ऐसे विषय चुने जो पढ़ने मे कठिन थे, जैसे- जिओग्राफी, ईकोनामिक्स, इंग्लिश लिट्रेचर आदि। शागिर्द चार साल तक भैया-भाभी के साथ रहा। उसने कभी कोई शिकायत का मौका नहीं दिया। वह पढ़ने मे भी ठीक-ठाक था, वह अपने बड़े भैया-भाभी का बहुत सम्मान करता था, उनकी आज्ञा का पूर्णतः पालन करता था, घर का कोई भी काम एक इशारे पर करता था। चार साल तक उसे कभी किसी बात की कोई दिक्कत नहीं हुई। उसने इन्टरमीडिएट अच्छे नंबरों से पास किया था। फिर इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे बी.ए. मे एडमिशन लिया, वहाँ भी कठिन विषयों से पढ़ाई की। शागिर्द के अंदर किसी बात की कोई चालाकी न थी, घर के सारे काम करने के पश्चात एक ही काम करता था- पढ़ाई। उसका न तो कोई दोस्त था, न ही कहीं फालतू घूमने-फिरने जाता था। उसके भैया-भाभी भी उसकी परवाह रखते थे। उसकी पढ़ाई-लिखाई का विशेष ध्यान रखते थे। किन्तु पांचवें वर्ष के प्रारंभ मे जब वह बी.ए. थर्ड ईयर मे पहुंचा तो कूटनीतिक षड्यन्त्र के तहत शागिर्द को घर से अलग कर दिया गया। शायद मुख्य वजह शागिर्द व दीपक का खर्च वहन करने की रही होगी।

इलाहाबाद के मुँडेरा मुहल्ले मे कुन्नू कुशवाहा का दो कमरे का मकान था, जिसमे से एक छोटे वाले कमरे मे शागिर्द अपने छोटे भाई-दीपक के साथ रहता है। कमरे की फर्श कच्ची मिट्टी की बनी है, जिसकी कभी-कभी गोबर से लिपाई करनी पडती है। दोनों कमरों के बाहर प्लाट मे काफी खाली जगह पडी है। प्लाट के चारो तरफ लगभग चार फिट ऊंची चहार दीवारी है। बाउण्ड्री के एक कोने मे आने-जाने के लिए एक छोटा सा जालीदार गेट लगा है। प्लाट मे एक किनारे लेट्रिन बनी है, एक कोने मे पानी का नल लगा है, नल के पास सीमेंट की एक पक्की चटिया बनी है, जिसपर बैठकर सब लोग नहाते हैं व कपडे धुलते हैं। इस मकान के ठीक बगल मे ठीक ऐसा ही मकान सुरेश यादव का है। अन्तर सिर्फ इतना है कि इसमे दो कमरे के बराबर एक बडा कमरा बना है। दोनो मकानों के बीच लगभग चार फिट ऊंची चहार दीवारी है।

सुरेश यादव के मकान मे दो लड़के रहते हैं- सूरज और मक्खन। सूरज शागिर्द से लगभग दो वर्ष बडा है, मक्खन शागिर्द का हम उम्र है, लेकिन तीनो लोग दोस्ताना व्यवहार ही करते हैं। सागिर्द व मक्खन बी. ए. तृतीय वर्ष की पढ़ाई कर रहे हैं, सूरज बी.एस.सी. करके इन्जीनियरिंग की की पढ़ाई कर रहा है। सूरज व सागिर्द पढाई मे अच्छे स्टूडेन्ट हैं, जबकि मक्खन काम चलाऊ पढ़ाई कर लेता है। तीनो लडके कन्नौज के अलग अलग क्षेत्रों से हैं। तीनो लोग जरूरत पड़ने पर एक-दूसरे से झगड़ा भी करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर एक-दूसरे की मदद भी करते हैं।

सूरज शाम के समय अपने कमरे से बाहर निकलकर आंगन मे टहल रहा है, तभी बाउंड्रीवाल के उस पार शागिर्द दिखाई पड़ता है।

सूरज---नमस्कार शागिर्द भाई !

शागिर्द---नमस्कार सूरज भाई, नमस्कार !

सूरज मुस्कुराते हुए---तुम तो यार शागिर्द, हरदम बिजी रहते हो, तुम्हारे पास तो इधर-उधर देखने तक की फुर्सत नही, बात करना तो दूर की बात ?

शागिर्द---हां यार, क्या किया जाए, क्लास अटेंड़ करने यूनिवर्सिटी जाना, वहां से लौटकर ट्यूशन पढ़ाने जाना, रात को लगभग साढे आठ बजे घर आना, खाना खाना, अपनी पढ़ाई करना और फिर ग्यारह बजे सो जाना। ये तो आज रविवार है, इसलिए थोड़ी फुर्सत है।

सूरज---आओ यार, कभी-कभार मेरे यहां भी बैठ लिया करो, हमसे भी कुछ गपशप कर लिया करो।

शागिर्द दीवाल लांघकर सूरज के कमरे जाता है, वहां तखत पर बैठे मक्खन से भी दुआ-सलाम होती है।

आओ यार शागिर्द भाई, कभी तो बैठ लिया करो हम गरीबों के यहां---मक्खन ने कहा।

शागिर्द और सूरज उसी तखत पर बैठ जाते हैं।

मक्खन---और सुनाओ शागिर्द भाई ! आप तो जब देखो तब पढ़ाई मे ही मशगूल रहते हो। कभी हम लोगों के भी हालचाल ले लिया करो, हम भी आपके पड़ोसी हैं।

शागिर्द---ऐसा कुछ नहीं है मक्खन भाई, असल में बिजी रहना मेरी बेबशी है, रूटीन ही कुछ ऐसा है कि सुबह आठ बजे निकलता हूं तो शाम आठ बजे के बाद ही वापस आ पाता हूं। यूनिवर्सिटी में क्लास अटेंड करने के बाद दोपहर लगभग एक बजे मैं खुसरो बाग पहुंचता हूँ। वहीं खुल्दाबाद मुहल्ले मे तीन बजे से बच्चों को ट्यूशन पढ़ाता हूँ, दोपहर मे यदि मैं यूनिवर्सिटी से मुंडेरा कमरे जाता हूं तो वहां आने-जाने मे ही डेढ घंटा लग जाएगा, इससे अच्छा वहीं कुछ आराम कर लेता हूं, कुछ पढ़ाई भी कर लेता हूँ और भूख लगती है तो घर से लाए हुए पराठे खा लेता हूं। ट्यूशन पढ़ाकर

लगभग आठ बजे फ्री होता हूं, तब घर आता हूं। ये तो अच्छा है कि दीपक खाना बना लेता है, नही तो खाना भी मुझे ही बनाना पडता। ट्यूशन पढाना भी मजबूरी है, नहीं तो खर्चा कैसे चलेगा।

मक्खन---हां यार शागिर्द, ये बात तो सही है। अच्छा अब सीरियस बातें छोडो, ये बताओ कि बचपन मे क्या जलवे थे, कैसे पढ़ने जाते थे, दैनिक क्रिया-कलाप क्या थे, देहात से शहर आने मे क्या-क्या बदलाव महसूस हुआ ?

शागिर्द कुछ सोचते हुए---क्या बतायें यार मक्खन भाई, आपने तो लड़कपन याद दिला दिया। बचपन तो बचपन होता है, बिलकुल बेपरवाह, बेअन्दाज, शरारतों भरा बचपन। बस पेट भर खाना मिल जाए, फिर न तन मे कपडों की चिंता, न और कोई ख्वाहिश। वो मनमौजी करतूतें, गिल्ली-डंडा और छिपी-छिपौवल का खेल। स्कूल से लौटते समय खेतों मे चने का साग खोंट-खोंट कर खाना, मुलायम मूली के पत्ते, सरसों के डंठल, मटर का साग और फलियां, मुंह मे पानी आ गया यार !

सूरज सहमति से सिर हिलाते हुए--हां यार ! क्या मजे थे, भले ही पैरों मे टूटी चप्पलें हों, पुरानी सी एक यूनिफार्म, तेज चाल से चलकर या दौड़कर स्कूल पहुंचना, फिर उसी स्पीड मे स्कूल से लौटकर रास्ते मे चने का साग खोंटकर खाना। धनियां---लहसुन -मिर्च की चटनी बैग मे रखकर ले जाना नहीं भूलते थे, वाह क्या स्वाद था !

मक्खन शागिर्द की ओर मुखातिब होकर---पढ़ाई-लिखाई कहां से हुई, स्कूल का माहौल कैसा था ?

शागिर्द---एक साल तो मै अपने गांव-भदईपुर मे पढ़ा, फिर कक्षा पांच तक की पढ़ाई प्राइमरी स्कूल जटपुरवा मे हुई। यह स्कूल मेरे गांव से लगभग दो किलोमीटर दूर था। प्राइमरी स्कूल जटपुरवा मे तीन अध्यापक थे, एक तिवारी जी, एक कटियार और एक चमार बिरादरी के थे। बच्चों को इतना पता था कि पंडित जी के पैर छूना जरूरी है, नहीं तो वो नाराज हो

जायेंगे, इसलिए पंडित जी के पैर छूना कोई नहीं भूलता था, और इतनी अकल नहीं थी कि पंडित जी के साथ-साथ अन्य दो अध्यापकों के भी पैर छू लें, आखिर वो भी तो गुरुजन हैं। यद्यपि कि वे अध्यापक इस बात का बुरा भी नहीं मानते थे। जो बच्चे साफ-सुथरे होते थे उनसे पैर छुवाने मे पंडित जी को बडा अच्छा लगता था, गन्दे बच्चों से मुंह बिचकाते थे।

सूरज---हाँ यार शागिर्द, हम लोग भी अपने स्कूल मे पंडित जी के पैर छूते थे, नहीं तो वो लोग बहुत बुरा मानते थे, परीक्षा मे फेल भी कर देते थे।

मक्खन---छुआछूत भी तो मानते थे, चाहे कोई किसी भी जाति का हो, हर कोई अपने से निम्न जाति के व्यक्ति से छुआछूत मानता था। चमार जाति के विद्यार्थी पानी के घडे को छू नही सकते थे। प्यास लगने पर उच्च जाति के विद्यार्थी दूर से पानी डालते थे और बच्चे नीचे बैठकर चुल्लू लगाकर पानी पीते थे।

शागिर्द सहमति व्यक्त करते हुए---हां यार, गांव मे तो अभी भी बहुत छुआछूत है। अभी दो महीने पहले जब मै गांव गया था, तो मेरे साथ एक घटना घटी, सुनकर आप लोग भी दंग रह जाएंगे। मेरे मोहल्ले मे एक हैंडपंप लगा है। मै वहां नहा-धो रहा था, तभी चेहरे पर घूंघट डाले हुए एक लेडी बाल्टी लेकर आई और कहने लगी- चाचा मुझे पानी भरना है। मै चटिया पर किनारे बैठ गया और बोला कि आप पानी भर लो, उसने कहा- चाचा मुझे पीने के लिए पानी भरना है, आप चटिया से नीचे उतर जाओ। मैने कहा मै किनारे बैठा हूँ, आपको पानी भरना हो तो भर लो, मै नीचे नहीं उतरूंगा। वह लेडी बिना पानी भरे रुवासी होकर वापस चली गई। वह लेडी सचान मुहल्ले की बहू थी, गांव-मुहल्ले के रिस्ते से मुझे चाचा कह रही थी। उस बेचारी का कोई कसूर नहीं था, यदि वह मेरा छुआ पानी घर ले जाती तो उसकी सास डॉट लगाती, चमारों का छुआ पानी क्यों भर लाई। कुछ देर बाद जब मै नहा चुका और चटिया से नीचे उतर आया तो वह लेडी पुनः आई और हैंडपंप से पानी भरने लगी। जब वह पानी भर रही थी तभी एक कुत्ता चटिया पर चढ़ गया और बाल्टी के निकट चटिया मे भरा पानी

चपर-चपर पीने लगा। कुत्ते के मुंह व पैरों मे लेट्रिन लगी हुई थी। वह लेडी पानी भरकर घर चली गई। मै यह सोचकर हैरान हो था कि एक साफ-सुथरे इंसान से पानी छूत हो रहा था, किन्तु लेट्रिन से भिडे कुत्ते से पानी छूत नही हुआ। उस कुत्ते से उसे कोई शिकायत नही थी, अर्थात कथित नीच जाति का व्यक्ति कुत्ते से भी बदतर है।

सूरज---मत पूछो यार, छुआछूत तो इंसान की जाति से है जानवर से नही। सभी जाति के लोग अपने से निम्न जाति के व्यक्तियों से छुआछूत मानते हैं, फिर चाहे वह ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो, यादव हो, बनिया हो, या कुर्मी हो। यद्यपि कि नई पीढ़ी के बच्चों मे वो बात नही है। जो लोग पढ लिख गये हैं और गांव से बाहर निकलकर शहर आ गए हैं उनका काफी ब्रेनवाश हुआ है। उनके अन्दर छुआछूत काफी कम हुआ है।

तीन



आज शनिवार का दिन है, शागिर्द ट्यूशन पढ़ाकर जल्दी कमरे आ गया। शाम के लगभग सात बजने वाले हैं, दीपक शाम का खाना बना रहा है। शागिर्द कमरे के बाहर आंगन मे टहल रहा है। पड़ोस मे आज शाम खाना बनाने की बारी मक्खन की है, इसलिए सूरज भी बाहर टहलने निकल आया। सूरज भी ज्यादातर पढ़ाई मे बिजी रहता है।

शागिर्द सूरज को देखकर---नमस्कार सूरज भाई !

सूरज---नमस्कार, शागिर्द भाई नमस्कार।

शागिर्द---आओ यार सूरज, कभी मेरे कमरे मे भी झांक लिया करो। आओ यार, थोड़ी बैठकी कर ली जाये, मूड फ्रेश कर लिया जाये।

सूरज दीवाल लांघकर शागिर्द की तरफ जाता है। कमरे मे झांकते हुए---क्या खाना बना रहे हो दीपक ?

दीपक थोड़ा संकोच करते हुए---आलू-मटर-टमाटर बना रहा हूँ, भैया जी !

सूरज दीपक को समझाते हुए---हीटर पर खाना बनाते समय विशेष सावधानी बरतने की जरूरत होती है, जैसे- जमीन पर बोरी बिछाए रहना व पैरों मे चप्पल पहने रहना, खासकर रोटी सेंकते समय। क्राइल मे अगर रोटी टच हो गई तो तुरंत करंट लगेगा।

दीपक---हां भैया, आप सही कह रहे हैं। मै पूरी कोशिश करता हूं कि करंट न लगने पाये, लेकिन कभी-कभार क्राइल मे रोटी टच हो ही जाती है

और हल्का सा झटका लग जाता है। लेकिन चप्पल व बोरी के कारण करंट नही लग पाता है।

शागिर्द---आओ सूरज, ऊपर छत पर चलते हैं।

सूरज---हां शागिर्द, छत पर थोड़ी हवा भी लगेगी, नीचे गर्मी लग रही है।

ऐसा कहते हुए दोनो लोग दीवाल की ईंट पकड़कर छत पर चढ़ जाते हैं। छत पर पहले से ही चटाई बिछी हुई है, लेकिन बैठने की बजाय दोनो टहल-टहल कर बातें करना चाहते हैं। छत छोटी है, छत पर बाउंड्री भी नही है, इसलिए दोनो टहलते कम हैं, एक जगह खड़े होकर बातें ज्यादा करते हैं।

शागिर्द---यार सूरज भाई, मै चाय तो पिला नही सकता, खाना बन रहा है, आज आप मेरे यहां खाना खाइए।

सूरज---नहीं यार शागिर्द, आप तो जानते हो, चाय तो हम पीते नहीं हैं। मक्खन खाना बना रहा है, यहां खाना खा लूंगा तो वहां खाना बेकार हो जाएगा।

शागिर्द---यार, चाय न पीना हम लोगों की मजबूरी है, हमारे पास न तो दूध है, न चीनी, न चाय पत्ती। बस इसलिए 'हम चाय नही पीते हैं।

सूरज---हां यार शागिर्द, बिलकुल सही कहा आपने।

सूरज की स्थति भी लगभग शागिर्द के जैसी ही है। घर से सिर्फ उतना ही पैसा मिल पाता है, जिससे कि किसी तरह खर्चा चल जाय, बस। सूरज के भाई व पिताजी मजदूरी करके किसी तरह पैसे बचाकर खर्च भेजते हैं। शागिर्द की स्थिति थोड़ी ज्यादा खराब हो गई है। पहले बडे भाई के साथ रहता था तो कोई चिंता नही थी, अब तो अपने साथ-साथ छोटे भाई का ख़र्च भी ट्यूशन पढाकर कमाना पड़ता है।

शागिर्द---यार सूरज भाई, आपने हाईस्कूल व इण्टर नवगांव इण्टर कालेज से किया है, मैने भी हाईस्कूल वहीं से किया है। वहां के हालचाल सुनाओ, आप तो शायद हॉस्टल मे रहते थे, वहां कैसा माहौल था ?

सूरज---हां यार, मै तो हास्टल मे रहता था। वहीं रहकर पढ़ाई करता था।

शागिर्द---मैने भी कक्षा छः से दसवीं तक की पढ़ाई वहीं से की है। नवगांव हमारे गांव से लगभग पांच किलोमीटर पड़ता है। आपको तो पता ही होगा कि नवगांव इण्टर कालेज के प्रिंसिपल कितने सख्त थे। कोई स्टूडेन्ट यदि फालतू टहलता मिल गया या क्लास के समय कैन्टीन मे बैठा मिल गया, तो समझो उसकी खैर नहीं। अनुशासन की वजह से ही नवगांव इण्टर कालेज इतना फैमस है।

सूरज---हां यार, इसमे कोई शक नही कि नवगांव बहुत अच्छा कालेज माना जाता है, अनुशासन और पढाई के मामले मे।

शागिर्द---यार सूरज, हॉस्टल मे तो बहुत अच्छा लगता होगा, कई सारे दोस्त होंगे, पढ़ाई के अलावा और कोई काम नही, खाली समय मे खूब मस्ती होती होगी, सुना है कोई गर्लफ्रेंड भी थी आपकी ?

सूरज---मत पूछो यार ! सूरज एक पल के लिए पुरानी यादों मे खो जाता है।

शागिर्द मुस्कुराते हुए---क्या हुआ सूरज, कहाँ खो गये ?

सूरज झटके से सिर उठाते हुए---कुछ नहीं यार !

शागिर्द---नही, कुछ तो बात है।

सूरज कुछ सोंचते हुए---क्या बतायें यार, कुछ पुरानी यादों मे चला गया था।

शागिर्द अधिक उत्सुकता से---बताओ यार ! हम लोग एक दूसरे के हमदर्द हैं, गैर नही। दर्द और खुशियां बांटने के लिए होती हैं, समेट कर रखने के लिए नही।

सूरज---लगता है आप लोगों को कुछ पता चल गया है। चलो आज मै आपको सारी कहानी सुनाता हूँ। मै और मेरा दोस्त- श्यामू एक साथ नवगांव इन्टर कॉलेज मे पढ़ते थे। हम लोगों ने हाई स्कूल व इन्टर वहीं से किया है। वहीं हॉस्टल मे हम लोग एक साथ एक रूम मे रहते थे। हम दोनों लोग मैथ्स से इन्टर कर रहे थे। हमारे क्लास मे ही एक लड़की भी पढ़ती थी, जिसका नाम था यामिनी। यामिनी एक सुन्दर-सुशील लड़की थी। यामिनी की एक सहेली थी-मनीषा। वह भी अच्छी लड़की थी। दोनो लड़कियां नवगांव की ही रहने वाली थीं। उनके घर से कॉलेज लगभग एक कि. मी. दूर था, तो वे लोग पैदल ही घर से कॉलेज आया-जाया करती थीं। पहले हम लोग एक दूसरे से बिलकुल बातचीत नहीं करते थे, केवल क्लासमेट थे, और एक दूसरे को जानते थे। श्यामू लड़कियों से बात करने के लिए ज्यादा उत्सुक रहता था। वह धीरे-धीरे यामिनी से बात करने लगा। यामिनी भी उससे बात करने लगी। बाद में धीरे-धीरे हम चारो लोग एक दूसरे से बात करने लगे। मै देखने में थोड़ा हैंडसम लगता था, पढ़ने-लिखने में भी ठीक था, इसलिए यामिनी का आकर्षण मेरी तरफ ज्यादा था, वह मुझसे ज्यादा बात करने लगी, मै भी उससे बात करने लगा। अब वह श्यामू से बात करने में ज्यादा रूचि नहीं रखती थी। लेकिन श्यामू मन ही मन उसे पसंद करने लगा था, इसलिए यामिनी से बात करने में उसे ज्यादा रूचि थी। बाद मे हम चारों लोग एक दूसरे के मित्र हो गए। श्यामू भी समझ गया कि यामिनी और सूरज एक दूसरे को प्यार करने लगे हैं, इसलिए उसने भी यामिनी से ध्यान हटाकर मनीषा से दिल लगा लिया। हम चारों लोग एक साथ क्लास अटेन्ड करते थे , क्लास के बाद हम लोग घंटों हॉस्टल के रूम मे बैठकर गपशप किया करते थे। यामिनी और मनीषा के घर वाले जब पूंछते कि इतनी देर क्यों हो गई, तो बता देतीं कि आज एक्स्ट्रा क्लास चल रहे थे, या वे लोग अपनी अन्य सहेलियों से मैथ्स व साइंस समझ रहीं थीं। कभी-कभी तो दोनों लड़कियां इसी बहाने देर रात तक हॉस्टल मे रुकी

रहती थीं। हम लोग भी पढ़ाई के साथ-साथ खूब मौज मस्ती किया करते थे। हम लोग एक दूसरे के बहुत करीब आ चुके थे ।

शागिर्द---फिर क्या हुआ ? तब तो, इंटरमीडिएट करने के पश्चात नवगावं छोड़ने में बहुत तकलीफ हुई होगी ?

सूरज---मत पूछो यार ! पढ़ाई पूरी करने के बाद जब नवगावं से चलने का समय आया तो एक दूसरे के दिलों में तूफानी हलचल होने लगी, अब क्या होगा, अब हम लोग कैसे जियेंगे। मेरा घर नवगावं से लगभग बीस किलोमीटरदूर था। घर पर रहना होता तो मुलाकात करना संभव भी था। मुझे और श्यामू दोनों को कैरियर बनाने के लिए घर छोड़ना लाचारी थी। इण्टर का एग्जाम देने के बाद किसी तरह दो-तीन महीने तो हम लोग हॉस्टल में रुके रहे, लेकिन अंततः हॉस्टल खाली तो करना पडेगा। यामिनी का हाल तो बहुत बुरा था, वह तो किसी भी हाल में मुझे छोड़ने को तैयार नहीं थी। वह तो कह रही थी कि जहाँ भी चलो, मुझे साथ ले चलो। मै बहुत डिस्टर्ब था, अपना कैरियर बनायें कि मोहब्बत को परवान चढ़ने दें। यामिनी को साथ ले जाऊंगा तो कहां रखूंगा, गावं में मेरे गरीब माँ बाप, मेरे बड़े भाई, सब मेरी सफलता का इन्तजार कर रहे हैं। अंत में मैंने और श्यामू-दोनों ने अपने दिल पर पत्थर रखकर नवगावं छोड़कर इलाहाबाद आने का निश्चय किया। यामिनी को मैंने बहुत समझा बुझाकर शांत किया। मैंने यामिनी से कहा कि मेरा जी तो चाहता है कि मै तेरे पहलू में ही रह जाऊं, यहीं पर बस जाऊं, तुझे छोड़कर कही न जाऊ; लेकिन इससे तेरी भी बदनामी होगी और मेरा कैरियर भी चौपट हो जायेगा। मेरे पूरे परिवार का भविष्य अंधकारमय हो जायेगा।

यामिनी समझदार लड़की थी, उसने कैरियर बनाने के लिए मुझे इलाहाबाद जाने देने के लिए अपने प्यार की कुर्बानी दे दी। उधर श्यामू और मनीषा का हाल भी कुछ ऐसा ही था।

शागिर्द---यार सूरज ! आपकी दर्द भरी कहानी सुनकर मेरा दिल भी भर आया। प्यार करना जितना आसान होता है, निभाना उतना ही मुश्किल,

मगर यहाँ तो सभी बेबस थे। जो रास्ता आपने चुना, इसके सिवाय कोई विकल्प ही नहीं था। कैरियर सबसे आगे होना ही चाहिए।

सूरज---यार शागिर्द, मक्खन को ये सब मत बताना, वह तो इन सब बातों का मजाक उड़ाता है।

शागिर्द---सही कहा आपने, उसका नेचर ही कुछ इस तरह का है। उससे चर्चा करना बिल्कुल उचित नहीं है।

सूरज---यार शागिर्द ! दिल्लगी बहुत तड़पाती है। तीन साल हो गए नवगावं छोड़े हुए, ये दिल अभी भी रोता है। कई बार रातों में नींद नहीं आती है, लेकिन तडपने के सिवाय कुछ कर भी नहीं सकता। गरीबी भी प्यार में बहुत बड़ी बाधा होती है। यदि मै पैसे से सक्षम होता तो यामिनी को भी इलाहाबाद ले आता, वो भी यहीं पढ़ाई करती, तब हम लोग साथ रह सकते थे।

शागिर्द---हाँ यार सूरज, गरीबी जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है।

सूरज बात करते-करते भावुक हो जाता है। शागिर्द सूरज को धीरज बंधाता है। दीपक दीवाल पर चढ़ कर आवाज लगता है, भैया ! खाना बन गया है। बात करते-करते कब साढ़े आठ बज गए, पता ही नहीं चला। उधर मक्खन भी नीचे से आवाज लगता है, सूरज, खाना खाना है कि नहीं ? सूरज और शागिर्द दोनो नीचे उतरते हैं, एक दूसरे से विदा लेकर अपने-अपने कमरे चले जाते हैं।

चार



शागिर्द को इलाहाबाद आये पांच वर्ष हो गए हैं। उसका जीवन अभी भी गांव जैसा ही है। भविष्य संवारने के लिए वह तो शहर आ गया है, लेकिन उसका रहन-सहन, उसकी आदतें, उसका खान-पान, उसकी जीवन शैली सब गांव जैसी ही है। मात्र गांव से शहर आ जाने से आदमी शहरी नहीं बन जाता। शहरी रुआब तब आता है जब व्यक्ति के पास पैसा हो, अच्छे कपडे हों, दोस्त यार हों, चलने के लिए मोटरसाइकिल हो आदि। शागिर्द के रहन-सहन, उसकी भाषा शैली आदि, कहीं से भी उसमे शहरीपन की बू नहीं आती है। शागिर्द की सादगी, उसके भोलापन से जाहिर होता है कि वह अत्यंत ही सभ्य, सज्जन और नेकनीयत लड़का है। उसकी पढ़ाई-लिखाई, उसकी बातचीत में बौद्धिक चैतन्यता साफ़ झलकती है। शागिर्द में एक फर्क दिखाई पड़ता है कि शहर आकर उसे पैंट-शर्ट पहनने को मिल गए हैं। गांव में उसने कभी पैंट-शर्ट नहीं पहना था। नवगांव इंटरकॉलेज में सफ़ेद कमीज व सफेद पायजामा वाली यूनिफार्म चलती थी। गांव में कभी-कभी बिना जूता चप्पल के भी काम चल जाता था, लेकिन शहर में कम से कम एक जोड़ी चप्पल, और एक जोड़ी जूता हमेशा रहता है।

शागिर्द के.पी. इण्टर कॉलेज, से इण्टर करने के बाद इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से बी.ए. की पढ़ाई कर रहा है। इस समय उसका बी.ए. लास्ट ईयर चल रहा है। शागिर्द यूनिवर्सिटी जाने की तैयारी कर रहा है। सुबह नौ बजे क्लास शुरू हो जाते हैं। वह नहाने जा रहा था, तब तक पड़ोस से मक्खन आ जाता है।

मक्खन दीपक की तरफ देखते हुए---और भाई दीपक क्या खाना बना रहे हो ?

दीपक---कुछ खास नहीं, भैया को जल्दी जाना है, तो सब्जी-रोटी बना रहा हूँ। दोपहर के लिए दो पराठे भी ले जाते हैं, वो भी बना रहा हूँ। भैया सुबह जल्दी जाते हैं और शाम को ट्यूशन पढ़ाकर देर से लौटते हैं।

मक्खन---शागिर्द, आपको देर हो रही होगी, आप नहा लो।

शागिर्द---नहीं मक्खन भाई, अब आप आ गए हैं तो दस मिनट बैठ लेता हूँ, और सुनाओ क्या हाल हैं ? सूरज क्या कर रहा है ?

मक्खन---सब ठीक है यार ! सूरज तो सुबह सात बजे ही क्लास चला जाता है। सुबह पराठा बना देता हूँ तो खा के चला जाता, फिर दोपहर में आकर खाना खाता है।

मक्खन काफी मस्त मौला इंसान है, हंसी-मजाक और कटाक्ष करना उसकी आदत मे शुमार है। उसका स्त्री विमर्श अनोखा एवं आलोचनात्मक रहता है। जब भी कभी किसी लड़की या औरत के सम्बन्ध में आपस में चर्चा होती है तो वह उन पर कटाक्ष करने से बाज नहीं आता, और नकारात्मक टीका-टिप्पणी करना तो उसकी आदत में सामिल है। उसके मुख से किसी के लिए तारीफ तो बहुत मुश्किल से निकलती है।

शागिर्द---पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है मक्खन भाई ?

मक्खन---ठीक चल रही है, जब मर्जी होती है कॉलेज जाकर क्लास अटेंड कर लेता हूँ, नही तो घर पर ही पढ़ लेता हूँ, हिंदी और एन्सिएंट हिस्ट्री में रखा ही क्या है।

न पढ़ने वालों के लिए हिंदी सबसे सरल विषय है, एन्सिएंट हिस्ट्री भी वैसा ही है, एग्जाम में कोई भी कहानी लिखकर चले आओ, पास तो कर ही देंगे। मक्खन की पढ़ाई में कोई विद्वता नजर नहीं आती, वह विद्वान् बनना भी नहीं चाहता, बस काम चलाऊ पढाई कर लेता है। उसे किसी तरह बी.ए. और एम.ए. की डिग्री प्राप्त करनी है। गांव वालों के लिए इससे बड़ी कोई योग्यता भी नही है, सोलह पास कर लेना ही सबसे बड़ी पढ़ाई है। मक्खन

के परिवार में खेती ठीक-ठाक है, उसके भाई लोग पर्याप्त खर्चा भेजते रहते हैं, उसे भविष्य को लेकर कोई खास चिंता नहीं रहती। वह कभी-कभी ज्यादा पढ़ने वालों पर, खास कर सूरज और शागिर्द पर तंज कसता रहता है।

मक्खन---अच्छा शागिर्द, बी.ए. करने के बाद क्या करने का इरादा है ?

शागिर्द थोड़ा सोचते हुए---करना क्या है, बस नौकरी के लिए एग्जाम की तैयारी करनी है, जीवन का और कोई सहारा भी तो नहीं है। मेरे घर में तो एक कूंड जमीन भी नहीं है, जो पैदा करके खा लें, बस नौकरी ही एक विकल्प है।

मक्खन चुटकी लेते हुए---शादी-वादी के बारे में क्या ख्याल है ?

शागिर्द---पहले तो नौकरी मिले, रोजी-रोटी का सहारा मिले, फिर शादी के बारे में सोचा जायेगा। शादी करना तो कोई जरुरी भी नही है।

मक्खन---ऐसा तो सभी कहते हैं।

शागिर्द---आपकी बात भी सही है कि ऐसा तो सभी कहते हैं, लेकिन भविष्य के बारे में तो भविष्य ही बताएगा।

शागिर्द को यूनिवर्सिटी जाने के लिए देर हो रही है। मक्खन ने शागिर्द से विदा ली। अच्छा फिर मिलेंगे, कहकर मक्खन चला जाता है।

आज रविवार का दिन है, आज न तो किसी को कॉलेज जाना है, न ही खाना बनाने की जल्दी है। रविवार की शाम सूरज, शागिर्द, व मक्खन की बैठकी व गपशप होना पक्का है, उसे कोई रोक नहीं सकता। रविवार की बैठकी का सात दिनों से इंतजार रहता है। जिस तरह बहुत से लोगों को सैटरडे- संडे टी. वी. पर रामायण एवं पिक्चर आदि देखने का शौक होता है; शौक नहीं, बल्कि नशा होता है; उसी तरह इन लोगो को संडे की बैठकी का इंतजार रहता है। दीपक, चूँकि इन लोगों की एज ग्रुप का नहीं है, इसलिए उसकी कफलिया अलग लगती है। वह अपने दोस्तों के साथ अक्सर वर्मा

जी के यहाँ टी.वी. पर रामायण या पिक्चर देखने चला जाता है। कभी-कभी शागिर्द व सूरज भी अपनी बैठकी को विराम देकर वर्मा जी के यहाँ टी.वी. देखने चल जाते हैं। कभी-कभार ऐसा भी होता है कि शागिर्द व सूरज अपनी-अपनी पढ़ाई के चक्कर में न तो बैठकी करते हैं, न ही टी.वी. देखने जाते हैं, लेकिन मक्खन व दीपक कभी नहीं चूकते। रविवार की शाम ज्यादातर चारों लोगों का खाना एक साथ ही बनता है, चाहे वह तहरी ही क्यों न बने।

वर्मा जी के घर में टी.वी. पर पिक्चर देखते-देखते कब तीन घंटे बीत जाते, पता ही नहीं चलता, जैसे अभी दस पंद्रह मिनट ही हुए हों। वर्मा जी के यहाँ टी. वी. देखने के लिए लगभग पंद्रह- बीस मोहल्ले वाले इकट्ठे हो जाते हैं। वर्मा जी बहुत भले इंसान हैं, वे सबका स्वागत करते और सबको कुर्सी या तखत पर बैठालते हैं, उनकी बेटी अथवा उनकी पत्नी चाय बनाकर सबको पिलाती। चाय पीकर तो टी.वी. देखने का पूरा मजा ही आ जाता है। टी. वी. पर रामायण या पिक्चर देखते समय लोग इतने विलीन हो जाते हैं जैसे कि उनकी शारीरिक गतिविधि और जुबान बंद हो गई हो। कुछ समय के लिए लोग यह भी भूल जाते हैं कि वीडिओ रील देख रहे हैं या रामायण की आँखों देखी सच्ची घटना। मानो जो दिख रहा है वही सच्ची रामायण हो, जो राम का किरदार निभा रहा है हकीकत मे वही राम है और जो सीता का पात्र निभा रही है वही वास्तविक सीता है। सबके सब उसी नशे में मदहोश हो जाते हैं। जब फिल्म या रामायण समाप्त हो जाती है, तब भी कुछ पल के लिए लोग उसी नशे में तल्लीन दिखाई पड़ते हैं, घर जाने का नाम ही नहीं लेते। काश ! आगे क्या होगा, यह भी दिखा देते। रामायण देखने वालों का तो यही मन करता है कि आज ही पूरी रामायण समाप्त कर देते। उनको इससे क्या मतलब कि प्रोडूसर रोज-रोज आधा घंटे रामायण क्यों दिखाते हैं, एक साथ पूरी रामायण ख़त्म क्यों नहीं कर देते, उनको इससे क्या मतलब कि निर्माता को क्या फायदा होता है, कितना विज्ञापन मिलता है, कितना पैसा कमाते हैं।

शाम को लगभग सात बजे हैं, शागिर्द आलू छील रहा है। कभी-कभी संडे के दिन शागिर्द खाना बना लेता है, दीपक तो बेचारा रोज बनाता ही है। बहुत दिनों बाद पड़ोसी सूरज और मक्खन दीवाल फांदकर सीधे शागिर्द के कमरे में आ जाते हैं।

दोनों ---नमस्कार भाई शागिर्द !

दोनों लोगों को अचानक कमरे में देखकर शागिर्द---नमस्कार भाई लोगों, नमस्कार ! आइये बैठ लिया जाये, आज तो हम लोग कुछ फुर्सत मे हैं। सभी लोग बैठ जाते हैं, सब्जी काटने में शागिर्द की मदद करते हैं। आज सबका खाना यहीं बनेगा। सभी लोग खाना बनवाने मे मदद करते हैं। अभी सब्जी काटी जा रही है, तब तक शागिर्द कुकर में दाल चढ़ा देता है। दीपक आटा माड़ रहा है, मक्खन चावल धुल रहा है। हीटर में एक समय पर एक ही आईटम बन सकता है, इसलिए बारी- बारी से सभी आईटम बनाये जायेंगे। फिर भी एक घंटे में सब कुछ बन जाएगा, तब तक सब लोग गप्पबाजी करते हैं।

सूरज शागिर्द की ओर मुस्कुराते हुए---क्या यार शागिर्द, तुम खाना बना रहे हो, शादी क्यों नहीं कर लेते ? भाभी जी आ जाएँगी तो खाना तब भी बना-बनाया मिल जायेगा, आराम रहेगा, पत्नी जी आपकी सेवा करेंगी, क्या खूबसूरत जिंदगी होगी, ये क्या लड़कियों की तरह खाना बना रहे हो ?

शागिर्द---अरे यार ! खाना बनाने में रखा ही क्या है, खाना तो कोई भी बना सकता है, चाहे लड़की हो या लड़का। मै तो दोनों में कोई फर्क नहीं समझता। यदि हर काम लड़का कर सकता है, तो लड़की क्यों नहीं कर सकती है ? लड़का-लड़की के अधिकार व कर्त्तव्य बराबर होते हैं।

सूरज---क्या यार शागिर्द, हमेशा वही आदर्श की बातें, कभी तो हंसी-मसखरा कर लिया करो, थोड़ा मूड हल्का कर लिया करो।

शागिर्द---क्यों नहीं यार ! मै हंसी-मजाक तो बहुत पसंद करता हूँ। मगर फर्क यह है कि जब मै ठहाके मार कर जोर-जोर से हंसना चाहता हूँ

तो ये दुनिया मुझे रोती हुई नजर आती है, और जब मै फूट-फूट कर रोता हूँ तो ये दुनिया खिलखिला कर हंसती हुई दिखाई पड़ती है। अब आप ही बताओ, मै हसूं कि रोऊँ ? ये सामान्य सी बातें आपको आदर्श लग रही होंगी, क्योंकि इन बातों को समझने के लिए गहन ध्यान योग में जाना पड़ेगा, जो आपके बस की बात नहीं है।

हाँ यार शागिर्द, बात तो बिलकुल सही है, लेकिन तब तो भाभी जी आपसे बहुत परेशान ही रहेंगी, क्योंकि जब आप हंसेंगे तो भाभी जी बैठकर रोयेंगी और जब आप रोयेंगे तब भाभी जी जोर-जोर से हंसेंगी, सूरज ने हंसते हुए उत्तर दिया।

शागिर्द---तभी तो कहता हूँ कि अकेले ही जीना बेहतर है, और इसीलिए मै बेहिचक खाना बनाता हूँ, क्योंकि यह तो मेरा जीवन भर का काम हो सकता है।

सूरज संजीदगी से अपने विचार व्यक्त करते हुए---लेकिन यार, कभी न कभी तो शादी करनी ही पड़ेगी, नहीं तो ये समाज के ठेकेदार जीने नहीं देंगे, एक उम्र के बाद परिवार वाले बिना शादी-शुदा व्यक्ति को अपने घर मे बिठाना पसंद नहीं करते, कोई उससे बात तक नहीं करना चाहता, सब यही कहेंगे, देखो वह रडुआ जा रहा है, अभी तो हम सब पढ़ाई कर रहे हैं, अभी तो हम लोग बच्चे हैं,

शागिर्द---आपकी बात बिलकुल सही है, लेकिन कल की बात कल देखी जाएगी, अभी फिलहाल तो वही काम करना है जो आज सुबह डिसाइड किया गया था। अच्छा, चलो खाना खाया जाये, दीपक रोटियां बना चुका है, चावल कुकर में चढ़ा दिया है, एक सीटी में पक जायेगा।

मक्खन---हाँ यार, आठ बज गया है।

सूरज---हाँ यार, खाना खाकर कुछ पढ़ लिया जाये, सुबह सात बजे आई. ई.आर. टी. जाना है।

सभी चारो लोग तखत पर बैठकर खाना खाते हैं। खाना खाते समय दीपक की तारीफ भी हो रही है, वाह ! मजा आ गया यार, खाने में।

शागिर्द---यार, यही सब रुखा-सूखा था, जिसे हम लोगों ने बस प्यार से परोसा और खाया है, इसकी तारीफ करना आप लोगों की जर्रा नवाजी है।

सूरज और मक्खन---अच्छा शागिर्द, अब चला जाये, ऐसा कहकर दोनों लोग अपने रूम में चले गए।

पांच



शाम को खाना खाने के उपरान्त शागिर्द बाहर खुले आंगन में चारपाई बिछाकर लेट जाता है, मई माह की गर्मी का महीना है, वह कुछ देर पढ़ाई करता है, लेकिन आज उसका पढ़ाई में मन नहीं लग रहा है। बगल में दीपक बल्ब जलाकर पढ़ रहा है। शागिर्द किताब बन्द करके ओढ़नी ओढ़कर लेटा हुआ है, लेकिन उसे नींद नहीं आ रही है। उसका दिमाग बार-बार सूरज की बात पर चला जाता है, शादी तो करनी ही पड़ेगी, शादी नहीं करोगे तो ये दुनिया जीने नहीं देगी। फैमिली वाले अपने घर में बुलाकर बैठालना पसंद नहीं करेंगे। क्या वास्तव में अकेला जीवन इतना कठिन होता है ? क्या लोग मुझसे बात करना पसंद नहीं करेंगे, क्या लोग मेरे साथ अछूतों जैसा व्यवहार करेंगे, क्या ये समाज मुझे मेरे बनाये हुए रास्ते पर चलने नहीं देगा ? आदि। यह सब चिंतन करते-करते शागिर्द का मन अशांत हो गया है।

शागिर्द अत्यंत संवेदनशील लड़का है, वह हर बात को अलग ढंग से सोचता है, तर्क और इमोशंस को वह बहुत महत्व देता है। वह विचार करता है कि पढ़ाई-लिखाई कर नौकरी प्राप्त कर लेने के पश्चात तो सैकड़ों लोग दरवाजे पर शादी के लिए आते हैं, पर बेरोजगार लोगों के यहाँ एक मक्खी भी भनकने तो तैयार नहीं। इस दुनिया के धार्मिक एवं सामाजिक ठेकेदारों की बस यही बात उसे पसंद नहीं आती। नौकरी लगने के पहले उसे कोई पहचानता तक नही, और नौकरी लगी नही कि रातों-रात उसकी कद्र इतनी बढ़ जाती है कि सैकड़ों लोग उसे पूछने लगते हैं। पता नहीं कहां-कहां से पता लगाकर लोग घर आने लगते हैं शादी के लिए, यदि लड़का भाव नहीं मारता तो उसके घर वालों को घेरना शुरू कर देते हैं। वाह रे ये समाज और समाज के ठेकेदार ! शागिर्द के विचार से ये दुनिया इंसानियत

से चलनी चाहिए, न कि पैसों से। लेकिन यहाँ तो इंसानियत का दूर-दूर तक कहीं अता-पता नहीं, सब जगह बस पैसा ही पैसा, पैसे के सिवाय और कुछ नहीं।

शागिर्द को किसी भी प्रकार का भेदभाव पसंद नहीं, वह सम्पूर्ण संसार को एक नजर से देखता है, उसके दिलो-दिमाग में सम्पूर्ण मानव समाज के प्रति कोई पक्षपात नही है। चाहे अमीरी-गरीबी का भेदभाव हो, पूरब-पश्चिम का अथवा स्त्री-पुरुष का भेदभाव हो, उसे ये सब कतई पसंद नहीं। इस संसार में जो भी भेदभाव हैं वह सब मनुष्यों द्वारा निजी स्वार्थवश पैदा किये गए हैं। समाज में जाति एवं वर्ण–व्यवस्था भी कुछ स्वार्थी समुदायों द्वारा बनाई गई है।

शागिर्द के अनुसार शादी करना अच्छी बात नहीं तो बुरी बात भी नहीं है, लेकिन यदि शादी करनी ही है तो किसी भी लड़की से कर लो। शादी का मकसद तो यही होता है कि स्त्री-पुरुष एक साथ रह सकें, सहवास के साथ सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए संसार को आगे बढ़ाएं। लड़का–लड़की का शारीरिक डील-डौल, थोड़ा सा रंग-रूप आदि की मैचिंग करना तो समझ मे आता है, लेकिन लड़के-लड़कियों की गाजर- मूली की तरह छटनी करना, पैसे से तौलना, जाति- पांति मिलाना, ये सब शागिर्द की समझ के बाहर है।

रात को सोने से पहले सोचते-सोचते शागिर्द का दिमाग अचानक, यों ही, एक लड़की की तरफ चला जाता है। वह लड़की भी बी. ए. थर्ड ईयर में पढ़ती है, अर्थशास्त्र विषय में वह शागिर्द की क्लासमेट भी है। क्लास में लड़कियां फर्स्ट लाइन मे बैठती हैं, वह लड़की अक्सर फर्स्ट या सेकंड सीट पर बैठती है। शागिर्द को उस लड़की का चेहरा तो स्पष्ट याद नहीं है, लेकिन ये तो कन्फर्म है कि वह चश्मा लगाती है, देखने में लम्बी और गोरी-सी है। वह पढ़ने में ठीक-ठाक लगती है। उसका नाम क्या है, वह किस जाति की है, कहाँ रहती है, शागिर्द को कोई जानकारी नही है। उसे बस उसकी एक झलक भर याद है। उस लड़की के बारे में सोचते-सोचते

शागिर्द को पता नहीं कब नींद आ गई, सुबह साढ़े छः बजे उसकी नींद खुलती है।

मई महीने के आखिरी दिनों मे रेगुलर क्लास समाप्त हो जाते हैं। जिन सब्जेक्ट्स का कोर्स समय पर पूरा नही हो पाता, उनके टीचर्स समर वैकेशन में एक्स्ट्रा क्लास लेकर कोर्स पूरा करवाते हैं। अर्थशास्त्र का कोर्स तो पूरा हो चुका है, लेकिन अर्थशास्त्र के स्टूडेंट्स ने प्रशांत सर से एक्स्ट्रा क्लास लेने के लिए अनुरोध किया, तो प्रशांत सर मान गए और एक्स्ट्रा क्लास लेना सहर्ष स्वीकार कर लिया। प्रशांत सर बहुत अच्छे प्राध्यापक हैं। उन्होंने इंडियन एकोनॉमी के कई चैप्टर रिवाइज करवा दिए हैं, जिससे कई स्टूडेंट्स को काफी लाभ हुआ।

कुछ दिन पहले की बात है, दोपहर के साढ़े बारह बजे हैं, तीसरा पीरियड खाली है, शागिर्द अर्थशास्त्र की लाइब्रेरी की तरफ जा रहा है। लाइब्रेरी के बाहर बरामदे में तीन-चार लड़कियां खड़ी हैं। शागिर्द सर झुकाये जा रहा है, पोर्च से बरामदे में जाने के लिए वह सीढ़ियां चढ़ रहा है। शागिर्द की गर्दन अचानक थोड़ा ऊपर उठी, तो अनायास एक लड़की से उसकी आँखें चार हो गईं, उसने शागिर्द को मदभरी-अफ़साई आँखों से देखा। दोनों की नजरें एक पल के लिए थम गईं। उस लड़की की नीली-नीली झील सी गहरी आँखें जब शागिर्द की आँखों से मिलीं तो ऐसा लगा जैसे शागिर्द के सीने में एक तीर सा चुभ गया हो। कभी गंभीर न रहने वाली उस लड़की ने जब नशीली आँखों से शागिर्द को देखा तो शागिर्द के दिल में कुछ असर सा हो गया, लेकिन शागिर्द बिना रुके सीधे लाइब्रेरी में चला गया, वहां जाकर कुर्सी पर बैठ जाता है और पढ़ने के लिए किताबें खोजने लगता है, जैसे उसे कुछ हुआ ही न हो। ये सारी घटना मात्र एक पल की थी, जिस पर शागिर्द ने कोई ध्यान नहीं दिया। इस एक पल की नजर ने यह देख लिया कि वह लड़की लम्बी-छरहरी और एकदम गोरी-सी है। शागिर्द को इस बात का जरा भी अहसास नहीं हुआ कि उस लड़की की कटीली निगाहों ने उसके दिल के झरोखे में गहरा घाव कर दिया है। लेकिन शागिर्द उस समय इसे एक घटना समझकर भूल जाता है।

छह



आज रविवार का दिन है, यूनिवर्सिटी मे एक्स्ट्रा क्लास चलने हैं, प्रशांत सर आने वाले हैं। अर्थशास्त्र विषय के सभी स्टूडेंट्स, गर्ल्स एंड ब्वायज, उनका इंतजार कर रहे हैं। अर्थशास्त्र विभाग के कार्यालय के पश्चिमी बरामदे में लड़के लोग खड़े हैं, जबकि दूसरी तरफ पूरब की साइड में लड़कियां खड़ी हैं। कुछ लड़के-लड़कियां बाहर इधर-उधर झुण्ड बनाये खड़े हैं। शागिर्द संकोची स्वभाव का लड़का है, उसकी किसी से दोस्ती नही है, वह फालतू बात करना पसंद भी नहीं करता, वह अकेला अलग खड़ा हुआ है, लेकिन उसकी नजरें उस लड़की को तलाश रही हैं जो रात में सोते समय उसके ख्यालों में आयी थी, जिससे लाइब्रेरी के बरामदे में आंखे चार हुई थीं।

अर्थशास्त्र विभाग के कार्यालय के सामने एक छोटा सा पार्क है, जिसमे हरी-भरी घास बहुत सुंदर लग रही है, बीच में एक बड़ा सा पेड़ है। शागिर्द की नजर उस पार्क की तरफ जाती है, वहीं पेड़ के नीचे छाया मे तीन लड़कियां खड़ी हैं। वे सब आपस में बात कर रही हैं और हंसी-मजाक कर रही हैं। उनमे से एक लड़की पिंकिश-गोल्डन कलर का फ्रॉक शूट पहने हुए है एवं दाहिने हांथ में क्रीम कलर का रुमाल लिए हुए है। शागिर्द चोरी-चोरी उस तरफ देखता है, और रात की ख्यालों वाली लड़की से उसकी तस्दीक करता है। कभी-कभी वह नजर बचाकर उसकी तरफ गौर से देखता है, यह वही लड़की है जिसके विषय में वह रात में सोच रहा था, जो क्लास में फर्स्ट लाइन में बैठती है, या कोई और ? एक बार उस लड़की ने भी हंसते हुए उसकी ओर देखा, तो शागिर्द ने लजाकर अपनी नजरें झुका लीं।

एक्स्ट्रा क्लासेज कुछ दिन ही चलने हैं, इसके बाद यूनिवर्सिटी बंद हो जाएगी। जुलाई में यूनिवर्सिटी खुलते ही एग्जाम शुरू हो जायेंगे। एग्जाम के समय सारे स्टूडेंट घर में रहकर तैयारी करते हैं, वे उसी दिन यूनिवसिटी जाते हैं जिस दिन उनका पेपर होता है। शागिर्द अभी उस लड़की के विषय में कुछ भी नहीं जानता है, लेकिन शागिर्द उसके विषय में जानने के लिए अत्यधिक उत्सुक है, उसका क्या नाम है, कहाँ रहती है, आदि। एक बार उसका नाम-पता मालूम हो जाये तो तसल्ली हो जाये, जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर उससे संपर्क किया जा सके। उसके बारे में जानने के लिए शागिर्द का दिल बहुत बेताब है। शागिर्द के बगल में उसका सहपाठी रवि खड़ा था, रवि पढ़ने में कुछ कम अच्छा है लेकिन बात-व्यवहार में वह अच्छा लड़का है। शागिर्द से रहा नहीं गया, उसने बिना समय गवांये रवि से पूंछ ही लिया---

यार रवि ! तुम उस लड़की को जानते हो जो गोल्डन कलर का शूट पहने पार्क में खड़ी है ?

रवि मुस्कुराकर चुटकी लेते हुए---क्यों, क्या कोई चक्कर-वक्कर है ?

शागिर्द बहाना बनाता है---नहीं यार, पढ़ने-लिखने में कुछ ठीक-ठाक मालूम पड़ती है, इसीलिए पूंछा।

रवि---नहीं यार, उसे जानता तो नही, लेकिन शायद वह अपना नाम कामिनी लिखती है।

शागिर्द---वह रहती कहां है।

रवि ने फिर से चुटकी ली---लग रहा है, तुम पक्का उसके चक्कर में पड गए हो ?

शागिर्द ने फिर से बहाना बनाया---नहीं यार, ऐसा कुछ नहीं है, इकनामिक्स मे उससे कुछ मदद लेना चाहता हूँ।

रवि--यार, कन्फर्म तो पता नहीं, लेकिन शायद सुलेमसराएं या ट्रांसपोर्टनगर से आती है।

शागिर्द--बस से आती होगी ?

रवि---यार, पता नहीं, शायद रिक्से से आती है।

चलो यार रवि, प्रशांत सर आ गए। सभी स्टूडेंट्स क्लास मे चले जाते हैं। लड़कियां आगे वाली दो लाइनों मे बैठती हैं। उसके पीछे लड़के बैठ जाते हैं। शागिर्द लड़कियों के जस्ट पीछे वाली लाइन में बैठ जाता है। प्रशांत सर के लेक्चर के दौरान बीच-बीच में शागिर्द नजरें चुराकर आगे बैठी उस लड़की को देखता रहता है। उसका मन यह सोचकर प्रफुल्लित हो रहा है कि वह जिस लड़की के बारे मे सोच रहा था वह कोई ऐरी-गैरी लड़की नही है। लम्बा-छरहरा बदन, गोल चेहरा, चांदी सी चमकती सूरत, एकदम परियों की रानी लग रही थी। आज शागिर्द का दिल अंदर ही अंदर गहरी-ठंडी सांसे भर रहा था, क्योंकि आज वह अपनी सपनो की रानी के सबसे करीब बैठा हुआ है। जिसके विषय में वह दिन रात सोचता रहता था, आज वह आसमान से उतरी उस परी के दिल के अत्यंत करीब बैठा है। पीछे बैठा शागिर्द बस यही सोच रहा है कि वह दिन कब आएगा जब कामिनी उसकी दिल की रानी बन जाएगी। उसका मन तो कर रहा है कि वह पीछे से उसके बालों को पकड़कर चूम ले। मगर वह इतना शर्मीला है कि उससे ये सब कभी संभव न होगा। वह इतना हयादार और डरपोक है कि वह किसी लड़की के सामने खड़ा तक नहीं रह सकता, बात करना तो बहुत दूर की बात है।

कामिनी ने आहिस्ता-आहिस्ता शागिर्द के दिल मे अपना घर बना लिया है, अब शागिर्द का मन पढ़ाई से विरक्त होता जा रहा है। लेक्चर के दौरान प्रशांत सर व अपने सहपाठियों, खासकर कामिनी को दिखाने के लिए वह गंभीर मुद्रा में बैठकर बीच-बीच में नोट-बुक में कुछ लिख रहा है। शागिर्द बाहर से जितना गंभीर दिखाई दे रहा है, अंदर से उतना ही व्याकुल। शागिर्द के दिल के झरोखे में बैठकर कामिनी उसे तड़पा रही है।

शागिर्द मन ही मन कामिनी को बेहद प्यार करने लगा था, लेकिन वह अपने दिल की बात कहे तो किससे कहे। इस संसार में कोई ऐसा नही जो उसकी तनिक भी मदद कर सके। जिस किसी से भी वह अपने मन की बात कहेगा, हर कोई उसका मजाक उड़ाएगा। सूरज की शादी करने वाली बात पर शागिर्द इतना संजीदा कैसे हो गया, कि सोचते-सोचते यहां तक पहुंच गया। इस बात को शागिर्द यदि सूरज को बताता है, तो वह भी उसका मजाक उड़ाएगा, मदद करना तो उसके बस की बात नहीं। शागिर्द शायद अब प्यार के जाल में पूरी तरह फंस चुका है, अब सही सलामत यहाँ से निकल पाना संभव नहीं।

फ़िलहाल डेढ़ घंटे पूरे हो चुके हैं, प्रशांत सर भी क्लास समाप्त कर जाने वाले हैं, सभी स्टूडेंट्स प्रणाम कर उनको विदाई दे रहे हैं। लेकिन शागिर्द को इस बात की अधिक तकलीफ हो रही है कि कामिनी आज के बाद यूनिवर्सिटी एक सप्ताह बाद ही आ पाएगी, तभी उससे मुलाकात हो पाएगी। अब एक्स्ट्रा क्लास नेक्स्ट संडे को ही चलेगा। कामिनी अपनी सहेलियों के साथ यूनिवर्सिटी के बाहर वाले गेट की तरफ जा रही है। शागिर्द दूर से ही टकटकी लगाकर उसे निहार रहा है, लेकिन कामिनी ने उसकी तरफ एक बार भी पलट कर नहीं देखा। उसे क्या पता कि कोई उसे बेइंतहां प्यार करने लगा है, उसे यह भी पता नहीं कि वह किसी का बेशकीमती दिल चुरा कर ले जा रही है। वह शागिर्द के प्यार से बिलकुल बेखबर है।

शागिर्द रोजाना सुबह छः बजे निद्रा त्याग देता है, शौचक्रिया के पश्चात लगभग आधे घंटे ध्यान लगाता है। विश्वविद्यालय मे कुछ दिन और एक्स्ट्रा क्लास चलने हैं, फिर परीक्षाएं शुर हो जाएंगी। ध्यान लगाते समय भी शागिर्द के मन-मष्तिस्क में कामिनी का ही मुख-मण्डल ही छाया रहता है। वह कामिनी के दिल के करीब कैसे पहुंचे, उससे कैसे बात करे, उसके बारे में जानकारी कैसे मिले, यही उसकी तात्कालिक समस्या है। ध्यान लगाते समय शागिर्द बुराइयों को दूर करने और अच्छाइयों को अपनाने के लिए ईश्वर से फ़रियाद करता है। जबसे शागिर्द की भाभी ने उसको घर से अलग

किया है तब से उसके चेहरे की हंसी और मुस्कुराहट गायब हो गई है, अब कामिनी के चक्कर में तो पागल-दीवाना सा हो गया है। लड़कियों के करीब जाने की उसकी हिम्मत नहीं होती, वह कामिनी से कैसे बात करेगा, कैसे अपने दिल की बात को उस तक पहुंचाएगा ? कामिनी हमेशा अपनी सहेलियों के साथ ही रहती है, कभी अकेली दिखती ही नहीं, जिससे वह हिम्मत जुटाकर बात कर सके। शागिर्द के पास समय बहुत कम है, एक्स्ट्रा क्लास समाप्त होने पर फिर कहाँ ढूढ़ेगा उसे, उसका घर भी उसे पता नही। परीक्षा के दौरान उससे मुलाकात हो पायेगी कि नहीं, कुछ पता नहीं। इकोनॉमिक्स के आलावा दूसरा सब्जेक्ट उसका कौन सा है, ये भी कन्फर्म नहीं है। एग्जाम के बाद वह एम.ए. करेगी या नहीं, करेगी तो किस सब्जेक्ट से करेगी, कुछ नहीं मालूम।

कल रविवार है, कल मैक्रोइकोनॉमिक्स का एक्स्ट्रा क्लास चलना है, आनंद सर क्लास लेंगे। शागिर्द को उम्मीद है कि कल कामिनी के दर्शन जरूर होंगे, वह उससे बात करने की पूरी कोशिश करेगा, यही सब चिंतन-मनन करते हुए वह सो जाता है। रविवार की सुबह ध्यान लगाते समय शागिर्द के चेहरे में प्रसन्नता के भाव हैं, कि जिसके लिए वह एक सप्ताह से इंतजार कर रहा था, आज उससे मुलाकात होगी। आज जब वह उसकी नजरों के सामने से गुजरेगी तो उसकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं होगा, तब वह अपने मन को कैसे नियंत्रित करेगा। आज वह फिर से कामिनी के पीछे वाली शीट पर बैठने का प्रयास करेगा। शागिर्द आठ बजे नहा-धो कर खाना खाकर युनिवेर्सिटी के लिए तैयार हो गया है, दोपहर के लिए दो पराठे भी टिफिन में रख लिए हैं।

नौ बजे से क्लास चलना है, मुंडेरा से युनिवर्सिटी लगभग बारह किलोमीटर है, साईकिल से लगभग पौन घंटा लग जाता है। आनंद सर अपना क्लास ज्यादातर अर्थशास्त्र विभाग के कार्यालय के पीछे वाले हाल में लेते है। क्लासरूम व कार्यालय के बीच में एक छोटा सा खाली मैदान है। शागिर्द साईकिल से सीधे क्लासरूम की तरफ जाता है तो रास्ते में कामिनी अपनी सहेली के साथ जाती हुई दिखाई देती है। रानी कलर का फ्रॉकशूट,

कमर तक लटकते लम्बे-लम्बे काले-काले बाल, बीच में चांदी-सा गोरा बदन, शागिर्द ने पीछे से देखा तो उसके होश फाख्ता हो गए। कामिनी का कामुक शरीर, उस पर नागिन-सी चाल देखकर शागिर्द के रोंगटे खड़े हो गए, वह सिहर उठा। एक पल के लिए उसके मन मे ख्याल आया कि वह साईकिल छोड़कर उसके बालों को पकड़कर उसे अपनी बाहों मे भर ले। फिर उसने अपने आपको सम्हालते हुए एकाएक साईकिल की रफ़्तार बढ़ा दी, और क्लासरूम हाल के बगल वाली दीवाल के सहारे साईकिल खड़ी कर, पीछे मुड़कर उसे एक पल के लिए निहारने लगा। सामने से अपनी हुस्नआरा की सूरत देखकर मानो कयामत ढा गई हो, शागिर्द का तन-मन, दिल-दिमाग अब उसके काबू में न था।

जो लोग अंदर से शांतचित्त होते हैं, वे प्यार को और अधिक गंभीरता से लेते हैं। ऊपर से देखने में जैसे शागिर्द को कुछ हुआ ही न हो, किन्तु अंदर से उसकी हालत ख़राब थी। जहाँ उसने साईकिल खड़ी की वहां से क्लासरूम की दूरी मात्र बीस कदम थी, इसी बीच उसे सम्हलना भी था, और क्लासरूम में प्रवेश भी करना था। क्लासरूम के दो गेट थे, कामिनी आगे वाले गेट से प्रवेश करती है, जबकि शागिर्द दूसरे गेट से प्रवेश करता है। कामिनी जिस सीट पर बैठती है, किस्मत से उसके पीछे वाली सीट खाली थी। शागिर्द ने अवसर को गवांये बिना तुरंत जाकर उसके पीछे वाली सीट पर कब्ज़ा कर लिया। क्लास में कोई कहीं भी बैठ सकता था, इसके लिए किसी को कोई मनाही नहीं थी, किन्तु लड़कियों के बीच मे घुस कर बैठना तहजीब में नहीं था।

आनन्द सर आ गए हैं, सारे स्टूडेंट्स खड़े होकर उनका स्वागत करते हैं, फिर बैठ जाते हैं। आनंद सर शांत स्वभाव के व्यक्ति हैं, ज्यादा फालतू बातें नही करते हैं। आनंद सर ने मैक्रो इकॉनॉमिक्स पढ़ाना शुरू कर दिया है, किन्तु शागिर्द का मन पढाई मे कहाँ लगने वाला, यूनिवर्सिटी आने का उसका मकसद ही दूसरा था, उसका ध्यान आनंद सर की तरफ कम कामिनी की तरफ ज्यादा है। वह दिखाने के लिए नोटबुक खोलकर बैठा है, कभी-कभी दो चार शब्द लिख भी लेता है, ताकि उस पर कोई शक

न करे। शागिर्द को तो किसी तरह कामिनी के संपर्क में आना था, उसके बारे में पता करना था। उसका दिलो-दिमाग कामिनी पर लगा था। इंसान अपने दिल के आगे हार जाता है, उसे वही करना पड़ता है जो उसका दिल कारवाता है। जब किसी का दिल उसके सीने से निकलकर किसी दूसरे के पास चला जाये तो उसे बेबस होकर अपने दिल के पीछे-पीछे जाना पड़ता है, क्योंकि बिना दिल के वह जीवित नहीं रह सकता। कामिनी ने उसका दिल चुराकर अपने पास रख लिया है, इसीलिए वह असीम वेदना मे है। क्लास में कामिनी के जस्ट पीछे बैठा शागिर्द बेचारा बार-बार कामिनी की तरफ निहार रहा था। क्या करे, क्या न करे, इसी उधेड़-बुन में पड़ा था। वह कामिनी की कमसिन अदाओं का कायल हो गया था, वह सुरा-सुंदरी के पीछे बैठकर उसका नशा कर रहा था। उसका मन नशे से झूम रहा था, उसका मन उसके नियंत्रण में नहीं था; कामिनी की कामुक जवानी, उसके लम्बे-काले बाल और चाँद-सा चेहरा देखकर उसका मन इस कदर आकर्षित हो रहा था, कि वह उसे अपने आगोश मे ले ले।

लगभग आधा पीरियड समाप्त हो चुका है, कुछ समय पश्चात आनंद सर का क्लास समाप्त हो जायेगा, सब लोग चले जायेंगे, कामिनी भी चली जाएगी, इसके बाद फिर न जाने कब उससे दर्शन हो पाएंगे। वह अभी तक कामिनी के बारे में कुछ खास पता नहीं कर पाया है। उसे आज और अभी, कुछ न कुछ करना पड़ेगा। वह कामिनी से कैसे संपर्क करे समझ नहीं पा रहा है। शागिर्द के पैर टेबल के नीचे से कामिनी के पैरों तक पहुँच रहे हैं, कुछ नहीं सूझा तो उसने हिम्मत करके अनायास ही अपना पैर कामिनी के पैर से टच कर दिया। कामिनी ने कोई रिएक्शन नहीं दिया, वह अपने पैर सम्हालकर उसी तरह बैठी रही, जैसे कुछ हुआ ही न हो, पीछे मुड़ कर देखा भी नही। शागिर्द को बड़ी तसल्ली हुई, उसका अंतर्मन काफी खुश हुआ, उसकी कुछ हिम्मत भी बढ़ गई। कुछ देर बाद शागिर्द ने फिर से वही हरकत दोहराई, कामिनी ने फिर से कोई रिएक्शन नहीं दिया। शागिर्द को बड़ी प्रशन्नता हुई कि उसने कोई शिकायत नहीं की, पीछे मुड़कर गुस्से से देखा भी नहीं। इसका मतलब वह भी मन ही मन मुझे प्यार

करती है। वही तो कामिनी है जिसने हसरत भरी निगाहों से उसे देखा था, कुछ न कुछ तो उधर भी है, नहीं तो शागिर्द उसके लिए इतना बेचैन क्यों होता। आखिर उसी की कटीली निगाहों के तीर ने तो उसका दिल घायल किया था।

कुछ देर पश्चात् क्लास समाप्त हो जाता है, आनंद सर चले गए हैं, सभी स्टूडेंट्स क्लास से बाहर निकलकर ग्राउंड में इधर-उधर खड़े हैं। शागिर्द अर्थशास्त्र विभाग के कार्यालय के बाहर पार्क के बगल मे एकांत में अकेला खड़ा है और पैर टच करने वाली अपनी हरकत को बार-बार याद करता है और मन ही मन प्रफुल्लित होता है कि कामिनी ने कोई शिकायत नहीं की, इसका मतलब है कि कामिनी के मन में भी, कहीं न कहीं, उसके लिए कुछ जगह है; वह भी मन ही मन उसे प्यार करती है। जो लोग कैंपस के बाहर जा रहे हैं शागिर्द सबको दूर से देख रहा है। उसकी नजर अपनी दिलरुबा कामिनी पर है, जाते समय वह एक बार फिर अपनी महबूबा को निहारना चाहता है, उसकी गुलाब सी हंसी, चांद-सा चेहरा, मदहोश कर देने वाली नशीली आँखें, शायद एक बार फिर देखने को मिल जाएँ, शायद उसकी तरफ से कुछ इशारा मिल जाये। संकोच के कारण शागिर्द की हिम्मत नहीं कि लड़कियों के बीच जाकर कामिनी से बात कर सके, लेकिन वह उसे अपनी नजरों से एक पल के लिए भी ओझल नहीं होने देना चाहता। कुछ स्टूडेंट्स घर जा रहें हैं, लेकिन ज्यादातर इधर-उधर खड़े अपने-अपने दोस्तों से बातचीत कर रहे हैं, उनका घर जाने का मन ही नहीं कर रहा है। अब एक सप्ताह बाद ही मुलाकात होगी, इसके बाद वो भी नहीं होगी; क्योंकि समर वैकेशन हो जायेगा, फिर एग्जाम शुरू हो जायेंगे। कुछ स्टूडेंट्स लाइब्रेरी में जाकर पढ़ रहे हैं, शागिर्द अक्सर वहां जाकर पढता रहता है, लेकिन आज उसके मन-मष्तिष्क में इतनी हलचल है कि वह पढाई के बारे में सोच ही नहीं पा रहा है, बस कामिनी, कामिनी,कामिनी। ये तो कन्फर्म है कि कामिनी अभी घर नहीं गई है, लेकिन कहाँ खड़ी है, दिखाई भी नहीं पड़ रही।

कुछ देर बाद शागिर्द का एक क्लासमेट-समीर उसके पास आता है और गुस्से में तेज आवाज में उससे पूंछता है---तुमने किसी लड़की से कोई शरारत की है ?

शागिर्द यह सुनकर हक्का-बक्का रह जाता है, डर और घबराहट में पूंछता है---आपको किसने बताया ?

समीर गुस्से में---पहले मै जो पूंछ रहा हूँ वो बताओ, शरारत की है ?

शागिर्द कान पकड़ते हुए---हाँ, गलती हो गई, आगे कोई शिकायत नहीं मिलेगी।

समीर का गुस्सा ठंढा पड़ता है, आखिर सहपाठी ही तो है। उसने बताया कि कामिनी उसके परिचित की बहन है, उसी ने शिकायत की है कि इस लड़के ने उसके पैर टच कर के शरारत की है। शागिर्द की आँखें शर्म से झुक जाती हैं, कोई जवाब नहीं देता है, उसका अंतर्मन दुखी हो जाता है। शागिर्द और समीर चेहरे से एक दूसरे को जानते हैं, एक साथ एक क्लास में पढ़ते हैं, दोनों एक दूसरे के ज्यादा क्लोज नहीं है, लेकिन समीर को इतना जरूर पता है कि शागिर्द पढ़ने में अच्छा लड़का है। समीर अब धीमी आवाज में प्यार से बात करने लगा है।

समीर---यार शागिर्द ! तुम तो बहुत अच्छे लड़के हो, पढ़ने में भी ब्रिलियंट हो, फिर ये सब क्या है, कहाँ से लड़की के चक्कर में पड़ गए ?

शागिर्द धीरे स्वर में---क्या बताएं यार !

समीर जोश में---यार शागिर्द, तुम कहो तो कामिनी को उसके घर से उठवा लाएं।

शागिर्द---नहीं यार, शुक्रिया !

समीर---यार शागिर्द, तुम अच्छे लड़के हो, तुम ये सब चक्कर में मत पड़ो, अच्छे से पढ़ाई करो, कुछ बन जाओगे तो कामिनी जैसी हजारों लड़कियां मिल जायेगीं।

शागिर्द कुछ जवाब नहीं देता है। लेकिन वह बहुत मायूस हो गया है। वह सोच रहा है, अभी कुछ देर पहले वह कामिनी को लेकर कितने हसींन सपने देख रहा था, एक पल में सारे सपने धड़ाम हो गए। डांट खाने से उसे इतनी तकलीफ नहीं थी जितनी कि कामिनी की शिकायत से। उसे कुछ कहना था तो अकेले में बुलाकर कह लेती, इस छोटी सी बात के लिए किसी लड़के से डंटवाना तो अच्छी बात नहीं। दिल में जो बात थी मुझसे डायरेक्ट कह सकती थी, बात का बतंगड़ बनाने की क्या जरुरत थी, वैसे भी मै इतना बेअंदाज तो नहीं कि ऐसी शरारत बार-बार करूँगा।

सात



छोटा भाई- दीपक व शागिर्द आपस में ज्यादा बात नहीं करते हैं, एक दूसरे का आदर करते हैं एवं काम चलाऊ बात करते हैं। दीपक अपने दोस्तों व मक्खन के साथ खुल कर बातें व हंसी-मजाक कर लेता है, जबकि शागिर्द की ज्यादातर सूरज और मक्खन से मन की बात होती है।

शागिर्द ट्यूशन पढ़ाकर रात लगभग साढ़े आठ बजे कमरे पहुँचता है, तब तक दीपक खाना बना लेता है। दीपक व शागिर्द खाना खाने के बाद पढ़ने बैठ जाते हैं। शागिर्द पढ़ने के नाम पर दिखावा करता है; किताब खोलकर तो बैठ जाता है लेकिन दिल व दिमाग दोनों कामिनी के पास लगा रहता है। शागिर्द का दिमाग बार-बार उस घटना की तरफ चला जाता है, जो आज उसके साथ यूनिवर्सिटी कैंपस में घटित हुई। एक छोटी सी शरारत की शिकायत कामिनी ने समीर से क्यों की, क्या वास्तव में वह मुझसे प्यार नहीं करती, अगर उसके दिल में मेरे प्रति प्यार है तो किसी दूसरे से शिकायत क्यों की, उसे किसी दूसरे लड़के से क्यों अपमानित करवाया। शागिर्द का मन आज बहुत परेशान है, दिमाग में एक बहुत बड़ी उलझन है, कहीं ऐसा तो नहीं कि वह शागिर्द से प्यार तो करती हो किन्तु उसकी ये हरकत उसे अच्छी न लगी हो, उसे अपमान महसूस हुआ हो, या फिर वह उसे पसंद ही न करती हो, इसीलिए शिकायत करके उसे डंटवाया। लेकिन, यदि वह मन ही मन शागिर्द से प्यार नहीं करती होती तो वह उसे उन नशीली निगाहों से क्यों देखती, उसे देखकर वह बार-बार क्यों हंसती। कहीं ऐसा तो नहीं, कि वह अपनी हंसी के द्वारा शागिर्द की गरीबी और उसके गंभीर स्वभाव का मजाक उड़ाती हो, यही सब सवाल शागिर्द के दिलो-दिमाग को झकझोर रहे हैं।

आज रविवार है, आज प्रशांत सर का आखिरी एक्स्ट्रा क्लास है। आज के बाद एक महीने का अवकाश हो जाएगा, अवकाश के पश्चात एग्जाम शरू हो जायेंगे। इस दौरान स्टूडेंट्स की एक दूसरे से मुलाकात होना मुश्किल है। शागिर्द को इससे कोई फर्क भी नहीं पड़ता कि किसी से उसकी मुलाकात होगी या नहीं, उसे तो केवल अपनी दिलरुबा के दीदार चाहिए। उसकी एक झलक भी देखने को मिल जा, तो उसके दिल को ठंडक मिल जाएगी। उसका बस चले तो वह उसे एक पल के लिए अपने से दूर न होने दे।

सभी लड़के-लड़कियां प्रशांत सर को बहुत लाइक करते हैं, सभी स्टूडेंट्स उनसे इमोशनली लगाव रखते हैं। प्रशांत सर भी बहुत अच्छे हैं। बहुत कम लेक्चरर ऐसे होते हैं जो स्टूडेंट्स को इतना प्यार से पढ़ाते हों और उनके भविष्य के प्रति इतना सजग रहते हों। प्रशांत सर इंडियन इकॉनमी के मास्टर ही नहीं बल्कि सर्वज्ञ मालूम पड़ते हैं। इंडियन इकॉनमी से सम्बंधित कोई डाटा, कोई आंकड़ा ऐसा नहीं, जो उनको याद न हो। प्रशांत सर और स्टूडेंट्स के बीच तालमेल इतना अच्छा है कि कोई भी स्टूडेंट उनसे सवाल पूंछने में संकोच नहीं करता। प्रशांत सर ने अपने घर का पता भी सबको बता दिया है और आश्वाशन दिया है कि कोई भी स्टूडेंट उनके घर आकरअपनी जिज्ञाशा शांत कर सकता है। शागिर्द तो कई बार उनके घर इंडियन इकॉनमी समझने जा चुका है। उनका मकान रेलवे कॉलोनी में है। जाते समय सभी लोग प्रशांत सर को हार्दिक शुक्रिया के साथ विदाई देते हैं। क्लासरूम के बाहर कुछ स्टूडेंट्स उनको पुनः घेर लते हैं, अपनी-अपनी जिज्ञासा को शांत करते हैं। प्रशांत सर को छोड़ने का मन ही नहीं करता है।

प्रशांत सर के जाने के बाद सभी लड़के-लड़कियां आपस मे बातें करते हैं। बिछुड़ते समय वे सब एक दूसरे को अपना पता बताना नहीं भूलते। सहपाठियों में सिर्फ रवि ही एक लड़का है जो शागिर्द से पहले से परिचित है। रवि और शागिर्द दोनों के.पी. इण्टर कॉलेज में एक साथ पढ़ते थे, तभी से एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं। रवि ठीक-ठाक घराने का लड़का है, पढ़ने में बहुत अच्छा नहीं है, लेकिन व्यवहार कुशल है। वह

सभी से बात चीत करता रहता है, कुछ लड़कियों से भी बातचीत कर लेता है। लड़के-लड़कियों ने आपस में ग्रुप बनाकर फोटो खिचवाने का फैसला किया है। यदि ग्रुप में फोटो खिचवाना है तो प्रत्येक स्टूडेंट को बीस रुपये देने पड़ेंगे, जिसके बदले पांच फोटो मिलेंगी। शागिर्द के पास बीस रुपये नहीं हैं, इसलिए वह फोटो नहीं खिचवा सकता। रवि ने ग्रुप मे सामिल होकर फोटो खिचवाई हैं।

शागिर्द यद्यपि ग्रुपिंग में शामिल नहीं है, किन्तु वह दूर से सभी की ग्रुपिंग देख रहा है। कामिनी कई लड़कियों के साथ फोटो खिचवा रही है, शागिर्द उसको देख रहा है तो वह भी बार-बार उसकी तरफ देख रही है, ऐसा कई बार हुआ। शागिर्द पिछले सप्ताह की वह घटना नहीं भूल पा रहा है, जिसमे कामिनी ने शागिर्द की शरारत की शिकायत समीर से की थी और समीर ने उसे अपमानित किया था। वह यह भी नहीं समझ पा रहा है कि कामिनी उसे प्यार करती है या नहीं, यदि कामिनी के दिल में शागिर्द के लिए कोई जगह नहीं है तो वह बार-बार शागिर्द को देखकर हंसती क्यों है। लड़कियों को समझ पाना बड़ा मुश्किल है, प्यार भी उसी से करेंगी और शिकायत भी उसी की करेंगी। प्यार में दोनों तरफ की जिम्मेदारी लड़के पर ही होती है, लड़कियां तो बस हंस के दिखा देंगी या फिर रो के दिखा देंगी, लड़कों को जो समझना हो समझते रहें। जब कोई जिम्मेदारी वाली बात आएगी तो लड़के पर डाल देंगी, मै तो लड़की हूँ, मै क्या कर सकती हूँ, मै तो मजबूर थी, आप को सोचना चाहिए था, इत्यादि।

दोपहर बाद सभी लड़के अपने-अपने दोस्तों से विदा लेकर घर जा रहे हैं, लड़कियां भी अपनी-अपनी सहेलियों से विदा लेकर जा रहीं है। शागिर्द का सिर्फ एक ही दोस्त है- रवि। रवि और शागिर्द जब के.पी.आइ.सी. में ग्यारहवीं में पढ़ रहे थे तब दोनों लोग अन्य स्टूडेंट्स के साथ एन.सी.सी. के दस दिन के ट्रेनिंग कैंप में फाफामऊ गए थे। दोनों लोग खूब हंसी-मजाक करते थे, एक दूसरे को चिढ़ाते भी थे। एक बार रवि शागिर्द को किसी बात पर चिढ़ा रहा था तो शागिर्द ने गुस्से में आकर रवि को उठाकर जमीन पर पटक दिया था, बाद में रवि ने शागिर्द से सॉरी बोला,

वे फिर से दोस्त हो गए। रवि काफी सोशल व हंसमुख लड़का है, शागिर्द पढ़ने में अच्छा लड़का है, इसलिए रवि उसकी इज्जत करता है। विदा लेते समय रवि और शागिर्द काफी भावुक हो जाते हैं।

रवि--शागिर्द भाई, छुट्टियों में समय निकालकर मेरे रूम आइयेगा, मेरा रूम तो आप जानते ही हैं।

शागिर्द--हाँ, रवि भाई, जरूर आऊंगा, मै तो आपके रूम पर आ चुका हूँ।

रवि और शागिर्द दुखी मन से एक दूसरे से विदा लेते हैं।

शाम के समय शागिर्द यूनिवर्सिटी की दिन भर की घटनाओं को याद करता है। वह कामिनी की प्रत्येक हरकत को याद करता है। कामिनी ने कुछ लड़कों के साथ भी फोटो खिचवाई हैं, यह बात शागिर्द को बिलकुल पसंद नहीं आयी, क्या जरुरत थी अन्य लड़कों के साथ फोटो खिचवाने की, उसे समझना चाहिए कि कोई उसे बेइंतहां प्यार करता है, वह यह सब कैसे बर्दाश्त कर सकता है। शागिर्द मन ही मन उसे अपनी पत्नी मान चुका है, वह कहीं भी जाये, कुछ भी करे, वह उसे हमेशा अपनी यादों में रखता है, उसका चेहरा हमेसा उसकी आँखों में रहता है। उसकी मदमस्त निगाहें, पतली कमर, हिरनी जैसी चाल, कमसिन अदाएं ! आखिर कौन नहीं मर मिटेगा ऐसी खूबसूरत हसीना पर। शागिर्द उस पर यों ही नहीं फ़िदा है, वह लड़की ही ऐसी है।

शागिर्द को टेंशन इस बात की है कि वह कामिनी के नाम के सिवा उसके बारे में कुछ नहीं जानता, यहाँ तक कि उसके नाम में भी संदेह है, क्योंकि रवि ने उसका नाम बताते समय, 'शायद' शब्द लगाया था। वह कहाँ रहती है, उसके घर वाले क्या करते हैं, वह किस जाति की है, वह कितने अमीर माँ बाप की बेटी है, शागिर्द को कुछ पता नहीं। एक्स्ट्रा क्लास समाप्त हुए लगभग एक महीना हो चुका है, कामिनी की एक झलक भी उसे नहीं मिल पा रही है। शागिर्द के दिल की बेचैनी बढ़ती जा रही है। जुलाई-अगस्त

में एग्जाम होने हैं, पेपर देने तो आएगी ही, किन्तु उस समय मुलाकात करना आसान नहीं होगा। शागिर्द को एक उपाय समझ मे आ रहा है। यदि ग्रुपिंग वाली फोटोज मिल जाएं, जिसमे कामिनी की फोटोज हों, तो उसका कुछ काम चल सकता है। रात में सोते समय उसकी फोटो सीने से लगा लेगा, तो उसे नींद आ जाया करेगी। उसे उम्मीद है कि रवि इस काम में उसकी मदद कर सकता है, क्योंकि वह ग्रुपिंग में सम्मलित हुआ था। कल रविवार का दिन है, शागिर्द ने कल रवि के रूम जाने का निश्चय किया है।

रविवार को शागिर्द रवि के रूम जाता है, रवि का रूम मम्फोर्डगंज मे है, जो मुंडेरा से लगभग बारह किलोमीटर है। इत्तेफाक से रवि रूम पर ही है। अचानक शागिर्द को देखकर रवि खुश हो जाता है-

रवि---नमस्कार शागिर्द भाई !

शागिर्द---नमस्कार रवि भाई, नमस्कार !

रवि---आप मेरे यहाँ आये, बहुत अच्छा लगा, आओ यार, बैठो।

शागिर्द कुर्सी पर बैठ जाता है---और बताओ रवि भाई, क्या चल रहा है ?

रवि शागिर्द को गिलास में पानी देते हुए---यार शागिर्द, आप तो जानते ही हो, मै पढाई में ज्यादा टेंसन नहीं लेता, पढाई भी करता हूँ और एन्जॉय भी करता रहता हूँ, पढ़ने वाले स्टूडेंट्स तो आप लोग हैं।

शागिर्द---नहीं यार रवि, आज-कल मेरी पढाई भी अच्छी नहीं चल रही है।

रवि---क्यों ?

शागिर्द रवि के प्रश्न का जवाब न देकर बात पलट देता है ---यार रवि, आप तो ग्रुपिंग में शामिल थे ?

रवि---हाँ यार, मै तो शामिल था।

शागिर्द---यार मुझे वो फोटोज चाहिए।

रवि---मगर आप तो उस ग्रुपिंग में थे नहीं, तो फोटो लेकर क्या करोगे ?

शागिर्द---मुझे अपनी फोटो से मतलब नहीं है, मुझे वो सारी फोटोज चाहिए जिसमे कामिनी की फोटो हैं।

रवि---अच्छा, तो ये बात है, लगता है पूरी तरह चक्कर में पड़ गए हो ?

शागिर्द बहाना बनाते हुए--- नहीं यार, ऐसी कोई बात नहीं है, बस यों ही कुछ फोटो अपने पास रखना चाहता हूँ।

रवि---यार, मेरे पास तो एक ही सेट है, मै कोशिश करता हूँ, शायद स्टूडियो वाला एक सेट और निकाल दे।

शागिर्द---यार रवि, बहुत जरुरी है।

रवि---अच्छा, तो मै एक काम करता हूँ, जो फोटो मेरे पास हैं वो आपको दे देता हूँ, मै अपने लिए स्टूडियो से निकलवा लूंगा।

शागिर्द---इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद !

रवि---इसमें धन्यवाद की क्या बात है, इतना तो मै कर ही सकता हूँ, ये तो मेरा फर्ज है कि जो मेरे पास है वो मै दे दूँ।

रवि फोटोज निकालकर लाता है, कुल पांच फोटो हैं जिनमे से चार में कामिनी की भी फोटो हैं।

शागिर्द फोटो लेते हुए---रवि, इनका कुल कितना पैसा हुआ ?

रवि---पांच रूपये प्रति फोटो के हिसाब से कुल पच्चीस रुपये।

शागिर्द पैसे निकालकर देते हुए---यार रवि भाई, आपने मेरा बहुत बड़ा काम कर दिया, इसके लिए आपका पुनः बहुत-बहुत धन्यवाद।

ग्रुपिंग के समय शागिर्द के पास देने के लिए बीस रुपये नहीं थे, लेकिन जरूरत पड़ने पर उसने पच्चीस रुपये खुशी-ख़ुशी दे दिए।

शागिर्द फोटो पाकर बहुत खुश हुआ, ज्यादा याद आने पर वह अपनी जान-ए-जिगर की फोटो अपने सीने से लगा लेगा, उसके दिल को कुछ तसल्ली मिल जाया करेगी।

शागिर्द संकोच के साथ---यार रवि, कामिनी का अर्थशास्त्र के अलावा दूसरा सब्जेक्ट क्या है, बता सकते हो ?

रवि---यार, कन्फर्म तो नहीं, लेकिन शायद संस्कृत या प्राचीन इतिहास है। पढ़ने में भी ठीक-ठाक लगती है, लेकिन आपसे ज्यादा नहीं।

शागिर्द---अच्छा रवि भाई, अब मै चलता हूँ।

रवि---अच्छा शागिर्द भाई, बाय-बाय, मेरे लायक कोई सेवा हो तो निःसंकोच बताइयेगा।

शागिर्द रवि से विदा लेकर प्रसन्नचित्त होकर घर चला जाता है।

आठ



बी.ए. फाइनल ईयर के एग्जाम की स्कीम प्राप्त हो चुकी है। स्कीम के अनुसार संस्कृत का पेपर बारह जुलाई को है, जबकि अर्थशास्त्र का पेपर अगस्त में है। पढ़ाई के लिए एक महीने का समय बचा है। शागिर्द के दिमाग में इस समय पढ़ाई के साथ-साथ अपनी जान-ए-मन कामिनी की फिक्र है। सबसे बड़ी चिंता यह है कि वह उसके घर का पता कैसे लगाए। यदि घर का पता चल जायेगा तो वह कभी भी उसके घर के बाहर अथवा घर के आसपास इन्तजार करके उसके दर्शन कर सकता है। आवश्यकता पड़ने पर उसके घर वालों से भी मुलाकत कर सकता है। शागिर्द को यह समझ मे नही आ रहा है कि वह इस काम में किसकी मदद ले। उसका ऐसा कोई हमदर्द दोस्त नहीं है जो उसकी मदद कर सके, रवि को भी कामिनी के घर का सही पता नही मालूम है, उसके अनुसार शायद वह ट्रांसपोर्ट नगर में रहती है, किन्तु यह कन्फर्म नही है। एग्जाम के बाद वह एम.ए. करेगी कि नहीं, करेगी तो किस सब्जेक्ट से करेगी, कहाँ से करेगी, कुछ पता नहीं। यदि यह पता चल जाता तो भी कुछ टेंसन कम हो जाती। शागिर्द को एक ही उपाय समझ में आ रहा है कि जब कामिनी संस्कृत का पेपर देकर बाहर निकलेगी तो वह यूनिवर्सिटी गेट के बाहर उसका इन्तजार करेगा और उसके रिक्से का पीछा करेगा। अभी तो यह भी कन्फर्म नहीं है कि कामिनी का संस्कृत विषय है भी, या नहीं, लेकिन इतना तो कन्फर्म है कि संस्कृत का पेपर बारह जुलाई को है। शागिर्द को बारह जुलाई को गेट के बाहर दूर खड़े रहकर कामिनी की तलाश करनी पड़ेगी।

दोपहर का समय है, दीपक अपने दोस्तों के पास गया हुआ है, शागिर्द घर में अकेला है। एग्जाम शुरू होने में अभी एक महीना बाकी है, सभी एक्स्ट्रा क्लासेज समाप्त हो चुके हैं, घर में रहकर पढाई की जा रही है।

अकेले में शागिर्द पढाई कम करता है, अपनी माशूका कामिनी की याद में ज्यादा डूबा रहता है। सारी फोटोज शागिर्द अपनी किताब में रखे रहता है, जब मन करता है निकालकर देख लेता है। शागिर्द किताब खोलकर फोटो देख रहा है, जिसमे कामिनी का चेहरा वह बार-बार देख रहा है, अचानक उधर से सूरज आ जाता है।

सूरज---शागिर्द भाई, नमस्कार !

शागिर्द चौंक जाता है---अरे, नमस्कार सूरज भाई नमस्कार !

सूरज---मैंने सोचा, देखें शागिर्द भाई अकेले-अकेले क्या कर रहा है।

शागिर्द---अच्छा, ये बात है ?

सूरज फोटोज की तरफ देखते हुए---ये किसकी फोटो देख रहे हो ? कहाँ से लाये हो ये फोटोज ?

शागिर्द हड़बड़ाकर---वो क्लास के स्टूडेंट्स की ग्रुपिंग हुई थी न, वही फोटो हैं।

सूरज--- मगर तुम तो उस ग्रुपिंग मे थे नहीं ?

शागिर्द---हाँ यार, शामिल तो नहीं था, मगर जरुरत पड़ी तो अपने क्लासमेट-रवि के यहाँ से ले आया हूँ।

सूरज फोटो देखकर मुस्कुराते हुए---मगर इसमें तो ज्यादातर लड़कियों की ही फोटो हैं, कुछ गड़बड़ लग रहा है ?

शागिर्द---हाँ यार, तुमने कहा था न कि शादी तो करनी ही पड़ेगी ?

सूरज मुस्कुराकर---तो बताओ, इनमे से मेरी होने वाली भाभी कौन हैं ?

शागिर्द फोटो दिखाते हुए---लो देखो, और देखकर, पहचानकर बताओ कि कौन हैं आपकी भाभी।

सूरज सारी फोटो देखकर---मेरा अंदाजा है कि नीली-सफेद छींट की फ्रॉक वाली ही मेरी होने वाली भाभी हैं।

शागिर्द सूरज की ओर मुखातिब होकर---यार, आपका अंदाजा तो एकदम सटीक है !

सूरज---ये लड़की तो बहुत सुन्दर लग रही है, गोरी इतनी कि एकदम सफ़ेद भक्क, लम्बा कद, छरहरा बदन ! लगता है इन्हे देखकर तो सैकड़ों लड़के सड़क पर फ्लैट हो जाते होंगे, जैसे आप हो गए ?

शागिर्द---हाँ यार सूरज, मैं तो फ्लैट हो गया हूँ , बल्कि मैं तो उसे अपने सपनों की रानी बना चुका हूँ।

सूरज---मगर, ये सब कब और कैसे हुआ ?

शागिर्द---कैसे हुआ ? आपने ही तो कहा था कि शादी तो करनी ही पड़ेगी, तो मैंने शादी कर ली, इन्ही मैडम से, जो मेरी क्लासमेट हैं। अब वो मुझसे शादी करे, चाहे न करे, ये उसकी अपनी मर्जी। शादी का मतलब होता है, किसी को अपना सगा बनाना, सो मैंने उसे अपना सबकुछ बना लिया। अब जो होगा देखा जायेगा। बस अचानक ही निर्णय ले लिया, सोंचा जब शादी करनी ही है तो क्यों न उसी लड़की से कर लें, जो मेरे क्लास में सबसे आगे पहली शीट पर बैठती है, चश्मा लगाती है। लड़के को शादी करने के लिए एक लड़की ही तो चाहिए, फिर वह कैसी है, किस जाति की है, कितनी पैसे वाली है, इन सबसे क्या मतलब। लड़की को गाजर-मूली की तरह छांटना तो मेरे बस की बात नहीं। पता नहीं लोग इतने व्यवसायिक कैसे हो जाते हैं, पालतू जानवरों की तरह जवान लड़के को बाजार में बेचने का प्रयास किया जाता है। मेरे अंदर किसी भी प्रकार का स्वार्थ तो है नहीं जो मै हजार बार सोचूं, लड़की ऐसी होनी चाहि, वैसी होनी चाहिए, कितना दहेज़ मिलेगा, आदि।

सूरज---मान गये शागिर्द भाई, आपके विचारों की तो दाद देनी पड़ेगी, हमेशा आप आदर्शवाद की बात करते हो, और करते भी वैसा ही हो। अच्छा बताओ उसका नाम क्या है ?

शागिर्द---कन्फर्म तो पता नहीं, लेकिन शायद कामिनी लिखती है।

सूरज---ताज्जुब है ! नाम भी नहीं मालूम, पता भी नहीं मालूम, और ख्वाब इतने बड़े ?

शागिर्द एक लम्बी सांस लेते हुए---ख्वाब ! छोटे---बड़े --- ये सब क्या है, ये सब मै कुछ नहीं जानता, बस किसी को चुनना था तो चुन लिया, किसी को दिल देना था तो दे दिया, अब जो होगा देखा जायेगा।

सूरज चिंता व्यक्त करते हुए---अच्छा तो घर वालों से कुछ पूछा है, कुछ बात की है ?

शागिर्द---नहीं, कुछ बात तो नहीं हुई। एक दिन मैंने भाभी को फोटो जरूर दिखाईं थी, तो उस समय तो कुछ नही बोलीं, लेकिन बाद में बात का बतंगड़ बना दिया गया।

सूरज---क्या हुआ ?

शागिर्द---क्या बताएं यार, एक दिन बड़े भैया-जयराम लगभग रात दस बजे यहाँ रूम पर आये थे, मुझे व अम्मा को अपने घर ले गए, दीपक उस समय उन्ही के घर पर था। बड़े भैया गुस्साकर तेज आवाज मे मुझे व अम्मा को उलाहना देने लगे, कहने लगे, देखो राजरानी को क्या हो गया है, उसकी दांती बंध गई है। हम लोगों को बहुत उल्टा-सीधा कहकर अपमानित किया। हम लोगों ने देखा तो भाभी बिस्तर पर लेटीं थीं, कुछ चिंतित लग रहीं थीं, या फिर चिंतित होने की एक्टिंग कर रहीं थीं। हो सकता है कुछ देर पहले ऐसा हुआ हो, लेकिन मेरे सामने तो सबकुछ सामान्य सा दिख रहा था, सामान्य अवस्था में लेटीं थीं, न तो आँखों में आंसू थे, न ही दांती बंधी थी, लेकिन बड़े भैया ने कहा कि ऐसा हुआ है तो भला उनकी बात को

कौन काट सकता है, न अम्मा कुछ बोलीं, न दीपक, न मै । जब अम्मा ने बड़ँगवा से पूंछा कि क्या हो गया बहू को, तो अम्मा को उलाहना देते हुए शागिर्द की ओर इशारा करते हुए बोले कि ये सब इनकी, तुम्हारे लाडले की करतूत है, और अधिक गुस्साकर तेज आवाज में कहने लगे कि इनको अब एक लड़की चाहिए, ये वो दिन भूल गए जब गांव में पलवा ढ़ोते थे, शहर में आ गए तो अब इश्कबाजी सीख गए, अभी पढ़ाई तक पूरी नहीं हुई और लड़की के चक्कर में पड़ गए। इन्ही के चक्कर में हम लोग इतने दुखी हो गए कि रोते-रोते उसकी दांती बंध गई। ये एक लड़की के लिए इतना परेशान हैं, आज ये ऐसा करेंगे, कल दीपक भी वैसा ही करेगा, बाद में मेरे बच्चे भी वैसा ही करेंगे। इन्होने तो सारी उम्मीदों पर ही पानी फेर दिया, अब तुम्ही सम्हालो अपने लाडले को। यार सूरज ! मै तो शर्म से पीला पड़ गया, खड़े-खड़े सर झुकाये सब सुनता रहा, आखिर बड़े भाई को कौन जवाब दे सकता है।

बूढ़े माँ-बाप के लिए बड़ंगवा ही सबकुछ है, छोटे भाइयों व बहिनों के लिए बड़े भैया ही सबकुछ हैं, परिवार मे वही अकेले नौकरी करने वाले हैं, वही सबल हैं बाकी सब निर्बल। उनका उलाहना सुनकर मेरा तो दम घुट रहा था, ऐसा लग रहा था जैसे दुनियां में सबसे नीच इंसान मै ही हूँ।

यार सूरज, उस दिन मै मन ही मन यह सोचकर अत्यंत दुखी और परेशान था कि आखिर मैने ऐसा क्या कर दिया जिससे इतना बड़ा बतंगड़ बन गया। मैंने कई दिन पहले भाभी को केवल फोटो ही दिखाई थीं, जिस पर उनका कोई रिएक्शन नहीं था। उन्होंने कोई सवाल नहीं पूंछा, न ही मैंने उनको कुछ बताया कि, ये लड़की कौन है, क्या तुम इससे प्यार करते हो, कहाँ तक बात पहुंची, आदि कोई बात नहीं हुई। भैया-भाभी ने एक बार भी नहीं पूंछा कि आखिर ये फोटोज दिखाने का क्या मतलब है, क्या तुम दोनों एक दूसरे से प्यार करते हो, या फिर केवल साथ में पढ़ते हो, क्या तुम लोग शादी करना चाहते हो, उससे कहाँ तक कितनी बात हुई , कोई सवाल-जवाब नहीं, बस अचानक इतनी बड़ी बात हो गई कि रोते-रोते दांती बंध

गई। वास्तविकता भी यही है कि अभी तक मेरी और कामिनी की एक बार बात तक नहीं हुई है, केवल मै उसे मन ही मन प्यार करता हूँ। रात में ग्यारह बजे जब मै, दीपक और अम्मा अपने कमरे आये तो अम्मा ने पूंछा कि शागिर्द क्या बात है, तब मैंने अम्मा को सारी बात सही-सही बता दी। तब अम्मा ने कहा, ये तो बिना बात के बतंगड़ बना दिया गया।

मेरे मन में अंदर ही अंदर कुछ संदेह उत्पन्न हो रहा था कि कहीं ऐसा तो नहीं कि दोनों मियां-बीबी ने अम्मा और दीपक के सामने मुझे बेइज्जत करने का नाटक किया हो, क्योंकि दीपक वहीं पर था, और उसने एक बार भी नहीं कहा कि भाभी रो रही थीं और रोते-रोते उनकी दांती बंध गई, बाद में घर आने पर भी दीपक ने ऐसा कुछ नहीं बताया। जब दस महीने पहले राजरानी ने मुझे कुत्ते की तरह घर से अलग किया था तब तो बड़े भाई एक बार भी पूंछने नहीं आये कि शागिर्द क्या हुआ, तुम अलग कैसे हो गए, और आज शागिर्द को बेईज्जत करने के लिए कितना बड़ा नाटक किया।

सूरज---तब ये सब कैसे संभव होगा ?

शागिर्द---क्या होगा, कैसे होगा, यह सब सोचने की मुझे फुर्सत ही कहाँ, बस इतना जानता हूँ कि कामिनी की फोटो मेरे पास हैं। अभी तक तो कोई बात भी नहीं है, लेकिन यह अच्छी बात तो नहीं कि बिना जाने-समझे एक छोटी सी बात के लिए किसी को इतना जलील किया जाये।

सूरज---यार शागिर्द, जब आप जानते हो कि बड़े भैया- भाभी ऐसे हैं तो उनको फोटो दिखाने की क्या जरुरत थी ?

शागिर्द---यार सूरज, मुझमे जरा भी चालाकी नहीं है, मै हर काम घर वालों को बताकर करना चाहता हूँ, मै अपने दिल की बात को भी नहीं छुपाना चाहता। किसी से प्यार होना किसी के बस में नहीं होता, ये अपने आप हो जाता है, फिर इसमें मै कर ही क्या सकता हूँ, इसमें मेरा क्या दोष है।

सूरज---लेकिन बड़ी भाभी को तो आपकी मदद करनी चाहिए, उल्टा वो इतना बड़ा बतंगड़ बना रही हैं। हमें तो वो बहुत स्वार्थी लगती हैं, आपके साथ क्या-क्या हुआ, आप तो सब झेल चुके हैं, फिर भी आप उनके अनुसार चलना चाहते हो। आपके अपने परिवार की बात है, मै ज्यादा कुछ कह भी नहीं सकता।

कुछ देर बाद मक्खन भी दीवाल लांघकर आ जाता है। मक्खन शागिर्द की ओर इशारा करते हुए पूंछता है--और भई शागिर्द ! क्या चल रहा है, जरा हम भी तो जाने, आप लोग क्या बातें कर रहे है। शागिर्द ने मक्खन को उस रात की सारी कहानी सुनाई तो मक्खन भी दुखी हो गया और बोला- यार इस संसार में कोई भी अपना नहीं है, चाहे किसी के लिए जान भी क्यों न दे दो। स्वार्थी व्यक्ति हमेशा अपने स्वार्थ के हिसाब से ही सोचता है। सही कहा गया है, जाकी रही भावना जैसी - तिन देखी मूरत तिन तैसी।

मक्खन---यार शागिर्द ! मै तो उस दिन का गवाह हूँ, जब दस माह पहले आपको कुत्ते की तरह घर से निकाल दिया गया था, भगवान बचाये ऐसी औरत से। मेरे सामने कैसा-कैसा बोल रही थीं आपकी भाभी। मुझे तो शर्म आती है ऐसी महिला को भाभी कहने में।

नौ



शागिर्द के बड़े भाई -जयराम व भाभी- राजरानी लगभग 200 मीटर की दूरी पर अपने छोटे से निजी मकान में रहते हैं। जयराम पुलिस में सिपाही है। छह साल पहले जयराम सबसे छोटे भाई दीपक को गाँव से इलाहाबाद लिवा लाया था कि यहीं रहेगा और पढ़ाई करेगा। उस समय धूमनगंज में किराये के मकान में रहते थे। दीपक परिवार में सबसे छोटा था, बड़े भाई का लाडला भी था। उस समय जयराम की शादी नहीं हुई थी, शागिर्द गांव में ही मैट्रिक की पढ़ाई कर रहा था। एक साल बाद जब जयराम की शादी हो गई और शागिर्द दसवीं मे पास हो गया, तो जयराम अपनी पत्नी राजरानी के साथ अपने छोटे भाई शागिर्द को भी इलाहाबाद लिवा लाया, कि वह यहाँ रहकर पढ़ाई करेगा और घर की देखभाल भी होती रहेगी। उस समय शागिर्द को बहुत खुशी हुई थी कि वह गांव से निकलकर शहर आ गया, अब यहाँ वह और अच्छे से पढ़ाई करेगा। दीपक बड़े भाई का लाडला होने की वजह से ठीक से पढ़ाई नहीं कर रहा था। शागिर्द और राजरानी ने जब दीपक को टाइट किया तो उसकी पढ़ाई अच्छी हो गई। एक बार पढ़ाई के चक्कर में भाभी ने दीपक को चांटा मर दिया था, तो दीपक घर से भाग गया और रेलवे स्टेशन में जाकर मिला। तब दुखी होकर अगले साल जयराम ने दीपक को गांव भेज दिया, जबकि शागिर्द यहीं पर रहा। शागिर्द अच्छा लड़का था, पढ़ाई के साथ-साथ घर के सारे काम बिना बताये कर लेता था। जयराम और राजरानी को शागिर्द से कभी कोई शिकायत नहीं हुई। शागिर्द चार साल तक साथ रहा, उसने कभी कोई शिकायत का मौका नहीं दिया।

पिछली साल दीपक ने हाई स्कूल पास कर लिया था। जयराम ने घर में कई बार चर्चा की थी कि गांव में दीपक बिगड़ रहा है, उसे यहीं लाना

पड़ेगा नहीं तो और बिगड़ जायेगा। जुलाई में जब शागिर्द गांव गया, तो जाते समय बड़े भाई जयराम से नहीं पूंछ पाया कि दीपक को गांव से लाना है कि नहीं। जब वह गांव गया और दीपक से बात हुई तो उसने कहा कि मै भी इलाहाबाद चलूंगा, वहीं पढ़ाई करूँगा। शागिर्द ने दीपक को काफी समझाया भी कि बड़ी भाभी मां के सामान होती हैं, तुम्हारे अच्छे के लिए अगर वो डांटती हैं, सुबह-सुबह पढ़ाई के लिए जगाती हैं, एक-आध चांटा भी मार देतीं हैं तो इसमें बुरा मानने वाली क्या बात है। तब दीपक ने आश्वाशन दिया कि अब भविष्य में ऐसी गलती नहीं होगी, जैसा भाभी कहेंगी वैसा ही करूँगा। चिट्ठी के सिवाय और कोई तरीका नहीं था जिससे कि शागिर्द जयराम से पूंछ सकता कि दीपक को लाएं या नहीं, इसलिए वह बिना पूंछे दीपक को इलाहाबाद लिवा लाया। आते समय पिताजी ने तीन बोरियों में भरकर राशन-पानी दे दिया था, जिसमे लगभग पचास किलो गेहूं, चालीस किलो चावल और तीस किलो दालें आदि थी। पिताजी ने पांच सौ रूपये नकद भी दिए थे। सारा राशन घर में रख दिया गया और पैसे बड़े भाई-जयराम को दे दिए, अपने पास रखकर शागिर्द को करना भी क्या था। राजरानी उस समय मायके में थी। जयराम ने दीपक के सम्बन्ध में शागिर्द से कुछ नहीं कहा। उसने दीपक का ग्यारहवीं में एडमिशन भी करवा दिया, एडमिशन में कुल 240 रूपये खर्च हुए। दीपक स्कूल भी जाने लगा।

दो महीने बाद सितम्बर में जयराम राजरानी को मायके से लिवा लाया। रात में तूफ़ान एक्सप्रेस से ग्यारह बजे घर पहुंचे। सुबह दस बजे जयराम स्कूल में कुछ काम के बहाने दीपक को लिवा ले गया। घर में शागिर्द था और राजरानी थी, मक्खन भी अचानक वहां आ गया था। शागिर्द और मक्खन बाहर बरामदे मे कुर्सी पर बैठे थे। कुछ देर बाद राजरानी कमरे से निकलकर बाहर आई और नीचे जमीन मे बैठ गई।

राजरानी शागिर्द से--तुम दीपक को गांव से क्यों लिवा लाये ?

शागिर्द ने उत्तर दिया---भैया ने एक-दो बार चर्चा की थी कि दीपक गांव मे बिगड़ रहा है, उसे यहां लाना पड़ेगा। मै गांव गया, दीपक ने कहा

हम भी इलाहाबाद चलेंगे, उसने यह भी आश्वाशन दिया कि हम भाभी की हर बात मानेंगे, भविष्य में अब कोई गलती नहीं करेंगे, तो मै उसको लिवा लाया।

राजरानी आदेशात्मक लहजे में---मैं तुम लोगों को साथ नहीं रख पाऊँगी, अपना अलग जाकर रहो।

शागिर्द यह सुनकर आश्चर्यचकित रह गया और दुःखी हो गया, भाभी ये क्या कह रही हैं ! वह निरुत्तर सा हो गया, लेकिन बोलना उसकी मजबूरी थी, वह सहमी हुई आवाज में बोला--- भाभी ये आप क्या बोल रहीं हैं, हम लोग अलग कहाँ और कैसे रहेंगे, हम लोगों का खर्चा कैसे चलेगा ?

राजरानी गुस्साते हुए---मुझे नहीं पता, फ़िलहाल न तो हम किसी को साथ रख पाएंगे और न ही किसी का खर्च दे पाएंगे, जहाँ रहना हो रहो जाके, हमसे कोई मतलब नहीं।

शागिर्द अवाक् रह गया, वह गहरी सोंच में डूब गया--उसका, बी.ए. थर्ड ईयर है, दीपक का ग्यारहवीं मे एडमिशन भी हो गया, अलग रहकर खर्च कैसे चलेगा, पढाई कैसे होगी, दीपक का एडमिशन नहीं हुआ होता तो उसे वापस गांव भेज देता, साथ नहीं रखना था तो भैया ने उसका एडमिशन क्यों कराया, आदि। वह राजरानी से गिड़गिड़ाया---प्लीज भाभी हमें अलग मत करो, हम अलग कैसे रह पाएंगे, हम खर्चा कहाँ से लाएंगे, हम बर्बाद हो जायेंगे।

शागिर्द के गिड़गिड़ाने का जैसे राजरानी पर उल्टा असर पड़ रहा हो, वह और अधिक निष्ठुरता से पेश आने लगीं, कहा कि- मुझे कोई मतलब नहीं, पढाई करो चाहे भाड़ में जाओ, हम न साथ रख पाएंगे, न ही खर्च दे पाएंगे, तुम जानो तुम्हारा काम जाने।

शागिर्द ने फिर रिक्वेस्ट की---भाभी, एक बार आपने कहा था कि यदि दीपक यहाँ आता है तो उसका खर्च हम नहीं देंगे लेकिन तुम्हारा खर्च देते

रहेंगे, तो प्लीज मेरा खर्च ही आप देते रहिए , दीपक के खर्च के लिए मैं ट्यूशन पढ़ा लूंगा।

राजरानी---मैने कह दिया न, कि हम किसी का खर्च नहीं दे पाएंगे, न ही साथ रख पाएंगे।

शागिर्द पूरी तरह निराश व हताश हो गया, उसके गिड़गिड़ाने का राजरानी पर कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। मक्खन भी राजरानी की बातें सुनकर अवाक् रह गया, बहुत दुखी हुआ, लेकिन कुछ बोल न सकता था, क्योंकि दूसरे के परिवार का मामला था। जब राजरानी की शादी हुई थी, नई नई ससुराल आयीं थी तब ऐसी नहीं थी, बड़े प्यार से इन लोगों को गांव से लिवा लाई थी। शादी के चार साल हो गए हैं, दो साल का एक बेटा भी है, पता नहीं क्या हो गया है उसको, आज इतनी स्वार्थी कैसे हो गई। शागिर्द इतना भोला-भाला है कि जब वह किसी काम से कहीं जाता है, तो वह रास्ते के आलावा इधर-उधर नजर नहीं उठाता, अगल-बगल कौन-क्या कर रहा है, उसे कोई मतलब नहीं होता था, फिर वह अलग कैसे रह पायेगा। यदि पता होता कि भाभी उसे अलग कर देंगी तो वह दीपक को गांव से नहीं लाता। जयराम ने भी बिना किसी ऐतराज के दीपक का एडमिशन करवा दिया। यदि वह ऐतराज करता तो शागिर्द उसे वापस गांव भेज देता। अब तो पढ़ाई शुरू हुए दो महीने हो गए हैं, अब दीपक को गांव भेजते हैं तो उसका कहीं भी एड्मिशन नहीं हो पाएगा।

शागिर्द मन ही मन सोचता है---कल रात में भैया-भाभी आये और आज सुबह भाभी इस तरह व्यवहार कर रही हैं, इसका मतलब है कि जयराम और राजरानी ने पहले से ही प्लान बना लिया था कि तुम स्कूल के बहाने दीपक को लेकर बाहर चले जाना, शागिर्द को हम देख लेंगे; क्योंकि पति की सहमति के बिना पत्नी छोटे भाई से इतना कठोर व्यवहार नहीं कर सकती। लगता है सारी कहानी राजरानी के मायके में गढ़ी गई होगी, लेकिन शागिर्द बेचारा कर भी क्या सकता है, उसे तो भैया-भाभी के आदेश

का पालन करना ही पड़ेगा, कोई मां-बाप तो हैं नहीं कि वह जबरदस्ती अपना अधिकार जमा सके।

शागिर्द बहुत टेंशन में है, वह सोच नहीं पा रहा है कि क्या करे, क्या न करे। यदि वह दीपक को गांव वापस भेजता है तो गांव वाले हंसी उड़ाएंगे, कहेंगे कि बड़े आये, चले थे शहर पढ़ाई करने, लो हो गई पढ़ाई ? बड़े भाई जयराम की भी बदनामी होगी। शागिर्द ने मन ही मन हिम्मत बांधी, जो होगा देखा जायेगा। दीपक को वह गांव वापस नहीं भेजेगा, चाहे उसे रिक्शा ही क्यों न चलाना पड़े, कुछ भी करना पड़े, दोनों इलाहाबाद में ही रहकर पढ़ाई करेंगे।

जब बार-बार रिक्वेस्ट करने और गिड़गिड़ाने पर भी राजरानी नहीं मानी और यह निश्चित हो गया कि अलग रहना ही पड़ेगा, तो शागिर्द ने राजरानी से दबे मन से पूंछा कि--भाभी मेरे पास कोई सामान तो है ही नहीं, हम अलग कैसे रहेंगे ?

राजरानी अहसान दिखाते हुए---एक तखत, रजाई- गद्दा, चादर और कुछ जरुरी बर्तन लेते जाना।

शागिर्द---खाना कैसे बनेगा, मेरे पास तो एक रुपया भी नहीं है, जो राशन आदि खरीद सकूँ ?

राजरानी---वो तुम जानो, मुझसे कोई मतलब नहीं।

शागिर्द गिड़गिड़ाते हुए---कुछ गेहूं, चावल, दाल आदि मिल जाता तो शाम का खाना बना लेते ?

राजरानी गुस्साते हुए---राशन-पानी अब बचा ही कहाँ है, जो तुम लोग लाये थे वो सब ख़त्म हो गया।

शागिर्द को पता है कि जो राशन-पानी गांव से लाये थे, उसमे से आधा ख़त्म हुआ है, आधा अभी बचा है। पैसे भी पांच सौ में से 240 रूपये दीपक के एडमिशन में खर्च हुए थे, बाकी बचे होंगे। लेकिन शागिर्द की हिम्मत

कहां कि वह राजरानी से राशन पानी और पैसे का हिसाब मांग सके। वह समझ गया कि राजरानी की नीयत कुछ भी देने की नहीं है, इसलिए बोल रहीं हैं कि कुछ बचा ही नहीं, सब ख़त्म हो गया। राजरानी अपने स्वार्थ में इतनी अंधी हो गई है कि उसे अब अपने देवरों के खाने की भी चिंता नहीं बची है। शागिर्द समझ गया था कि यह सब बड़े भैया की मिलीभगत से हो रहा है, इसलिए उनसे शिकायत करने का कोई मतलब नहीं है, लेकिन यदि वो पूंछेंगे तो शागिर्द सबकुछ बता देगा।

जयराम व दीपक के आने के पहले राजरानी ने जरुरी बर्तन व रजाई-गद्दा निकाल दिए। रहने के लिए मक्खन के बगल वाले मकान में एक कमरा खाली था, वो पचास रूपये किराये पर मिल गया। यह तो इत्तेफाक ही था कि तुरंत कमरा भी किराये पर मिल गया, नहीं तो कुछ दिन सूरज–मक्खन के रूम मे ही बिताने पड़ते। शागिर्द के पास एक रुपया भी जेब में न था। मकान मालिक से बात हो गई कि महीने के लास्ट में किराया दे देना। मकान मालिक बहुत अच्छे थे, बात मान गए। राजरानी को इस बात की बहुत जल्दी थी कि जयराम और दीपक के आने के पहले शागिर्द सामान अलग कमरे में रख ले, इसलिए शागिर्द तखत व रजाई-गद्दा मक्खन की मदद से ले गया और कमरे में रख लिया।

शागिर्द की तत्समय की सबसे बड़ी समस्या यह थी कि शाम का खाना कैसे बनेगा, कहीं भूखे पेट ही न सोना पड़ जाये। उसने मक्खन से दस किलो गेहूं उधार लिए और कहा कि वह गांव जायेगा वहां से गेहूं लाकर उसे वापस कर देगा, उसने किराये के लिए मक्खन से पचास रुपये भी उधार ले लिए। चक्की वाला शागिर्द को जानता था, उसने गेहूं पीस दिया और कहा कि पिसाई बाद में दे देना। शागिर्द परचूनी की दुकान से एक किलो दाल व नमक-मसाला आदि उधार ले आया। शागिर्द को तसल्ली हुई कि चलो शाम को खाली पेट नहीं सोना पड़ेगा।

शाम को ड्यूटी का टाइम समाप्त होने के पश्चात् जयराम और दीपक घर आ गए। जयराम न तो शागिर्द के कमरे गया और न ही पूंछा कि अलग क्यों हुए, तुम्हे किसने अलग किया। मक्खन ने दीपक को सारी कहानी बता

दी, वह समझ गया कि सारा नाटक उसी की वजह से हुआ है, लेकिन वह भी कर क्या सकता था। शागिर्द ने अपने अंदर हिम्मत पैदा की, चाहे रिक्शा ही क्यों न चलाना पड़े, वह हिम्मत नहीं हारेगा। लेकिन उसे ऐसी उम्मीद न थी कि राजरानी इतनी अधिक कठोरता दिखाएंगी, दरवाजे पर जब कोई कुत्ता गिड़गिड़ाता है तो लोग उसे भी आधी रोटी दे ही देते हैं, राजरानी ने तो एक तोला भी राशन नहीं दिया और न ही खर्च के लिए एक धेला दिया।

दस



शागिर्द अलग होने के दो दिन बाद अपने गांव जाता है, किराये-भाड़े के लिए उसने मक्खन से पचास रूपये उधार ले लिए हैं। इलाहाबाद से कानपुर जाने के लिए सुबह के टाइम तो कई ट्रेनें हैं, लेकिन कानपुर से कन्नौज के लिए बहुत कम ट्रेनें हैं। दोपहर साढ़े तीन बजे एक पैसेंजर ट्रेन है, जो कन्नौज लगभग शाम छः बजे पहुंचती है। कन्नौज से गांव दस किलोमीटर है, गांव के लिए छः बजे के बाद कोई टैक्सी नहीं मिलती, यदि ट्रेन राइट टाइम पहुँच गई तब तो टैक्सी मिल जाएगी, वर्ना पैदल ही जाना पड़ता है। ऐसा बहुत कम ही होता है कि टैक्सी मिल जाये। इलाहाबाद से गांव तक लगभग बारह घंटे लग जाते हैं, सुबह नौ बजे निकलते हैं तो रात नौ बजे ही घर पहुँच पाते हैं।

इस बार शागिर्द की किस्मत अच्छी थी कि ट्रेन राइट टाइम पहुँच गई, तो उसको लास्ट वाली टैक्सी मिल गई और साढ़े सात बजे तक घर पहुँच गया। जब घर पहुंचा तो अम्मा खाना बना रहीं थी और पिता जी खाना खा रहे थे। पिता जी ने सबका हालचाल पूंछा तो शागिर्द ने सबका हालचाल बताया, साथ ही आपबीती भी बताई कि किस तरह से राजरानी ने उसे अलग कर दिया। शागिर्द की आपबीती सुनकर अम्मा-पिताजी को बहुत तकलीफ हुई, उन्होंने कहा कि बहू को ऐसा नहीं करना चाहिए, उसने ये बहुत गलत किया। कम से कम बड़ंगवा को तो कुछ सोचना चाहिए, उसको हम लोगों ने कितने लाड-प्यार से पाला है, उसकी पढाई-लिखाई में हम लोगों ने कभी कोई कमी नहीं होने दी। अब हम वृद्ध हो गए हैं, अब हमारे पास इतनी ताकत नहीं बची है कि खेती-पाती कर सकें, वर्ना हम तुम लोगों को भी कोई कमी नहीं होने देते। शागिर्द के माँ-बाप ने इस साल से

बटाई- तिहाई पर खेती करना बंद कर दिया है। अपना पेट पालने के लिए वे दूसरे के खेतों में मजदूरी आदि कर लेते हैं। पिछले साल की फसल का अनाज रक्खा हुआ था, दो लोगों को साल भर खाने के लिए पर्याप्त था। शागिर्द के पिता--भवानी ने उसमे से कुछ गेहूं बेचकर शागिर्द को साढ़े चार सौ रूपये खर्च के लिए दिए, साथ ही इलाहाबाद ले जाने के लिए लगभग चालीस किलो गेहूं, बीस किलो चावल व लगभग दस किलो दालें आदि दो बोरियों मे भरकर बांध दिया। शागिर्द दो दिन बाद इलाहाबाद जाता है, एक झोला के अलावा दो बोरियों में लगभग सत्तर किलो वजन ढोना कोई आसान काम न था, कई जगह उतारना- चढ़ाना, स्टेशनों पर इस पार से उस पार एक-एक करके बोरी ले जाना, ये भी चिंता कि तब तक कोई दूसरी बोरी गायब न कर दे, लेकिन शागिर्द उसे खुशी-खुशी ले गया। इलाहाबाद स्टेशन से मुंडेरा तक के लिए रिक्से वाले ने पूरे दस रूपये लिए। शागिर्द के मन में ये प्रसन्नता थी कि इतने राशन व साढ़े चार सौ रूपये में दो महीने का खर्च चल जायेगा, तब तक कुछ न कुछ काम मिल ही जायेगा।

राजरानी द्वारा शागिर्द को इतनी बेरूखी से घर से निकाल देने के बाद वह बहुत टूट गया था, स्वार्थ की इतनी पराकाष्ठा उसने कभी न देखी थी, जितनी कि राजरानी ने उस दिन दिखा दी। वह स्वार्थ में इतनी अंधी हो गई कि उसे यह भी नहीं सूझा कि शाम को शागिर्द और दीपक खाना क्या खाएंगे, जयराम ने भी ये नहीं सोचा कि शाम को एक बार शागिर्द के कमरे जाकर देख आएं कि मेरे भाइयों ने कुछ खाया कि नहीं, वो तो भला हो सूरज और मक्खन का जिनकी मदद से शागिर्द और दीपक को भूखे-पेट नहीं सोना पड़ा। घर जाने के लिए किराये के लिए उसने पैसे भी दिए। राजरानी ने तो खून के रिश्तों को ही ताक पर रख दिया। जयराम के मन में यदि खोट था तो दीपक का यहाँ एडमिशन ही नहीं करवाते, कोई भी बहाना बना सकते थे, दीपक वापस गांव चला जाता, कोई समस्या ही नहीं थी। दो महीने बाद ससुराल जाकर पत्नी से सलाह-मशविरा करके वापस आने पर भोले-भाले शागिर्द के साथ इतना कपटपूर्ण व कठोर व्यवहार करना कहां की मानवता है।

शागिर्द रात लगभग साढ़े ग्यारह बजे इलाहाबाद पहुंच पाया, दीपक खाना खाकर सोने जा रहा था। अम्मा ने आलू की शब्जी और पराठे बांध दिए थे, शागिर्द वही खाकर सो गया। शागिर्द सुबह साढ़े सात बजे जागकर बाहर टहल रहा था, तभी उधर से सूरज की आवाज आई--- शागिर्द भाई नमस्कार !

शागिर्द ने पीछे मुड़कर देखा---नमस्कार सूरज भाई।

सूरज---रात में तूफ़ान एक्सप्रेस से आये होगे ?

शागिर्द---हाँ यार, उसी से आया था।

सूरज---गांव के हालचाल सुनाओ, अम्मा-पिताजी कैसे हैं ?

शागिर्द---सब ठीक-ठाक ही है, अम्मा पिताजी भी ठीक हैं, अलग होने की घटना उनको बताई तो वे बहुत दुखी हुए, लेकिन बेचारे वृद्ध मां-बाप कर ही क्या सकते हैं।

सूरज---हाँ यार, बात तो सही है। अच्छा बताओ, घर से क्या-क्या लाये हो ?

शागिर्द---गेहूं, चावल और दालें, और गुड़ भी लाया हूँ, आओ यार, गुड़ खिलाता हूँ।

तब तक उधर से मक्खन भी आ जाता है, दुआ सलाम होती है और सब तखत पर बैठ जाते हैं। शागिर्द बोरी से गुड़ निकाल कर लाता है, सब लोग गुड़ का लुत्फ़ उठाते हैं, गुड़ खाकर पानी पीने में बड़ा मजा आ गया।

शागिर्द---यार, दूध होता तो गुड़ की चाय बनाते, लेकिन अब तो दूध के दर्शन होना ही दुर्लभ है।

मक्खन---गांव के हालचाल कैसे हैं शागिर्द भाई ?

शागिर्द---सब ठीक हैं यार, सब राशन-पानी ले आये हैं और पिता जी ने साढ़े चार सौ रूपये भी दिए हैं, खर्च के लिए। आपका भी पचास रूपये देना है।

शागिर्द पैंट की जेब से पचास रूपये निकालकर मक्खन को देता है।

मक्खन---ऐसी क्या जल्दी थी, बाद में ले लेते ?

शागिर्द---कोई बात नही, देना तो है ही, आपको भी तो जरुरत होगी। मुसीबत की घडी में आपने मेरी बहुत मदद की, ये क्या कम है।

सूरज शागिर्द की ओर मुखातिब होकर---चलो यार, इतने राशन-पानी से आपका दो महीने काम चल जायेगा।

शागिर्द---हाँ यार, ये तो है।

सूरज---आगे के खर्च के लिए कैसे क्या करोगे ?

शागिर्द---देखता हूँ यार, कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। पहले तो ट्यूशन के लिए प्रयास करूँगा, ट्यूशन नहीं मिला तो रिक्शा चलाना पड़ेगा। फ़िलहाल अपनी और दीपक की पढ़ाई किसी भी हालत मे बंद नही होने दूंगा, चाहे कुछ भी करना पड़े।

शागिर्द दो महीने तक इंतजार नही करेगा, कि राशन पानी समाप्त हो जाये तब वह धंधे कि तलाश करे, उसने अभी से प्रयास शुरू कर दिया है। शागिर्द ने शहर के कई चौराहों पर रिक्शे वालों से बात कर ली है, उनकी तरफ से उसे पूरा आश्वाशन मिला है कि जब भी वह चाहेगा उसे किराये पर रिक्शा दिला दिया जायेगा, गारंटी भी वो लोग ले लेंगे। शागिर्द को तसल्ली मिली कि कम से कम एक काम तो जब चाहेंगे तब मिल जायेगा। लेकिन एक समस्या थी कि शहर के चौराहों पर पुलिस के सिपाहियों की ड्यूटी रहती थी, एक ही विभाग में नौकरी करने के कारण उनमे से कई सिपाही जयराम के परिचित के थे और वे जयराम के छोटे भाई शागिर्द को भी जानते थे, यदि वह रिक्शा चलाएगा तो जान-पहचान वाले सिपाही उसे देख

लेंगे और कहेंगे कि देखो जयराम दीवान जी का छोटा भाई रिक्शा चला रहा है। शागिर्द नहीं चाहता है कि उसके बड़े भाई की बदनामी हो, इसलिए उसने रात में रिक्शा चलाने का निश्चय किया। रात में पुलिस वाले उसे जल्दी से पहचान नहीं पाएंगे, कोई परिचय वाला मिल भी जायेगा तो वह उसे दूर से देखकर दाएं-बाएं से निकल जायेगा।

धूमनगंज मे शिव गुप्ता के मकान मे किराये पर अपने बड़े भाई जयराम के साथ शागिर्द लगभग एक साल तक रहा था। वहां से लगभग दो सौ मीटर की दूरी पर डॉ रणधीर पटेल का एक छोटा सा क्लीनिक था। शागिर्द उनके पास कई बार भतीजे के लिए दवा लेने जा चुका था, इसलिए डॉ रणधीर उसे अच्छी तरह जानते थे। एक दिन अचानक शागिर्द के दिमाग में आया कि क्यों न डॉ रणधीर से मिलकर अपनी समस्या बताई जाये, शायद वे ट्यूशन दिलाने में उसकी कुछ मदद कर सकें। यही सोचकर शागिर्द डॉ रणधीर से मिलने गया, डॉ रणधीर शागिर्द को देखकर तुरंत पहचान गया, शागिर्द ने उससे नमस्ते किया।

डॉ रणधीर---नमस्कार शागिर्द, आओ बैठो, बताओ क्या हाल हैं ?

शागिर्द संकोच करते हुए---भैया जी, आजकल मै बहुत परेशान हूँ, कहीं कोई ट्यूशन मिल जाता तो कुछ राहत मिल जाती।

डॉ रणधीर---मेरे घर में चार बच्चे हैं, दो मेरे और दो छोटे भाई के, चारो को पढाना है, एक घंटे टाइम देना है, सौ रूपये मिलेंगे, अगर आपकी इक्छा हो तो पढ़ा सकते हो, चाहो तो आज से ही पढ़ाना शुरू कर सकते हो।

शागिर्द ने तुरंत हां बोल दिया और मन में काफी खुश हुआ, कि चलो एक ट्यूशन मिल गया, सौ रूपये की जुगाड़ तो हो गई, ऐसे ही दो-तीन ट्यूशन और मिल जाएं तो उसका काम चल जायेग। डॉ रणधीर भी मन ही मन खुश थे कि उनको सौ रूपये में चार बच्चों को पढ़ाने वाला ट्यूटर मिल गया। शागिर्द ने आज से ही चारो बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया।

शागिर्द शाम को घर जाता है तो वह ट्यूशन मिलने की ख़ुशी सबको बताता है। सूरज, मक्खन और दीपक सबको ख़ुशी होती है कि चलो शागिर्द को एक सहारा तो मिला। शागिर्द को तो ऐसा लग रहा था जैसे कोई छोटी-मोटी नौकरी मिल गई हो। नौकरी तो नौकरी होती है, चाहे एक टके की हो, चाहे सौ टके की। गरीब लोग एक टके मे पेट भरने को मजबूर होते हैं, जबकि अमीर लोगों का सौ टके मे भी पेट नहीं भरता। यदि तीन ट्यूशन और मिल जायेंगे तो चार सौ रूपये में महीने भर का खर्च आराम से चल जायेगा, रिक्शा चलाने की भी नौबत नहीं आएगी। डॉ रणधीर की मदद से कुछ दिन बाद शागिर्द को एक ट्यूशन और मिल गया, सौ रूपये में दो बच्चों को एक घंटा पढ़ाना था, फिर एक ट्यूशन और मिल गया। अब शागिर्द को तीन ट्यूशन मिल चुके थे, एक-आध ट्यूशन बाद में मिल ही जायेगा। आजकल ट्यूशन एक व्यवसाय बन गया है, पहले ट्यूशन पढ़ाना सम्मानजनक नहीं माना जाता था, हर कोई अपने बच्चों को ट्यूशन नहीं पढ़वाता था, ट्यूशन भी खोजने पड़ते थे। तीन ट्यूशन मिल जाने पर शागिर्द ने रिक्शा चलाने का ख्याल दिमाग से हटा दिया। अब उसे एक माह बाद तीन सौ रूपये मिल जायेंगे, तब तक के लिए खर्च की व्यवश्था पिताजी ने कर ही दी है। अब अधिक चिंता करने की जरुरत नहीं है, आगे सब ठीक ही हो जायेगा। दीपक को भी तसल्ली हो गई कि अब भैया का टेंशन कम हो गया है। दीपक अभी मजबूर है, वह शागिर्द की कोई मदद नहीं कर सकता, लेकिन खाना बनाना आदि घर के सारे काम वह कर लेता है, जिससे शागिर्द का समय बच जाता है। सूरज व मक्खन को भी तसल्ली हो गई कि शागिर्द की टेंशन अब कम हो गई है।

शागिर्द को ट्यूशन मिल जाने की ख़ुशी में आज सूरज के घर खाना बनेगा। सूरज ने दीपक से मना कर दिया है कि वह आज खाना न बनाए। सूरज ने कहा, कभी-कभी तो हमारे यहाँ भी खाना खा लिया करो, दीपक ने कहा- जैसी आपकी मर्जी भैया जी। सूरज व दीपक मिलकर खाना बना रहे हैं, आज देशी उरद की दाल बनाई जाएगी, लहसुन-जीरा का छौंका लगेगा, मजा आ जायेगा। मक्खन सलाद के लिए मूली व गाजर भी लाया है। मक्खन

सलाद काट रहा है। रोटी के साथ-साथ चावल भी बनाया गया है। सब लोग एक साथ बैठकर खाना खाते हैं। खाना खाने के बाद शागिर्द ने बड़ी तारीफ की---वाह भई, आज तो मजा आ गया, पेट कुछ ज्यादा ही भर गया। खाना खाते -खाते कब दस बज गया, पता ही नहीं चला। शागिर्द ने कहा---अच्छा भाई, धन्यवाद, अब चला जाय, एक-आध घंटे पढ़ भी लिया जाय। सूरज व मक्खन ने कहा---अच्छा भाई, धन्यवाद , शुभ रात्रि।

लगभग तीन महीने बाद दीवाली के समय शागिर्द और दीपक-दोनो गांव जाते हैं। घर में अम्मा और पिताजी को सारा हालचाल बतातें हैं, शागिर्द ने यह भी बताया कि उसे अब चार ट्यूशन मिल गए हैं, चार सौ रूपये मिल जाते हैं, जिससे महीने का खर्च चल जाता है, अब आप लोगों को चिंता करने कि कोई जरुरत नहीं। अम्मा पिताजी को ख़ुशी हुई कि चलो अब शागिर्द और दीपक ठीक हैं और उनकी पढ़ाई भी ठीक से चल रही है। पिताजी बहुत अफ़सोस व्यक्त कर रहे थे कि वे अब कोई मदद नहीं कर पा रहे हैं। शागिर्द ने उनको तसल्ली दिलाई कि अब उनको ज्यादा काम करने की कोई जरुरत नहीं है, अभी वह खर्च भर के लिए कमा ले रहा है, आगे जो होगा अच्छा ही होगा।

आज रविवार है, शागिर्द कभी-कभी रविवार को भी ट्यूशन पढ़ाने चला जाता है। वह चाहता है कि उसके पढ़ाये हुए बच्चे होशियार हो जाएँ, स्कूल में अच्छे नम्बर लाएं, उनके पेरेंट्स भी खुश रहें कि मास्टर जी अच्छा पढ़ाते हैं। लेकिन आज के लिए बच्चों ने ही सिफारिश की थी कि छुट्टी कर दी जाय, इसलिए शागिर्द ने इस रविवार सभी बच्चों की छुट्टी कर दी है। दोपहर का समय है, शागिर्द घर पर तखत पर लेटा हुआ है। जब भी शागिर्द का दिमाग खाली होता है, वह कुछ न कुछ सोचता रहता है। अलग किये जाने की घटना को दस महीने हो गए, लेकिन ऐसा लगता है जैसे कल की ही बात हो। किसी तरह उसकी बी.ए. की पढ़ाई पूरी हो जाये, फिर वह नौकरी की तैयारी करेगा। शागिर्द भविष्य के अंधेरों में उम्मीद की चिंगारी खोजने का प्रयास कर रहा था, कि बगल से दीवाल लांघकर अचानक सूरज आता है।

सूरज ---नमस्कार शागिर्द भाई !

शागिर्द हड़बड़ाकर उठता है---नमस्कार सूरज भाई, नमस्कार।

सूरज---अकेले पड़े-पड़े क्या सोच रहे हो शागिर्द भाई, लगता है आप भूत और भविष्य में गोते लगा रहे हो। अरे भाई, कभी तो वर्तमान में जी लिया करो। अब आप भूतकाल के गड़े मुर्दों के साथ छेड़छाड़ करना बंद करो और भविष्य की उम्मीदों को तलाशना शुरू करो, और बताओ, एग्जाम की तैयारी कैसी चल रही है

शागिर्द धीरे से जवाब देता है---कुछ नहीं यार, अगले महीने अगस्त में एग्जाम होने हैं, कुछ खास पढाई नहीं हो पा रही है, सोचता हूँ कि कम से कम फर्स्ट क्लास तो आ ही जाऊँ।

सूरज---अभी एक महीना है, जम के पढाई करो, आपके लिए फर्स्ट क्लास लाना कोई बड़ी बात नहीं।

ये छोटी सी नसीहत देकर सूरज यह कहकर चला जाता है कि शाम को फिर बात करेंगे। शागिर्द को सूरज की बातों से काफी उत्साह मिला, सूरज के जाते ही शागिर्द उठकर बैठ जाता है और किताबें व नोट्स पलटना शुरू कर देता है।

ग्यारह



शागिर्द अब पुरानी बातों से ध्यान हटाने का प्रयास कर रहा है। पुरानी बातों में रखा भी क्या है, केवल सबक सिखाने के सिवाय वे कर ही क्या सकती हैं। शागिर्द का दिमाग एक कोरा कागज था, दुनिया के रंगमंच के विभिन्न पहलू उस खाली कैनवास में अपना-अपना रंग भरने मे लगे हुए हैं। कुछ रंग ऐसे भी होते हैं जो जिंदगी भर नहीं छूटते। लेकिन शागिर्द इन सबसे रूबरू रहकर भी अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकता। बी.ए. फाइनल के एग्जाम के लिए अब समय कम बचा है, अब वह जरा भी समय बर्बाद नहीं करना चाहता है।

लेकिन एग्जाम की तैयारी के साथ-साथ उसकी एक और समस्या है कि उसे किसी भी तरह कामिनी के घर का पता लगाना है। घर का पता लग जाये तो वह कभी भी कामिनी से संपर्क कर सकता है। एग्जाम के समय यदि उसके घर का पता नहीं लगा पाया तो बाद में पता लगाना बहुत मुश्किल होगा। ऐसा कोई दोस्त या क्लासमेट भी नहीं है जो शागिर्द की मदद कर सके, सबकुछ उसे अकेले ही करना है। महबूबा का ठिकाना पता लग जाने से आधी समस्या हल हो जाएगी, फिर जब उसे फुर्सत मिलेगी या जब उसका दिल बेचैन होगा तो वह उस गली-मुहल्ले मे जाकर उसके दीदार करने अथवा मिलने का प्रयास कर लेगा। शागिर्द कामिनी के लिए इतना पागल-दीवाना हो चुका है कि यदि उसके घर का पता नहीं चला तो वह शहर की प्रत्येक गली-मोहल्ले के चक्कर लगाकर उस चेहरे की तलाश करेगा, हर घर में वह उसकी तलाश करेगा।

स्कीम के अनुसार बारह जुलाई को संस्कृत का पेपर होना है, शागिर्द का संस्कृत विषय नहीं है, लेकिन वह बारह जुलाई को यूनिवर्सिटी जायेगा।

यदि कामिनी का पेपर होगा तो वह यूनिवर्सिटी गेट से गुजरेगी, जैसे ही कामिनी गेट के बाहर निकलेगी शागिर्द उसका पीछा करेगा। यदि कामिनी रिक्शे से आएगी तब तो उसका पीछा करना आसान रहेगा, लेकिन यदि वह मोटरसाइकिल या कार से आएगी तो उसका पीछा करना असंभव होगा। कहीं उसका संस्कृत विषय न हुआ तो निराशा ही हाथ लगेगी। यदि वह कामिनी के घर का पता लगाने में असफल हुआ तो वह मायूश होकर टूट जायेगा।

रात के बारह बज चुके हैं, शागिर्द को नींद नहीं आ रही है। गर्मी का समय है, शागिर्द ने छत पर चटाई ,उसके ऊपर गद्दा और चादर बिछा रखी है। छत इतनी गर्म है कि उसकी गर्मी बिस्तर को पार करते हुए शागिर्द के पीठ पर लग रही है। शागिर्द बिस्तर के एक किनारे आधे हिस्से पर लेटा है, आधा खाली है। जो आधा हिस्सा खाली है वह कुछ देर मे हवा से ठंढा हो जाता है, तब शागिर्द इस तरफ खिसक जाता है, इसी प्रकार जब दूसरा हिस्सा थोड़ा ठंढा हो जाता है तो उधर खिसक जाता है, यही प्रक्रिया रात भर चलती रहती है। इस गर्मी के साथ-साथ मच्छरों का आतंक भी कुछ कम नहीं है, जैसे ही उनको मौका मिलता तुरंत सुई चुभो देते। चादर ओढ़ते तो पसीना बहने लगता, चादर हटाते तो मच्छर नहीं चूकने वाले। जब नींद नहीं आती तो दिमाग पता नही कहां-कहां की सैर करने लगता है। उसका दुखी मन विचरण करने लगता है कि यदि उसके भैया-भाभी घर से नहीं निकालते तो शायद वह रास्ता नहीं भटकता। जवानी की उम्र बहुत ही संवेदनशील होती है, जुनून भी इतना होता है कि कुछ भी कर गुजरने को मन करता है। ऐसे में यदि कोई सही रास्ता दिखाने वाला मिल गया तो ठीक है, नहीं तो उसका गर्दिश मे जाना तय है। इस उम्र में घर वालो का प्यार और सहयोग बहुत आवश्यक होता है। जिस समय भाभी को कामिनी की फोटो दिखाई थी उसी समय यदि वह प्यार से सारी बात पूछतीं और समझा देतीं तो शायद शागिर्द उसके चक्कर में न पड़ता। बजाय प्यार से समझाने के उलटे बात का बतंगड़ बना दिया गया, अम्मा और दीपक के सामने उसे बेइज्जत किया गया। जब से शागिर्द को बिना वजह जलील किया गया तब से वह कामिनी के बारे में और ज्यादा संजीदगी से सोचने लगा है। शागिर्द का

दिल कामिनी को बेइंतहा प्यार करने लगा है। इसका मतलब ये नहीं कि वह कामिनी से शादी ही करना चाहता है, वह तो बस प्यार के बदले प्यार चाहता है। यदि कामिनी उससे दो पल प्यार से बात कर लेगी और वह अपनी मजबूरी जाहिर कर देगी तो वह उसे हमेशा-हमेशा के लिए भुला सकता है, अन्यथा वह शागिर्द से जितना अधिक दूर होती जाएगी, शागिर्द उसके लिए उतना ही अधिक बेकरार और दीवाना होता चला जायेगा।

कामिनी ने एक छोटी सी शरारत की शिकायत समीर से कर दी, जिसकी वजह से शागिर्द को शर्मिंदा होना पड़ा, लेकिन शागिर्द अभी निराश नहीं हुआ है। हो सकता है कामिनी को शागिर्द की यह ओछी हरकत ख़राब लगी हो। हो सकता है कि वह अभी थोड़ा इन्तजार करना चाहती हो, अभी शागिर्द को और समझना चाहती हो। लेकिन कामिनी के दिल में भी कुछ न कुछ तो है, जिससे शागिर्द उसकी ओर आकर्षित कर रहा है। यदि शागिर्द और कामिनी के दिलों के बीच कोई सम्बन्ध न होता तो शागिर्द का दिल यों ही उसके पास क्यों चला जाता, शागिर्द का मन और ध्यान सिर्फ उसी लड़की की तरफ ही क्यों जाता जो क्लास में प्रथम कतार मे बैठती है, ऐसा तो नही कि क्लास में सिर्फ वही एक लड़की है जो बहुत खूबसूरत है और वही पढ़ने में सबसे तेज है। शागिर्द का ध्यान जब कामिनी की तरफ गया था तब तो वह उस लड़की के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। शागिर्द ने मन ही मन उसे अपना सबकुछ मान लिया, इसका मतलब कुछ न कुछ तो सम्बन्ध है दोनों में, चाहे वो पिछले जन्म के ही सम्बन्ध क्यों न हों, आखिर कोई किसी के लिए इतना बेताब और आसक्त कैसे हो सकता है। फिलहाल शागिर्द कामिनी को सोचने-समझने का पूरा अवसर देगा।

शागिर्द कभी-कभी अत्यधिक निराशा में डूब जाता है, कहीं ऐसा तो नहीं कि कामिनी उसे जरा भी प्यार न करती हो, कहीं ऐसा न हो कि वह उससे बात ही न करे। शागिर्द उससे बस एक बार बात करना चाहता है, वह उससे पूँछेगा कि क्या इस संसार में मोहब्बत से बड़ी कोई चीज होती है, जब वह कहेगी कि नहीं, तो वह उससे आगे बात करेगा, वह साफ-साफ़ कह देगा कि वह उससे बेइंतहां प्यार करता है, वह उसे अपना सबकुछ

मान चुका है, वह उसके बिना एक पल भी जीवित नहीं रह सकता। इतना कुछ सुनने के बाद तो उसे कुछ न कुछ बोलना ही पड़ेगा, यदि वह कहेगी कि वह भी उससे प्यार करती है, तब तो शागिर्द की ख़ुशी का ठिकाना नहीं होगा, यदि वह कहेगी कि उसकी कुछ मजबूरी है, वह उससे प्यार नहीं कर सकती, वह शागिर्द को प्यार से समझा देगी, तब भी वह मान जायेगा, लेकिन यदि उसने गुस्से में आकर कह दिया कि वह उससे कतई बात नहीं करेगी, तो वह बहुत दुखी होगा, उसका दिल टूटकर बिखर जायेगा।

शागिर्द को अभी तक ये पता नही कि कामिनी किस जाति से है, वह वर्मा लिखती है, लेकिन वर्मा टाइटल सुनार लोग लगाते हैं, कुर्मी और अनुसूचित जाति के लोग भी लगाते हैं। शागिर्द जाति-धर्म पर कतई विश्वास नहीं करता, उसके लिए तो मनुष्य की सिर्फ एक ही जाति होती है, और मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। लेकिन इस भारतीय परिवेश में शायद ही कोई ऐसा संस्कार हो जहां जातिवाद की जरुरत न पड़ती हो, खासकर शादी के मामले में तो जाति-धर्म सबसे आगे रहते हैं। कामिनी यदि तथाकथित किसी निम्न जाति की होगी तो शागिर्द के लिए अच्छी बात होगी, यदि वह तथाकथित ऊँची जाति की होगी तो उसके लिए थोड़ा मुश्किल होगी। शागिर्द को यह तो समझ में आ गया है कि कामिनी किसी ऊंचे खानदान की लड़की है, लेकिन ये पता नहीं कि वह कितने पैसे वाले घराने की है। प्यार में पैसा सबसे बड़ी बाधा होती है, पैसे के द्वारा न जाने कितनो की भावनाएं हर-रोज आहत होती हैं, न जाने कितनी बेटियां डोली में बैठ नहीं पातीं, न जाने कितनों की अर्थियां उठ जाती हैं। शागिर्द ने तो सिर्फ एक लड़की से प्यार किया है, वह किस जाति-धर्म की है, वह कितनी पैसे वाली है, इससे उसका कोई लेने देना नहीं। उसे तो सिर्फ और सिर्फ कामिनी की जरुरत है, और कुछ नहीं चाहिए, यदि उसमे काबिलियत होगी तो वह बहुत पैसा कमा लेगा।

दिल्लगी ऐसी बला है कि वह दिल और दिमाग को झकझोर कर रख देती है, जब किसी का दिल सीने से निकलकर किसी और के पास चला

जाता है, तो उसके पास तड़प के सिवाय कुछ बचता नहीं है। शागिर्द किसी से दिल तो लगा बैठा, लेकिन अब उसका जीना दुश्वार हो गया है। इस संसार मे उसका ऐसा कोई दोस्त नहीं है, जो उसकी मदद कर सके, दिल की लड़ाई उसे अकेले ही लड़नी पड़ेगी। वह प्यार करना तो जानता है लेकिन प्यार जाहिर करना नहीं जानता। अपने शर्मीले और संकोची स्वभाव के कारण वह किसी लड़की से बात तक नहीं कर पाता है, दोस्ती करना तो बहुत दूर की बात। यदि कोई लड़की दोस्त होती तो वह उसकी काफी मदद कर सकती थी, उसके घर परिवार में भी कोई ऐसा नहीं जो उसकी मदद कर सके। दो प्यार करने वालों की शादी भी हो जाये ये कोई जरुरी नहीं, शागिर्द को सिर्फ कामिनी का प्यार चाहिए, शादी होना, न होना, ये तो संयोग की बात है। वह चाहता है कामिनी सिर्फ एक बार उससे प्यार से बात कर ले, और उसका दिल जो उसके पास है वह उसे वापस कर दे। सोने से पहले प्रतिदिन शाम को घंटों सोच में डूबे रहना शागिर्द की आदत बन गई है, वह कामिनी के ख्यालों में खोया रहता है। उसका चेहरा देखकर स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि उसे प्रेम-रोग लग गया है, जो ठीक होने वाला नही है। वह पढ़ाई तो करता रहता है, लेकिन उसके भेजे में कुछ घुसता नहीं है।

शागिर्द की जीवन शैली 'सादा जीवन उच्च विचार' वाली है। ये भी कहा जा सकता है कि सादा जीवन तो उसकी मजबूरी है, क्योंकि शौक-सर्राटे वाला जीवन जीने के लिए उसके पास पैसे ही नहीं है, लेकिन उच्च विचार रखना उसकी कोई मजबूरी नहीं है, वह तो उसका स्वाभाविक आंतरिक गुण है, जो प्राकृतिक रूप से उसे मिला है। शागिर्द झूठे दिखावे पर बिल्कुल विश्वास नहीं करता। उसने सुना था कि यदि कोई किसी को तन-मन-धन से प्यार करे तो वह उसे जरूए मिलता है। शागिर्द के पास तन और मन तो है लेकिन धन नहीं है, और आज के युग मे शायद धन ही सबसे महत्वपूर्ण है। शागिर्द का दिल बिलकुल निर्दोष-अल्लढ़ सा है। उसके बारे मे अर्ज किया जा सकता है ---

दोषों से दूर,

कितना निर्दोष

ये चेहरा है !

खिड़कियां-दरवाजे बंद,

कितना मजबूत

इस पर पहरा है !

कुत्तों ने चाट-चाट कर,

इस चेहरे को

चमकदार कर दिया है,

बची थी जो गंदगी,

इन आंसुओं ने

उसका हिसाब कर दिया है।

शागिर्द का मन बिलकुल पाक-साफ था, उसमे किसी प्रकार की कोई चालाकी अथवा दिखावा न था। उसके भोलेपन में एक अजीब सी चमक थी जिसे हर कोई पहचान नहीं सकता। उस कमसिन कामिनी ने उसका भोला-भाला दिल लूट लिया है। शागिर्द की सोच बिलकुल निर्दोष और निस्वार्थ थी। उसे किसी को चुनना था तो चुन लिया, किसी को दिल में बिठाना था तो बिठा लिया, किसी को अपना बनाना था तो बना लिया, अब अंजाम कुछ भी हो।

शागिर्द को अपने दिल के दर्द के साथ-साथ पढाई की भी चिंता हो रही है, एग्जाम के लिए बहुत कम समय बचा है। यदि पढ़ाई ख़राब हो गई तब तो वह कहीं का नहीं रहेगा, लोग कहेंगे कि एक लड़की के चक्कर में पढ़ाई-लिखाई सब बर्बाद कर दी, पूरा देवदास बन गया ? शागिर्द ने सोचा कि पहले सूरज के रूम में जाकर उससे कुछ गपशप कर लें, जिससे मूड कुछ हलका हो जाये, उसके बाद आकर पढाई शुरू की जाये। शागिर्द

अचानक सूरज के रूम में जाता है, वह पढ़ रहा होता है---नमस्कार सूरज भाई ! नमस्कार मक्खन भाई !

सूरज और मक्खन---नमस्कार, शागिर्द भाई, नमस्कार ! सूरज ने किताब बंद कर रख दी, और बताओ शागिर्द भाई, आज कल दिखाई नहीं पड रहे हो, लगता है एग्जाम नजदीक होने के कारण पढ़ाई में मश्गूल हो गए हो।

शागिर्द---हाँ यार, परीक्षा आने वाली है, एक महीना ही बचा है एग्जाम के लिए।

सूरज---कामिनी मैडम के क्या हाल चाल हैं, और कुछ जानकारी मिली ?

शागिर्द कुछ सोचते हुए---नहीं यार, अभी तो कोई जानकारी नहीं मिली।

सूरज---कुछ पता करोगे तब न पता चलेगा, ऐसे हाथ पर हाथ धरे बैठे रहोगे तब क्या होगा ?

शागिर्द---हाँ यार, सोच तो रहा हूँ कि कुछ पता किया जाये। बारह जुलाई को शायद उसका संस्कृत का पेपर हैं, यूनिवर्सिटी जाकर कुछ पता करने का प्रयास करूँगा। जब वह पेपर देकर बाहर निकलेगी तो उसका पीछा करके उसके घर का पता जानने की कोशिश करूँगा।

सूरज---पहले तो अपने आपको मेन्टेन रखने का प्रयास करो, एक जोड़ अच्छे कपडे सिलवा लो, फिर उसके सामने जाओ। अभी समय भी है, तुम यह काम कर सकते हो।

शागिर्द को सूरज की ये बात तो समझ मे आ गई, लेकिन कपडे खरीदने के लिए पैसे कहाँ से आएंगे ? उसके पास तीस-चालीस रूपये ही होंगे, जबकि पैंट शर्ट के लिए कम से कम ढाई-तीन सौ रूपये तो चाहिए ही। एक उपाय शागिर्द के दिमाग में आया, अम्मा के पास एक जोड़ी चांदी

की तोड़ियाँ रखी हैं, वे ज्यादा पहनती भी नही हैं, उनको बेचकर एक जोड़ कपडे के लिए तो पैसे मिल ही जायेंगे, जरुरी किताबें भी ले लेंगे। लेकिन क्या कपड़ों के लिए अम्मा की तोड़ियाँ बेचना उचित है ? अम्मा तो कुछ नही कहेंगी, वो तो तुरंत दे देंगी, लेकिन और लोग क्या कहेंगे। घर परिवार के लोगों को पता चलेगा तो वे शागिर्द को अच्छा तो बिलकुल नही कहेंगे। लेकिन शागिर्द को तो इस समय कामिनी का भूत सवार था, वह प्यार के लिए कुछ भी करने को तैयार था। प्रेम और युद्ध में सबकुछ जायज होता है।

अम्मा इस समय शागिर्द के साथ ही रहती हैं, वह अम्मा के पास गया और अपनी बात बताई कि उसे एक जोड़ कपडे सिलवाने हैं और कुछ किताबें भी लेनी हैं, एग्जाम की तैयारी करने के लिए दो महीने के लिए ट्यूशन भी बंद कर दिए हैं, इसलिए वहां से पैसे नहीं मिल पा रहे हैं, पैसे की समस्या है, समझ में नहीं आ रहा कि क्या करें क्या न करें। अम्मा ने तुरंत कह दिया कि उनके पास तोड़ियाँ रखी हैं, किसी काम की नहीं हैं, उनको ले जाकर बेच दो, तीन-चार सौ की बिक ही जाएँगी, उतने में तुम्हारा काम चल जायेगा। शागिर्द को मन में ख़ुशी हुई कि चलो उसका काम चल जायेगा, उसने तुरंत हामी भर दी। लेकिन शागिर्द ने अम्मा से एक वादा भी किया कि उसकी नौकरी लगने पर वह उनके लिए उससे भारी तोड़ियाँ बनवा देगा। अम्मा ने कहा, तब की तब देखी जाएगी, फ़िलहाल पहले तुम अपना काम चलाओ।

शागिर्द अम्मा से तोड़ियाँ ले लेता है, अगले दिन सुनार के पास जाकर उनको बेच देता है, तोड़ियों मे वजन था इसलिए वो चार सौ दस की बिक गईं। लेकिन शागिर्द को दुःख हो रहा था कि उसने कपड़ों के लिए अम्मा की तोड़ियाँ बेच डालीं। बाजार जाकर उसने एक जोड़ पैंट-शर्ट का कपडा ले लिया, ग्रे कलर का पैंट व हलकी छींटदार सफ़ेद शर्ट का कपडा अच्छा लग रहा है, उसी दिन उसने टेलर के यहाँ कपडे सिलने को डाल दिए, युनीवर्सिटी रोड जाकर अर्थशास्त्र की दो जरुरी किताबें भी ले आया, दीपक के लिए शर्ट का कपडा भी ले आया, उसके बाद साठ रूपये भी बच गए, तो उसने घर के लिए कुछ जरुरी सामान ले लिया। तीसरे दिन वह टेलर के

यहाँ से कपडे उठा लाया, मन ही मन वह खुश होता है, सबको कपडे पसंद आते हैं, सूरज भी कपडे देखकर खुश होता है, लेकिन शागिर्द को कामिनी की चिंता है, उसे कपडे पसंद आ गए तब तो सब स्वारथ हो जायेगा, वरना सब बेकार।

बारह



कल बारह जुलाई है, स्कीम के अनुसार कल सात से दस बी.ए.थर्ड ईयर का संस्कृत का फर्स्ट पेपर है। शाम के सात बजे हैं, शागिर्द का दिमाग पढ़ाई और कामिनी के बीच उलझा है, न तो पढ़ाई कर पा रहा है, न ही अपनी माशूका से मुलाकात कर पा रहा है। पता नही कल कामिनी का पेपर है भी या नही, इसी सोच-विचार में लगा है। दीपक भी रूम पर है, वह खाना बनाने कि तैयारी कर रहा है, तभी अचानक उधर से सूरज आ जाता है।

सूरज---नमस्कार शागिर्द भाई, नमस्कार दीपक भाई !

शागिर्द और दीपक---नमस्कार सूरज भाई !

सूरज शागिर्द की ओर मुखातिब होकर---और बताओ शागिर्द, क्या चल रहा है ?

शागिर्द---आओ यार सूरज ! छत पर चलते हैं, वहीं टहल-टहल कर बतियाते हैं।

दोनों दीवाल के सहारे छत पर चढ़ जाते हैं।

सूरज---यार शागिर्द ! कल तो बारह जुलाई है, कल कामिनी का संस्कृत का पेपर होगा ?

शागिर्द---हाँ यार सूरज भाई, उसी उधेड़-बुन में तो पड़ा हूँ, कल दस बजे उसका पेपर छूटेगा, कैसे क्या करें, समझ मे नही आ रहा है। मन बड़ी ऊहापोह मे है, यदि वह मिल गई तो कैसे उससे बात करूँगा, उसके रिक्शे

का पीछा कैसे करूँगा, डर लग रहा है। अभी हम दोनो के एग्जाम का समय है, ज्यादा डिस्टर्ब करना और डिस्टर्ब होना ठीक नही है, बस किसी तरह उसके घर का पता चल जाये, यही ख्वाहिश है।

सूरज---हाँ यार शागिर्द, लेकिन इसके लिए हिम्मत तो करनी पड़ेगी, कम से कम उसके घर का पता चल जाये, बाकी बाद में देखा जायेगा।

शागिर्द---सोच रहा हूँ कल पेपर छूटने के पहले मै युनिवर्सिटी गेट पर पहुँच जाऊं। यूनिवर्सिटी में छात्रों के प्रवेश और निकास हेतु एक ही मुख्य गेट है। यदि पेपर देकर गेट से निकलेगी तो उसे भरी भीड़ में भी पहचान लूंगा, उसका चेहरा तो मेरे दिलो-दिमाग में बसा हुआ है।

सूरज--- कैसे क्या करोगे ?

शागिर्द---यार, उसका पीछा करने के सिवाय और कोई चारा नहीं है। वह सम्भवतः रिक्शे से आती-जाती है, साइकिल से रिक्शे का पीछा आसानी से किया जा सकता है।

सूरज---मौका मिले तो बात करने कि कोशिश करना, मगर सबकुछ सम्हलकर। कल सुबह मुझे जल्दी निकलना पड़ेगा, इसलिए सुबह मुलाकात नहीं हो पायेगी, अभी मुझे कुछ होम वर्क भी करना है, अच्छा मै चलता हूँ, बेस्ट ऑफ़ लक फॉर टुमारो।

शागिर्द---थैंक्स सूरज भाई !

सूरज अपने कमरे चला जाता है। शागिर्द नीचे जाकर दीपक के साथ खाना खाता है। खाना खाने के बाद शागिर्द छत पर बिस्तर लगाता है, वह पढ़ने का प्रयास करता है लेकिन बार-बार उसका दिमाग कल कामिनी से होने वाली संभावित मुलाकात पर चला जाता है। यदि वह कल उसे मिल गई तो उसका दिल मसरूर हो जायेगा, उसकी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं होगा। फिलहाल तो उसे कल सुबह आठ बजे तैयार होना है और दस बजे के पहले उसे यूनिवर्सिटी गेट पर पहुंच जाना है। कल उसे हर हाल में

कामिनी का पीछा करना है और घर का पता लगाना है, यदि मौका मिला तो बात करने की भी पूरी कोशिश करेगा। यह सब सोचते-सोचते देर रात वह सो जाता है।

शागिर्द अपनी आदत के अनुसार सुबह लगभग सात बजे उठ जाता है, नहा-धो कर आठ बजे वह तैयार हो जाता है, तब तक दीपक खाना बना लेता है। शागिर्द खाना खाकर साढ़े आठ बजे घर से निकल जाता है,। यूनिवर्सिटी पहुँचने में लगभग एक घंटा लग जाता है। शागिर्द दीपक से कामिनी के सम्बन्ध में कोई बात शेयर नहीं करता है, क्योंकि वह छोटा भाई है, उससे इस तरह की बातें साझा करना ठीक नहीं है। वह यह बताकर निकल जाता है कि उसे यूनिवर्सिटी क्लास अटेंड करने जाना है अथवा ट्यूशन पढाने जाना है, दीपक कभी कुछ पूंछता भी नहीं कि भैया कहाँ जा रहे हो, कब तक आओगे। दीपक को शागिर्द का टाइम टेबल लगभग पता ही रहता है। खाना बनाने के बाद वह अपनी पढ़ाई करता रहता है, कभी-कभी वह अपने दोस्तों के साथ घूमने भी चला जाता है, या बड़े भाई-जयराम के घर भी चला जाता है।

शागिर्द लगभग साढ़े नौ बजे यूनिवर्सिटी गेट पर पहुँच जाता है। दस बजे संस्कृत का पेपर छूटेगा, कामिनी यदि एग्जाम देने आई होगी तो वह गेट से जरूर गुजरेगी। पेपर छूटने के बाद गेट तक आने में कम से कम सवा दस तो बज ही जायेंगे। शागिर्द को कामिनी का बेसब्री से इन्तजार है, उसका मन बहुत विचलित हो रहा है, वह उसका सामना कैसे करेगा, वह उससे कैसे बात कर पायेगा, बहुत डरा हुआ है, कामिनी गेट के बहार आएगी तब पता नहीं क्या होगा। शागिर्द अंदर से घबरा रहा है लेकिन बाहर से हिम्मत बांधने का प्रयास कर रहा है। यदि वह इस बार चूक गया तो घर पता करने का दोबारा मौका नहीं मिलेगा। शागिर्द करे भी तो क्या करे, लड़कियों का सामना करने मे उसकी जान जाती है, बात करने में जुबान लड़खड़ाती है।

लगभग दो महीने से शागिर्द आज के दिन का इंतजार कर रहा था। हुश्न की परी के दीदार के लिए उसकी आँखें तरस गई थीं। पढ़ाई के साथ-साथ कामिनी हमेशा उसके सिर पर सवार रहती है। सुबह उठकर वह रोज ध्यान लगाता है, प्राकृतिक ईश्वर से प्रार्थना भी करता है, लेकिन कामिनी को पाने के लिए वह कभी इल्तिजा नहीं करता, एक लड़की के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना कोई अच्छी बात है क्या ? वह ईश्वर से हमेशा यही कहता है कि जो आपको उचित लगे वही करें, कर्म करना मेरा काम है, फल देना आपका काम है, कर्मण्येव अधिकारमस्ते, मा फलेषु कदाचन। किसी चीज को पाने लिए प्रार्थना करने का मतलब स्वार्थी होना है, शागिर्द अपनी खुशी पाने के लिए कभी प्रार्थना नहीं सकता। वह इस बात के लिए प्रार्थना करता है कि ईश्वर उसे अच्छा रास्ता दिखाए, वह कभी कोई गलत काम न करे। कामिनी को पाने के लिए उसका दिल तो हमेशा बेकरार रहता है, एक बार वह उसका आलिंगन कर लेगा तो उसका दर्द-ए-दिल ठीक हो जायेगा, दिल को राहत और चैन मिल जाएगा, असीम शांति मिल जाएगी। लेकिन अपने स्वार्थ के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना वह उचित नहीं समझता है। शागिर्द को अपने दिल पर, अपने प्यार पर गर्व है और अपनी इल्मीयात पर पूरा विश्वाश है। वह अपने प्यार को पाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेगा, अपने सीमित साधनो से वह असीमित प्रयास करेगा, बाकी सब ऊपर वाले के हांथ में है। प्यार कोई वस्तु तो नहीं कि उसे उठाकर रख लो, या बाजार से खरीदकर ले आओ, यह तो एक संयोग है, पता नहीं कब कहाँ किससे प्यार हो जाये। मन पर तो नियंत्रण किया जा सकता है, लेकिन दिल पर नहीं। शायद, इसीलिए कहा गया है कि दिल तो आवारा होता है, पता नहीं कब-किससे-कहां टकरा जाये।

शागिर्द यूनिवर्सिटी गेट के एक किनारे खड़ा है, वह इस एंगिल पर खड़ा है कि गेट के बाहर व गेट के अंदर पचास मीटर तक आते-जाते सभी स्टूडेंट्स पर नजर रख सके, इस समय शागिर्द की नजर किसी बगुले से कम पैनी नहीं है। दस बज चुके है, पेपर समाप्त हो चुका होगा, अब किसी भी समय उसकी जाने-जहां गेट के बाहर आ सकती है। शागिर्द के सीने

की धड़कनें तेज हो गई हैं, यदि वह अकेली होगी तो वह उससे बात करने का प्रयास करेगा, लेकिन वह कैसे बात कर पायेगा, हिम्मत बांधकर कुछ बोलेगा भी तो पता नहीं उसकी तरफ से क्या जबाव मिलेगा, घबराहट मे मुँह से कहीं कुछ गलत शब्द न निकल जाए, जिससे अर्थ का अनर्थ हो जाये। यदि उसके साथ कोई और लड़की होगी तब तो और मुश्किल होगी। फिलहाल कुछ भी हो, बात हो या न हो, लेकिन उसके घर का पता लगाना जरूरी है। शागिर्द गेट के अंदर की ओर टकटकी लगाए देख रहा है, गेट के बाहर खड़े रिक्शे वालों की तरफ भी नजर रखे हुए है, शागिर्द की नजर गेट से बाहर निकलने वाली प्रत्येक लड़की के चेहरे की तरफ है, कामिनी गेट के बाहर आएगी तो शागिर्द की नजरों से बच न पायेगी।

सवा दस बज चुके हैं, अभी तक तो वह दिखाई नहीं पड़ी है। शागिर्द के मन में शंका उत्पन्न हो रही है, मन में कई सवाल उठ रहे हैं; कहीं ऐसा तो नहीं कि उसका संस्कृत विषय ही न रहा हो, या फिर पेपर देकर अपनी सहेलियों के साथ अंदर कैंपस मे ही कहीं बैठकर मस्ती कर रही हो, मै यहाँ चिलचिलाती धूप मे कब तक खड़ा रहूँगा, कहीं ऐसा तो नहीं कि वह पीछे वाले छोटे गेट से निकल गई हो। शागिर्द की घबराहट बढ़ती जा रही है, यदि आज वह नही मिली तो पता नहीं फिर कब मिल पायेगी, कैसे घर का पता चल पायेगा।

शागिर्द का ध्यान एक पल के लिए अपनी पर्सनैलिटी पर चला जाता है, आज उसने नया पैंट-शर्ट पहन रखा है, ग्रे कलर का पैंट, सफ़ेद-नीली छींटदार व धारीदार शर्ट उसके ऊपर खूब फब रही है। वह लक्ष्य स्टार के सफ़ेद जूते पहने हुए है, अपनी औकात से हिसाब से वह बहुत बन-ठन के आया है। क्रीम पाउडर लगाने की उसकी हैसियत नही, लेकिन उसने क्लीन शेव कर रखी है जिससे उसका चेहरा चमक रहा है। उसके मुलायम-काले बाल अच्छे लग रहे हैं, उसका लम्बा चेहरा, लम्बी-सुन्दर नाक, लम्बे-सुडौल शरीर पर अच्छी लग रही है। तीन वर्ष पहले शागिर्द की तंदुरुस्ती अच्छी थी, वर्तमान में परेशानियों के कारण वह दुबला हो गया है।

शागिर्द एक किनारे खड़ा ये सब सोच रहा था कि अचानक उसकी नजर तीन लड़कियों के झुण्ड पर पड़ी, ---वो ---वो --- देखो---वो आ रही है, मै उसे पहचान गया, मेरी नजर गलत नहीं हो सकती, वो वही कामिनी है, अपनी सहेलियों के साथ बातें करती हुई गेट की तरफ आ रही है, तीन लड़कियों के ग्रुप मे बीच वाली लड़की ही कामिनी है, वह आहिस्ता-आहिस्ता गेट के बाहर आ रही है, अब वह लड़कियों से अलग होकर गेट के किनारे खड़े रिक्शे की तरफ जा रही है। शागिर्द का दिल बहुत तेज धड़कने लगा है, अपनी हुस्नआरा को देखते ही उसके होश फाख्ता हो गये, वह बेसुध सा हो जाता है, उसकी सोच और विवेक पर जैसे ताला लग जाता है, वह यह भी भूल जाता है कि उसे क्या करना चाहिए, क्या नही। सहेलियों से अलग होकर रिक्शे वाले से बात करने के बीच लगभग दो मिनट का समय लगा होगा, यदि शागिर्द का दिमाग सक्रिय होता तो वह कामिनी से बात करने की कोशिश कर सकता था, लेकिन हुश्न की परी को देखकर वह हुस्न परस्त हो जाता है, वह यह भूल जाता है कि उसे क्या करना चाहिए, क्या नहीं। लेकिन उसने अपने पैर साइकिल के पैडल पर रख लिए हैं और कामिनी के रिक्शे का पीछा करने को तैयार हो गया है। रिक्शे वाला युनिवर्सिटी रोड की तरफ चल दिया है। गेट के सामने एक छोटा सा तिकोना पार्क है, जिसकी दूसरी तरफ से होकर शागिर्द रिक्शे वाले के आगे निकल जाता है। एक बार उसने पीछे मुड़कर रिक्शे की तरफ देखा, रिक्शे में ऊपर छतरी थी, कामिनी का केवल चांद-सा मुखड़ा ही दिख रहा था, चांदी से चमकते चेहरे पर काला-काला चश्मा युवकों पर कहर ढा रहा था; आज पता नहीं कितने लोगों पर बिजली गिरेगी। जिस तरह सूरज की तेज चमक के आगे आँखें टिक नही पातीं, उसी प्रकार शागिर्द अपनी माशूका के दिलकश-हसीन चेहरे को बार-बार देखने की हिम्मत नहीं कर पाता है। शागिर्द को लगा कि आगे-आगे चलना ठीक नही है, रिक्शा किधर जा रहा है यह देखने के लिए उसे बार-बार पीछे मुड़कर देखना पड़ेगा, कामिनी समझ जाएगी कि यह लड़का उसका पीछा कर रहा है, इसलिए वह सड़क के किनारे खड़ा हो गया और फिर रिक्शे के पीछे-पीछे चलने लगा।

रिक्शा अब युनिवर्सिटी रोड पार कर चुका है, रिक्शे का पीछा करते हुए शागिर्द के दिमाग में ढेर सारे ख़यालात आ रहे हैं, आज के दिन के लिए उसने दो महीने इन्तजार किया है, अपनी प्रियतमा के लिए उसने पढाई का बहुत नुकसान किया है, एग्जाम के समय का एक-एक मिनट उसके लिए बहुत कीमती है, लेकिन इतनी खूबसूरत लड़की, प्रकृति का इतना अनमोल तोहफा, यदि उसे मिल जाये तो सम्पूर्ण जीवन के एक-एक पल की कीमत वसूल हो जाएगी। कभी-कभी उसका मन करता है कि रिक्शे को रुकवाकर वह दो पल कामिनी से बात करे, लेकिन कहीं मामला बिगड़ न जाये यही सोचकर रुक जाता है, पीछे-पीछे चलकर कम से कम उसके घर का पता तो चल ही जायेगा। यद्यपि कि शागिर्द उसके घर तक न जाकर कुछ दूर पहले ही रुक जायेगा, क्योंकि घर तक जाने पर कहीं उसके घर वाले मिल गए तो उसकी और मेरी दोनों की खटिया खड़ी हो जाएगी, इसीलिए वह रिक्शे से लगभग सौ-पचास मीटर पीछे चल रहा है।

रिक्शा कटरा पार कर चुका है और अब नाजरेथ अस्पताल की तरफ जा रहा है। शागिर्द यह अनुमान नहीं लगा पा रहा है कि रिक्शा किधर जायेगा, रवि ने तो बताया था वह शायद ट्रांसपोर्ट नगर रहती है, लेकिन रिक्शा तो शहर की तरफ जा रहा है, ट्रांपोर्ट नगर जाने के लिए मेयोहाल चौराहे से दाहिने मुड़ना पड़ता है, लेकिन यह तो सीधे जा रहा है। इसी चक्कर में शागिर्द एक मिनट के लिए आगे हो गया था, अब फिर से पीछे हो गया है, उसे डर लग रहा है कि कहीं कामिनी उसे देखकर पहचान न जाये, क्योंकि शागिर्द क्लास में एक बार कामिनी के साथ हरकत कर चुका था, दो बार आगे-पीछे होने में हो सकता है कामिनी ने पीछे मुड़कर या सामने से ही देख लिया हो। पहचान जाये तो पहचान जाये,अब शागिर्द उसके घर तक तो जायेगा ही। शागिर्द का बार-बार मन करता है कि वह रिक्शा रोककर कामिनी से बात करने की कोशिश करे, लेकिन पहले तो उसकी हिम्मत नहीं पड़ती, फिर वह यह सोचकर रुक जाता है कि घर तक पहुंचना जरुरी है। इसलिए वह रास्ते में रिक्शा रोकने का प्रयास नहीं करेगा, नहीं तो किया-धरा सब बेकार जायेगा। उसने निश्चय कर लिया है कि वह सिर्फ पीछा

करेगा और कामिनी के घर का पता लगाएगा, घर के बाहर रिक्शा रुकते ही वह पीछे मुड़कर लौट आएगा, उसे सिर्फ दूर से ही घर देखना है।

रिक्शा सिविल लाइन व जानसेनगंज चौराहा पार करते हुए चौक पहुँच गया है, अब चौक पार करके अतरसुइया थाने की तरफ जा रहा है। शागिर्द पीछे-पीछे साइकिल से चल रहा है, जैसे-जैसे रिक्शा आगे बढ़ रहा है शागिर्द के दिल की धड़कनें बढ़ती जा रही हैं, पता नहीं कहाँ तक जाएँगी ये रिक्शे वाली मेम साहेब। शागिर्द ने साइकिल का पैडल मारते हुए एक गहरी सांस ली,और मनोबल हाई किया, चलो चलने दो, देखते हैं कहाँ तक जायेगा ये रिक्शे वाला, जो होगा देखा जायेगा। रिक्शे वाला खत्री पाठशाला पार कर दाएं मुड़ गया, फिर बाएं मुड़ गया, अब तो करेली मोहल्ला आ गया, रिक्शा चढ़ाई चढ़ रहा है, शागिर्द की बेचैनी और बढ़ती जा रही है, बेचैनी में डर भी शामिल हो गया है, पता नहीं आगे क्या होगा, कहीं रास्ते में उसके घर वाले न मिल जाएँ और शागिर्द से पूंछने लगें कि तुम कौन हो, कहाँ से आये हो, कहाँ जा रहे हो, वगैरह-वगैरह।

चढ़ाई चढ़ने के बाद कुछ दूर चलने पर ही रिक्शा अचनाक रुक गया, शागिर्द लगभग पचास मीटर की दूरी पर था, उसका दिमाग कहीं और था, वह देख ही नहीं पाया कि कामिनी रिक्शे से उतरकर किस पल में किधर चली गई, वह शायद अपने घर से दो-तीन घर पहले ही उतर गई और जल्दी से अपने घर में प्रवेश कर गई, इसीलिए शागिर्द उसे देख नहीं पाया। रिक्शे वाले के पास एक व्यक्ति आकर खड़ा हो गया, उसने शायद शागिर्द को भी देख लिया है। उसकी उम्र लगभग तीस वर्ष, सांवला शरीर, मोटी-मोटी मूछे और बिखरे हुए बाल थे। शायद उसे देखकर ही कामिनी थोड़ा पहले उतर गई हो, शायद वह उसके घर का ही कोई सदस्य हो, भाई भी हो सकता है। शागिर्द ने सोचा कि यदि वह पीछे मुड़कर चला जायेगा तो वह व्यक्ति उस पर शक करेगा, इसलिए वह भी रिक्शे वाले के पास जाकर खड़ा हो गया, उस व्यक्ति से नमस्ते किया और बहाना बनाकर बोला कि वह कामिनी का दोस्त है, उसे कामिनी से इकोनॉमिक्स के नोट्स चाहिए।

व्यक्ति---आपने कामिनी से बात की ?

शागिर्द---नहीं।

व्यक्ति---तो इसमें मै क्या कर सकता हूँ , आप दोस्त हो तो स्वयं बात कर लो।

शागिर्द---ठीक है भाई साहेब, मै क्लास में ही कामिनी से बात कर लूंगा।

ऐसा कहकर शागिर्द पीछे मुड़कर वहां से चल दिया, कुछ दूर आगे जाकर उसने गहरी सांस ली, जान बची लाखों पाए, लौट के बुद्धू घर को आये।

तेरह



शागिर्द मायूस होकर करेली मोहल्ले से लौटकर सीधे कल्याणी देवी मंदिर के बाहर चबूतरे पर जाकर बैठ जाता है, उसका शरीर, उसका दिमाग, उसका मन सब शिथिल पड़ गया है, अत्यधिक थकान महसूस हो रही है। जिसके लिए वह इतने दिनों से इन्तजार कर रहा था, उससे न तो बात हो सकी, न ही उसके घर का सही-सही पता ही चल पाया। यद्यपि कि वह कामिनी के घर के करीब तक पहुँच ही गया है, फिर भी वह अपनी आधी सफलता से संतुष्ट नही है। कामिनी जब समझ ही गई थी कि शागिर्द उसका पीछ कर रहा है, तो उसे कुछ सोचना चाहिए, उसे रास्ते मे कहीं रिक्शा रुकवाकर उससे बात कर लेनी चाहिए, अच्छा-बुरा जो भी कहना था कह देना चाहिए, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। शागिर्द समझे तो क्या समझे, वह उसे प्यार करती है या नहीं। शागिर्द का दिल इतना गमगीन है कि उसे घर जाने का मन नहीं कर रहा है, लेकिन कर भी क्या सकता है, मंदिर के पास कब तक बैठा रहेगा, पेड़ की छाया में गुमसुम-शांत बैठने से उसके दिल को थोड़ा सुकून तो मिल रहा है, लेकिन दिल में अनिश्चितता की लहर चल रही है, कामिनी एक बार उससे नजरें-इनायत कर लेती, दो बातें प्यार से कर लेती तो उसके दिल को ठंडक मिल जाती, सारी थकान मिट जाती। अत्यधिक दुःख-ज्वर से जकड़ने के कारण जब दिल और दिमाग किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है, तो व्यक्ति विवेकहीन हो जाता है। इसी विवेकहीनता की स्थति में शागिर्द एकाएक अपनी साइकिल उठाता है और अपने घर की ओर चल देता है। दोपहर लगभग एक बजे घर पहुँचता है और कपडे उतारकर चुपचाप तखत पर लेट जाता है। कुछ देर बाद वह

उठकर हांथ-मुंह धोता है और दीपक से पूंछता है कि कुछ खाना रखा है क्या ?

दीपक---हाँ भैया, थोड़ी शब्जी और दो रोटी रखी है, रोटी और बना दें क्या ?

शागिर्द---नहीं, दो रोटी ही खाऊंगा, फिर बाद में शाम को खाऊंगा।

ऐसा कहकर शागिर्द हीटर में शब्जी-रोटी गर्म करता है और खाना खाता है।

शागिर्द खाना खाकर फिर तखत पर लेट जाता है। उसका मन-मष्तिस्क बेकस है। उसे बहुत उम्मीद थी कि आज वह कुछ न कुछ हासिल करके रहेगा, लेकिन उसकी किस्मत उसका साथ नहीं दे पा रही है, पता नहीं वह उसे प्यार करती है कि नहीं, यदि उसके दिल में जरा भी जगह होती तो उसे कुछ तो इजहार करना चाहिए, कुछ तो इशारा करना चाहिए। शागिर्द इसी कशमकश में पड़ा था, तब तक उधर से सूरज आ गया --

सूरज---नमस्कार शागिर्द भाई !

शागिर्द---नमस्कार सूरज भाई ,

सूरज शागिर्द के चेहरे की तरफ देखते हुए---क्या बात है शागिर्द, काफी उदास लग रहे हो ?

शागिर्द---हाँ यार, क्या बताएं, आज मै कामिनी के रिक्शे का पीछा करते-करते उसके घर तक पहुँच गया।

सूरज आश्चर्य से---फिर क्या हुआ ? कहाँ रहती है वो ?

शागिर्द---उसका घर तो मीरापुर मोहल्ले मे है, लेकिन मै उसका घर नहीं देख पाया, क्योंकि वह अपने घर के संभवतः दो-तीन घर पहले ही उतर गई थी, मै इतनी घबराहट में था कि देख ही नहीं पाया, कि वह किस पल

किधर चली गई, लेकिन इतना तो कन्फर्म है कि जहाँ वह उत्तरी थी उसका घर वहीं आस-पास में ही है। एक व्यक्ति, जो संभवतः उसका भाई ही था, रिक्शे वाले के पास खड़ा हो गया, मेरा ध्यान उसी की तरफ चला गया, मैंने उससे दुआ-सलाम की, ताकि वह मुझ पर शक न करे, फिर मै वहां से चला आया।

सूरज---कामिनी से बात नहीं हो पाई ?

शागिर्द अफ़सोस व्यक्त करते हुए---नहीं यार !

सूरज---यार शागिर्द, तब तो वास्तव में बड़े दुःख की बात है, पता नहीं, वह व्यक्ति उसका भाई ही न हो।

शागिर्द---हाँ यार, उसकी बातचीत से तो यही लग रहा था, चाहे सगा भाई हो या चचेरा।

सूरज---यार शागिर्द, तुम्हे उसके घर नहीं जाना चाहिए, युनिवर्सिटी कैंपस में या कहीं रास्ते में बात करने का प्रयास करना चाहिए।

शागिर्द---यार युनिवर्सिटी कैंपस मे वह अपनी सहेलियों के साथ मे ही थी, जब अलग हुई तो तुरंत रिक्शे में बैठ गई, बात करने का मौका ही नहीं मिला। गेट के आस-पास काफी भीड़ भी थी, बात करने में डर लग रहा था।

सूरज---तो रास्ते में कहीं बात करने का प्रयास करना चाहिए था।

शागिर्द---यार, रास्ते में रिक्शा रुकवाने में डर लग रहा था, पता नहीं वह मुझसे बात करती कि नहीं, कहीं कुछ उल्टा-सीधा बोलने लगती, तेज आवाज में कुछ कहने लगती तो लोग इकठ्ठा हो जाते और मेरी धुन्न-पूजा कर देते। इसीलिए रास्ते में रिक्शा रुकवाने की हिम्मत नहीं पड़ी, फिर यह भी सोच रहा था कि रिक्शे का पीछा करके कम से कम उसके घर का पता तब भी चल जायेगा।

सूरज मजाकिया अंदाज में मुस्कुराते हुए--समस्या तो बड़ी जटिल है भाई, पता नहीं हमारी भाभी हमारे भाई के बारे में क्या सोचती होंगी, अरे कुछ तो तरस खाना चाहिए भाई की बेकसी पर !

शागिर्द---यार, यहाँ हालत खराब हो रही है और तुमको मजाक की पड़ी है।

सूरज पुनः चुटकी लेते हुए---पहले हालत ख़राब होगी, तभी तो बाद मे आकर भाभी जी आपकी हालत सही करेंगी।

शागिर्द गहरी सांस लेते हुए---यार सूरज भाई, काश ! आपकी बात सही साबित हो जाये।

सूरज संजीदगी से सोचते हुए---यह सपना जरूर सच होगा, दिल से चाहने वालों को मंजिल जरूर मिलती है।

ऐसा कहकर सूरज अपने रूम चला जाता है।

शाम का खाना खाकर शागिर्द छत पर बिस्तर लगाकर लेट जाता है। शागिर्द के चेहरे की हवाइयां उडी हुई हैं, मन अशांत है, दिल में गहरी हलचल है, दिमाग किसी निष्कर्ष पर पहुँचने में असमर्थ है। कामिनी से बात नहीं हो पाई, इस बात की बहुत तकलीफ है लेकिन कामिनी के भाई ने शागिर्द से कुछ गलत नहीं बोला इस बात की थोड़ी तसल्ली भी है। यदि रिक्शे वाला घर तक चला जाता, या कामिनी घर पर जाकर ही उतरती तो शायद शागिर्द भी वहां पहुँच जाता और वहीं पर कामिनी का भाई मिल जाता, तब उसकी तो शामत आती ही, शागिर्द का क्या हाल होता, पता नहीं। कामिनी अपने घर के पहले उतर गई, शायद उसने अच्छा ही किया। ऐसा करके उसने शायद अपने को बचाया और शागिर्द को भी बचाया, लेकिन जब उसे पता चल ही गया कि शागिर्द उसका पीछा कर रहा है तो उसने रिक्शा रुकवाकर रास्ते में ही उससे बात क्यों नहीं कर ली, वह रास्ते में उतर कर उसे डांट देती या फिर प्यार से समझा देती तो शागिर्द उसकी बात को जरूर मान लेता और वापस चला जाता। परन्तु शायद किस्मत को

यही मंजूर था। फिलहाल जो हुआ, अच्छा हुआ, शागिर्द उसके घर के करीब पहुँच गया है, अब जब मन करेगा वह उसके घर का पता लगा लेगा। इसीलिए शायद जो होता है, अच्छा ही होता है।

शागिर्द किसी तरह अपने मन को समझा बुझा कर शांत करता है, कामिनी ने बात नहीं की, शायद उसकी कुछ मज़बूरी रही होगी, उसे क्या पता कि जो लड़का उसका पीछा कर रहा है उसका मकसद क्या है; उसने सोचा होगा कि जो लड़का पीछा कर रहा है, शायद उसका घर भी उसके घर के आसपास ही होगा, लेकिन जब वह उसके घर के करीब पहुँच गया तब घर से पहले उतरना उसकी मजबूरी हो गई, नहीं तो दोनों की आफत आ जाती। शायद यही सोचकर उसने ऐसा किया, फ़िलहाल उसने जो किया अच्छा किया, जो होगा आगे देखा जायेगा, अभी तो पढ़ाई करनी है।

इकोनॉमिक्स के दोनों पपेर होने बाक़ी हैं, तीन हफ्ते का समय बचा है। शागिर्द की पढ़ाई की ऐसी-तैसी हो रही है, जब भी वह पढाई शुरू करता है तो उसके दिमाग मे कामिनी जी सवार हो जाती हैं, वह कई घंटे पढ़ाई तो करता है लेकिन उसके दिमाग में कुछ याद नहीं रहता, क्योंकि उसके दिलो-दिमाग में तो कामिनी जी घुसी बैठी हैं। कामिनी को दिलो दिमाग से बाहर निकालने का कोई रास्ता भी तो नहीं है। शागिर्द अपने वर्तमान के टेंशन को भविष्य पर टालने का प्रयास कर रहा है, तभी उसको नींद आ जाती है, वह सो जाता है।

शागिर्द सुबह साढ़े सात बजे सोकर उठता है। कल की अपेक्षा आज उसका दिमाग कुछ हल्का है, वह सोच रहा है कि कुछ दिन के लिए कामिनी को भूल जाऊं और किताबों को गले लगा लूँ। गरीब लोगों के लिए पढ़ाई ही भविष्य है, पढ़ाई नहीं कर पाए तो मजदूरी के सिवाय कोई रोजगार नहीं मिलेगा। शागिर्द अपने दिल में पत्थर रख कर कुछ दिन के लिए कामिनी को भूलने का प्रयास करता है और पढ़ाई करने का प्रयास करता है। कामिनी का भी इकोनॉमिक्स सब्जेक्ट है, इसलिए उसको भी डिस्टर्ब नहीं करना है, मेरी शरारतों की वजह से उसकी पढ़ाई भी प्रभावित

हो रही होगी, अब जो कुछ भी करना है वह एग्जाम के बाद ही किया जायेगा।

शागिर्द को दीपक की पढाई की भी चिंता रहती है, वह ग्यारहवीं पास करके बारहवीं में आ गया है। शागिर्द उसको ज्यादा समय नहीं दे पाता है, लेकिन कभी-कभी उसको गाइड करता रहता है। दीपक गांव में दिशाहीन हो गया था, उसकी पढ़ाई भी काफी कमजोर हो गई थी, लेकिन यहाँ आकर उसकी पढ़ाई लगभग ठीक चल रही है। शागिर्द के पास पहले दो काम थे- एक ट्यूशन पढ़ाना, दूसरा अपनी पढ़ाई करना; लेकिन अब तीसरा काम भी जुड़ गया है, वह है कामिनी जी के चक्कर से निपटना। शागिर्द कामिनी को भूलकर पढ़ाई करने का प्रयास कर रहा है, इसीलिए वह अब अपने दोस्तों से भी बात करता रहता है, जिससे कि उसका दिमाग कामिनी की तरफ ज्यादा न जाये। शागिर्द अपनी पढ़ाई शुरू करने से पहले अभी अपने मन को बहलाना चाहता है। मक्खन से बहुत दिनों से बात नहीं हो पाई है, इसलिए उसने मक्खन के रूम पर जाने का निश्चय किया है, थोड़ी बैठकी हो जाएगी तो उसका मूड हल्का हो जायेगा। शागिर्द दीवाल लांघकर उधर जाता है, सूरज खाना बना रहा है और मक्खन किताबें पलट रहा है।

शागिर्द---नमस्कार मक्खन भाई, नमस्कार सूरज भाई !

मक्खन और सूरज एक साथ---नमस्कार भाई शागिर्द।

मक्खन---धन्यवाद शागिर्द भाई, कम से कम आपको फुर्सत तो मिली, आप तो ईद का चाँद हो गए हो, पता नहीं आप कितना बिजी रहते हो, कभी-कभी तो दर्शन दे दिया करो, मै आपके रूम पर जाने की सोचता हूँ तो पता चलता है कि आप या तो होते नहीं हो या फिर पढ़ाई में बिजी रहते हो, मै संकोचवश आता नहीं हूँ।

शागिर्द---ऐसी कोई बात नहीं है मक्खन भाई, बस यों ही बिजी हो जाता हूँ। आजकल क्लासेज तो बंद ही हैं, केवल ट्यूशन पढाने जाता हूँ, बाकी समय अपनी पढ़ाई करने का प्रयास करता हूँ।

मक्खन---हाँ यार, आपके पास तो जिम्मेदारी अधिक है, ट्यूशन नहीं पढ़ाओगे तो खर्च कैसे चलेगा।

शागिर्द---और बताओ मक्खन भाई, आपकी पढ़ाई कैसी चल रही है।

मक्खन---यार शागिर्द भाई, आपको तो पता ही है कि हिंदी के पेपर हो चुके हैं, अब केवल एन्सिएंट हिस्ट्री बची है, उसी की तैयारी में जुटा हूँ, सोचता हूँ कुछ ठीक-ठाक नंबर आ जाएँ तो अच्छी बात है, वरना पास तो ही जाऊंगा।

शागिर्द, सूरज और मक्खन के बीच लगभग एक घंटे गपशप हो जाती है, आज ढेर सारी बातें हो गईं, लेकिन शागिर्द कामिनी के बारे में मक्खन के सामने ज्यादा बात नहीं करता है, क्योंकि मक्खन बाद में उन बातों का मजाक उडाता है, कटाक्ष करने की तो उसकी आदत है। तब तक सूरज खाना बना लेता है। मक्खन ने कहा---शागिर्द, अब तो खाना यहीं खाना पड़ेगा, शागिर्द सबके साथ वहीं खाना खा लेता है। दीपक ने भी खाना बना लिया होगा, अब उसे शाम को खाया जायेगा। खाना खाकर शागिर्द अपने रूम चला जाता है, अब पढ़ाई की शुरुआत करनी है।

शागिर्द और कामिनी दोनों का अर्थशास्त्र सब्जेक्ट है, एक साथ एग्जाम भी देना है, इकोनॉमिक्स का सेकंड पेपर आखिरी पेपर है जो ग्यारह अगस्त को होना है। शागिर्द ने अब प्रण कर लिया है कि जब तक एग्जाम समाप्त नहीं हो जाते तब तक न तो डिस्टर्ब होना है और न ही डिस्टर्ब करना है, उसे अब सिर्फ पढ़ाई में मन लगाना है; बेगम साहिबा की जब याद आएगी तो वह उनको तीन सप्ताह के लिए टालने का प्रयास करेगा। कामिनी के लिए उसके दिल में जो कसक है वह उसे ग्यारह अगस्त तक दबाये रखेगा, दिल में पत्थर रख लेगा।

चौदह



कल ग्यारह अगस्त है, इंडियन इकोनॉमी का सेकंड एवं आखिरी पेपर कल होना है। बाक़ी पेपर तो ठीक हुए हैं, ये भी अच्छा हो जाये तो ठीक है। कल पेपर समाप्त होते ही तुरंत कामिनी से बात करने की कोशिश करना है। एग्जाम की तैयारी तो काफी अच्छी हो गई है, शागिर्द ने तो बहुत से डाटा याद कर लिए हैं। लेकिन मेरी दिलरुबा से कल कैसे बात हो पाएगी, शागिर्द इसी चिंतन में पड़ा है। शायद एक ही उपाय है कि पेपर छूटने के बाद शागिर्द फिर से कामिनी के रिक्शे का पीछा करे और रास्ते में कहीं रिक्शा रुकवाकर बात करने की कोशिश करे।

आज ग्यारह अगस्त है, पेपर की टाइमिंग दस से एक बजे तक है। आज आखिरी पेपर के बाद लगभग दो महीने यूनिवर्सिटी बंद रहेगी, टीचर लोग कापियां जाचेंगे, फिर रिजल्ट तैयार करेंगे। दो महीने तक मेरी सपनों की रानी से मुलाकात नहीं हो पायेगी। इसके बाद एम.ए. में एडमिशन शुरू होंगे, तब भी मुलाकात की कोई गारंटी नही, इसलिए आज ही प्रयास करना है। लेकिन एक बजे तक बिलकुल भी डिस्टर्ब नहीं होना है, एक बजते ही तुरंत एक्टिव होना पड़ेगा। आज हर हाल में उससे बात करने का प्रयत्न करना है, क्योंकि फिर कब क्या होगा, मुलाकात हो भी पायेगी या नहीं, कुछ पता नहीं। कहीं ऐसा न हो कि एक बजते ही अथवा एक बजने के कुछ मिनट पहले ही वह पेपर समाप्त करके चलती बने, इसके लिए शागिर्द को भी जल्दी करना पड़ेगा। वह भी कुछ मिनट पहले ही पेपर समाप्त करके क्लासरूम से निकल लेगा, किसी भी क्लासमेट से बात नहीं करेगा, नहीं तो सब गड़बड़ हो जायेगा, उसे तुरंत ही मेन गेट पर पहुंचना होगा।

एक बजने वाला है, शागिर्द का दिलो-दिमाग उसकी जाने मन कामिनी की तरफ लगा है, शागिर्द को अब शीघ्रता करनी पड़ेगी, वह आखिरी क्वेश्चन जल्दी से पूरा करने का प्रयास कर रहा है। घंटा बजते ही शागिर्द कॉपी जमा कर देता है, एक पल भी रुके बिना वह साइकिल उठाता है और गेट के बाहर पहुँच जाता है, वह न तो किसी सहपाठी से नजर मिलाता है, न ही पार्क के पास एक भी पल के लिए ठहरता है। मेन गेट पर सन्नाटा देखकर वह लौट आता है और पार्क के किनारे ऐसे खड़ा होता है कि वह सबको देख सके और उसको कोई न देख सके, वह अपने साथियों की नजरों से भी बचने का प्रयास करता है। पीछे वाले कक्ष से निकलकर पार्क की ओर आने वाले स्टूडेंट्स का झुण्ड दिखाई दे रहा है, उनके पीछे सबसे लास्ट में तीन लड़कियों का ग्रुप आता दिखाई दे रहा है, जिन पर शागिर्द की नजर पड़ती है। उनमे से शायद दाएं किनारे वाली लड़की कामिनी है, लेकिन अभी स्पष्ट समझ में नहीं आ रहा है। वे तीनों लड़कियां आपस में बातें करती हुई आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ती हैं, कभी-कभी कुछ पल के लिए रुक भी जाती है, शागिर्द की नजर उन तीनो लड़कियों पर है, साथ ही वह अपने-आपको छुपाने का भी प्रयास करता है। उन लड़कियों का झुंड थोड़ा और आगे बढ़ता है, अब स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि दाएं साइड वाली लड़की कामिनी ही है, क्योकि उसकी लम्बाई अन्य दोनों लड़कियों से ज्यादा है। वह रानी कलर का फ्राक शूट पहने हुए है, थोड़ा और निकट आने पर शागिर्द को तस्दीक हो गया कि वह हुश्न की मल्लिका कामिनी ही है, उसका चांद-सा मुखड़ा दूर से ही पहचान में आ जाता है।

अपनी मेहबूबा को देखकर शागिर्द के दिल की धड़कनें तेज हो गईं हैं, आज वह उससे बात करके ही रहेगा, चाहे कुछ भी हो जाये। वह कई लड़कियों के बीच मे है, आस-पास बहुत से लड़के भी खड़े है, सबके सामने बात करने की उसकी हिम्मत नहीं, जब वह अकेली होगी तब बात करने का साहस करेगा। आज एग्जाम का आखिरी दिन है, इसलिए सब लड़के-लड़कियां एक दूसरे से ढेर सारी बातें कर रहे हैं, इसके बाद कब, किसकी,

कहाँ मुलाकात होगी, कुछ पता नहीं। कामिनी भी अपनी दो सहेलियों के साथ हंस-हंस के बातें कर रही है, उसके चेहरे की हंसी को देख कर ऐसा लगता है जैसे गुलशन मे बहार आ गई हो। शागिर्द पार्क के किनारे साइड में खड़ा है, शायद कामिनी ने उसे देख लिया है, अब वह हंस हंस के बातें नहीं कर रही है। अब शागिर्द का दिल और तेज गति से धकधक करने लगा है। शागिर्द की स्थति बहुत ही कारुणिक हो गई है, बेचारा करे तो क्या करे, कामिनी उसका दिल लेकर अपनी मस्ती में मस्त है, शागिर्द बिना दिल के बेचैन तडपता फिर रहा है।

मरता क्या न करता, विवश होकर शागिर्द ने हिम्मत बांध ली है, उसने दृढ़ निश्चय कर लिया है कि आज कुछ भी हो जाये उसे कामिनी से बात करनी है, यदि बात नहीं हो पाई तो वह आज फिर से कामिनी के रिक्शे का पीछा करेगा। शागिर्द कामिनी के लिए एक खत भी लिखकर लाया है, बात नहीं हो पायी तो वह रिक्शे में ही उसे दे देगा। उस पत्र में उसने वह सब लिखने का प्रयास किया है जो वह मुलाकात में कहना चाहता है- कामिनी ! मै तुम्हे अपनी जान से ज्यादा प्यार करता हूँ, यदि तुम मुझे नहीं मिली तो मै जी नही पाउँगा, मरने के सिवाय मेरे पास और कोई चार नहीं, यदि आप चाहो तो मेरी जिंदगी बचा सकती हो। यदि मुझसे जाने अनजाने में कोई गलती हो गई हो तो मुझे माफ़ कर देना।

कामिनी का ग्रुप धीरे-धीरे युनिवर्सिटी के मुख्य गेट की तरफ बढ़ रहा है, शागिर्द अभी वहीं खड़ा सब देख रहा है, लेकिन कामिनी ने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा, शायद उसके दिल मे शागिर्द के प्रति कोई चाहत नहीं है। शागिर्द कामिनी से अधिक दूरी नहीं बना सकता, कहीं ऐसा न हो कि कामिनी निकल जाये और वह देख ही न पाए, सारी प्लानिंग धरी की धरी रह जाएगी। शागिर्द अपनी साइकिल लेकर धीरे-धीरे पैदल गेट की तरफ बढ़ रहा है, वह एक पल के लिए भी कामिनी को ओझल नहीं होने दे रहा है। गेट के बाहर जाकर कामिनी अपनी सहेलियों से अलग हो रही है, शागिर्द भी गेट के बाहर दूसरी तरफ जाकर खड़ा हो जाता है। सहेलियों से अलग होकर रिक्शे वाले से बात करके कामिनी रिक्शे में बैठकर चल देती

है। कामिनी को संभवतः यह भी अहसास हो गया है कि यह लड़का आज भी कुछ हरकत करेगा। इस बीच शागिर्द को उससे बात करने का कोई मौका नहीं मिला, ये भी कहा जा सकता है कि कामिनी ने जानबूझकर उसे बात करने का मौका नहीं दिया। यदि वह अकेली दिखती, तो शागिर्द निश्चित ही उससे बात करने की हिम्मत जुटाता।

शागिर्द के पास रिक्शे का पीछा करने के सिवाय और कोई रास्ता नही है, वह डर भी रहा है, लेकिन जब जिंदगी का सवाल होता है तो हिम्मत आ ही जाती है। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया है कि आज कामिनी मैडम से बात करनी ही है। रिक्शे के पीछे चलते-चलते शागिर्द कई बार रिक्शे के एकदम करीब भी गया कि वह रिक्शे को रुकवाएगा, लेकिन उसकी हिम्मत नहीं पड़ी।

शागिर्द बचपन से ही सीधा-साधा व संस्कारवान लड़का था, उसे अपने माँ-बाप अथवा सगे सम्बन्धियों का इतना प्यार व सपोर्ट नहीं मिला कि वह आत्मनिर्भर हो सकता, चालाकी तो उसमे दूर-दूर तक न थी। लड़कियों व औरतों को वह हमेसा इज्जत-सम्मान की नजर से देखता था। शागिर्द मजदूर माँ बाप का बेटा था, हमेशा अभाव में जिया था, यदि उसके पास भाव होते तो शायद वह कामिनी से बात करने में बिलकुल संकोच नहीं करता। यदि वह भी कुलीन खानदान का होता तो उसके पास भी अच्छे-अच्छे कपडे होते, अच्छी पर्सनालिटी होती, उसका अपना ईगो होता, अपना ऐचिचूड होता, तो शायद वह इस तरह से मायूस नहीं होता, बेकसी मे नहीं जीता।

रिक्शे के पीछे चलते-चलते वह रिक्शा रुकवाने की हिम्मत भी जुटा रहा है । सिविल लाइन के बाद भीड़-भाड़ शुरू हो जाएगी, फिर रिक्शा रुकवाना और बात करना मुश्किल हो जायेगा। इसलिए कंपनी बाग़ के सामने उसने हिम्मत करके रिक्शे वाले को रिक्शा रोकने को बोला, रिक्शे वाले ने रिक्शा रोक दिया, कामिनी आश्चर्चकित होकर शागिर्द की तरफ देखने लगी और गुस्से में बोली, क्या बात है, क्यों रिक्शा रुकवा रहे हो ?

शागिर्द ने जेब से लेटर निकालकर उसकी तरफ फेंक दिया, जिसे बाद में कामिनी ने अपने पास रख लिया। शागिर्द चिट्ठी देने के बाद भी रिक्शे के पीछे-पीछे यह सोचकर चलता रहा कि लेटर पढ़कर शायद कामिनी उससे बात करने कि कोशिश करे, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। कामिनी को अच्छी तरह पता है कि शागिर्द रिक्शे के पीछे-पीछे आ रहा है, लेकिन उसने एक बार भी नही सोचा कि रिक्शा रोककर दो पल उससे बात कर ले। शागिर्द मायूस होकर इसी उम्मीद से उसके पीछे-पीछे चलता रहा कि शायद कामिनी से बात हो जाये, लेकिन ऐसा नहीं हो सका, पुनः रिक्शा रुकवाने की उसकी हिम्मत नहीं हुई।

रास्ते भर शागिर्द बहुत टेंशन में था, वह निराश एवं घबड़ाया हुआ था, वह दोबारा रिक्शा रुकवाने में डर रहा था कि कहीं कामिनी उसे तेज आवाज में डांटने न लगे, जिससे आस-पास के लोग इकठ्ठा हो जाएँ और शागिर्द को बुरा भला कहने लगें अथवा मारपीट करने लगें। यही सोचकर रिक्शे के पीछे चलते-चलते सिविल लाइन, चौक, कल्याणी देवी, सब पार हो गया। अब तो रिक्शा मीरापुर पहुंचकर चढ़ाई चढ़ रहा है, कामिनी का घर भी आने वाला है। कामिनी कहीं पिछली बार वाली चालाकी फिर न करे, अपने घर के पहले ही न उतर जाये, इसलिए इस बार शागिर्द रिक्शे से ज्यादा दूर नहीं है। कामिनी के घर के निकट पहुँचने पर उसके दिल की धड़कन और घबराहट बढ़ती जा रही है। गर्मी का समय है, दोपहर के लगभग दो बज रहे होंगे, उसका पूरा शरीर और माथा पसीना-पसीना हो गया है, उसे समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करे क्या न करे। कामिनी जहाँ पहले उतरी थी उसके तीन घर आगे एक बड़े से मकान के गेट पर रिक्शा रुक गया, शागिर्द पीछे ही लगा था। कामिनी रिक्शे से उतरकर एक पल के लिए रुकी, शागिर्द को लगा कि शायद वह उससे कुछ बात करेगी, लेकिन बात करने की बजाय उसने शागिर्द को आड़े हांथों ले लिया और तेज आवाज में डांटकर कहने लगी, तुम यहाँ क्या करने आये हो, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे घर तक आने की, अभी मै तुम्हे बताती हूँ। शागिर्द उसकी बात सुनकर एक पल के लिए अवाक् रह गया, फिर उसे भी गुस्सा आ गया और

तेज आवाज में बोला—जाओ ! जाकर अपने बाप से कह दो कि वह बन्दूक लेकर आये और मुझे गोली मार दे, जाओ ! जाकर कह दो, कि तलवार लेकर आये और मेरी गर्दन काट दे, मै यहीं खड़ा हूँ, और यहीं खड़ा रहूँगा।

कामिनी यह सब सुनते हुए घर के अंदर चली गई। शागिर्द दो मिनट तक वहीं खड़ा रहा, शागिर्द की तेज आवाज सुनकर रिक्शे वाला व एक दो अन्य व्यक्ति वहां पर आ गए और पूंछने लगे---भाई क्या बात हो गई ? शागिर्द ने कहा कि कोई बात नहीं है, कामिनी यों ही फालतू में नाराज हो रही थी, इसलिए मेरा मूड ख़राब हो गया।

शागिर्द गेट के बाहर साइकिल खड़ी करके मकान के अंदर गया। मकान में नीचे के पोरशन में एक प्राइवेट स्कूल चल रहा था, जिसमे शायद कक्षा आठ तक के बच्चे पढ़ रहे थे। शागिर्द एक बच्चे का एडमिशन कराने के बहाने अंदर गया, एक हाल में एक मास्टर साहेब बच्चों को पढ़ा रहे थे, शागिर्द उसके पास गया और बच्चे के एडमिशन, उसकी फीस और किताबों, स्कूल की टाइमिंग आदि के सम्बन्ध में पूरी जानकारी प्राप्त की, इसके बाद वह बाहर चला गया । शागिर्द ने यह अभिनय इसलिए किया ताकि घर के अंदर अथवा बाहर के लोग उसे गलत न समझें, यदि वह बाहर से ही लौट जाता तो जो लोग उससे पूंछ रहे थे वे उसे गलत समझते। इस दौरान शागिर्द ने कामिनी के घर को काफी हद तक देख लिया था। लगभग पांच हजार वर्ग फुट में बना आलीशान दुखंडा मकान देखकर शागिर्द के होश उड़ गए। ये मकान किसी हवेली से कम न था और एक अमीर परिवार की गवाही दे रहा था।

दस मिनट तक शागिर्द घर के अंदर रहा लेकिन कामिनी के घर वालों की तरफ से कोई बाहर नहीं आया और न ही किसी ने शागिर्द को कुछ बुरा-भला कहा। हो सकता है कि जिस समय कामिनी घर पहुंची उस समय कोई जेंट्स घर पर न रहा हो, या फिर कामिनी ने घर वालों को कोई बात बताई ही न हो, सोचा हो कि बात का बतंग़ड न बनाया जाये। शागिर्द को तसल्ली इस बात की थी कि कामिनी ने शागिर्द के खिलाफ कोई एक्शन

नहीं लिया, शायद उसने शागिर्द के विषय में कुछ अच्छा सोच लिया हो। शागिर्द के मन मे यह खुशी थी कि वह दस मिनट तक वहां रुका रहा और किसी व्यक्ति ने उससे कुछ नहीं कहा, लेकिन दुःख इस बात का है कि कामिनी ने उससे ठीक से बात नहीं की । यदि वह उससे प्यार नहीं करती तो कम से कम यही बता देती कि मै आपसे प्यार नहीं करती हूँ, प्यार से बात करके समझा देती तो शागिर्द को इतना दुःख नहीं होता। यदि वह शागिर्द को पसंद नहीं भी करती है, तो भी उसका मन रखने के लिए बात कर लेती। यदि वह यूनिवर्सिटी कैंपस में ही बात करके समझा देती तो उसे घर तक रिक्शे का पीछा करने की जरुरत ही क्यों पड़ती, शागिर्द को विवश होकर ऐसा करना पड़ा।

शागिर्द का मन कामिनी के व्यवहार से बहुत विचलित है। जिस तरह उसने शागिर्द से धमकी भरे अंदाज मे बात की, उससे तो यही कहा जा सकता है कि उसके दिल में शागिर्द के प्रति कोई प्यार-वार नहीं है, लेकिन शागिर्द वहां दस मिनट तक रुका रहा और कोई भी उसके पास नहीं आया, न ही उससे किसी ने कुछ कहा, इसका मतलब है कि कामिनी ने घर पर किसी से शागिर्द की शिकायत नहीं की, अर्थात उसके दिल में कहीं न कहीं शागिर्द के प्रति झुकाव है। शागिर्द यही सब सोचते-सोचते फिर से कल्याणी देवी मंदिर के सामने चबूतरे पर पेड़ की छाया में जाकर बैठ गया। उसने मंदिर के बाहर लगे नल से पानी पिया, दिमाग को थोड़ी सी ठंडक मिली। शागिर्द का दिमाग बहुत थका-थका और शिथिल सा हो गया है, किंकर्तव्यवईमूढ़ दिमाग किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा, तो वह बिना सोचे-विचारे अचानक उठा और साईकिल लेकर पैदल ही चल दिया। काफी देर तक वह यों ही पैदल चलता रहा, फिर सहसा साइकिल पर सवार होकर मुँडेरा के लिए चल दिया। लगभग साढ़े तीन बजे वह अपने कमरे पहुंचा।

शागिर्द घर तो चला आया, लेकिन उसका मन-मस्तिष्क अवसादित है, उसका मूड ठीक नहीं है, मन में गुस्सा भी है और दुःख भी। पता नहीं वह ऐसी लड़की के चक्कर में क्यों पड़ गया, जो मुँह में चांदी का चम्मच लेकर पैदा हुई है। यदि शागिर्द को पहले पता चल जाता कि कामिनी इतने बड़े

माँ-बाप की लड़की है तो शायद वह उससे कभी दिल नहीं लगाता, शायद उसकी हिम्मत ही नहीं पड़ती उसके बारे मे सोचने की। अब शागिर्द उसके विषय में सोचना बंद कर देगा, कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली। लड़का-लड़की की ऐसी बेमेल जोड़ी कभी नहीं बन सकती, ऐसी जोड़ी समाज में शोभा नहीं देती। वे और लोग होते हैं जो किसी की अच्छाई और प्यार पर मर मिटते हैं , वे इंसान किसी देवता से कम नहीं होते, जो सिर्फ प्यार को पहचानते हैं, पैसा उनके लिए मायने नहीं रखता। लैला-मजनू, हीर-राँझा की कहानियां सबने सुनी हैं, कितने महान थे वे लोग जिन्होंने सिर्फ अपने प्यार को पाने के लिए अपनी जान की क़ुरबानी दे दी। आज उनका नाम इतिहास में दर्ज हो गया, आकाश में चमकते सितारों की सूची में भी उनका नाम दर्ज हो गया।

शागिर्द का दिल बहुत उदास है, वह मन ही मन कामिनी को याद कर उससे कहता है--कामिनी ! अब तो मै पूरी तरह समझ चुका हूँ, कि आप बहुत बड़े घराने की लड़की हो, मै आपके लायक नहीं हूँ, लेकिन इस तड़पते दिल का क्या करुँ, जिसे आपने जकड रक्खा है, आपको इस गरीब आशिक का इतना अपमान नहीं करना चाहिए, धन दौलत पर इतना अभिमान नहीं करना चाहिए :---

धन-दौलत पे इतना गुमान करो न-------2
इससे अपनों का इतना, अपमान करो न।
यों तो धन को कमाना बुरा नहीं होता,
पर इससे तो कुछ भी पूरा नहीं होता,
हुश्न भी इक दौलत, रंग भी इक दौलत,
विद्या भी दौलत, हया भी दौलत,
पैस भी दौलत, रुपया भी दौलत,
जुटाना है तो तुम जुटाओ मगर,
धन की सेजी पे इतना अभिमान करो न।
धन-दौलत पे इतना --------2

इससे जानते को लोग, जरा भी पहचानते नहीं,
जताने पे भी लोग, जरा भी जानते नहीं,
दुनिया ये न्यारी, कितनी है प्यारी,
हमसे भी यारी, तुमसे भी यारी,
इससे भी यारी, उससे भी यारी,
निभाना है तो तुम निभाओ मगर,
इन फकीरों से इतना अनजान बनो न।
धन-दौलत पे इतना----------2
यों तो दुनियां में कुछ भी पराया नहीं होता,
कभी अपनों से अच्छा पराया कहीं होता,
अपने भी अपने, पराये भी अपने,
जिसको भी देखो, वो भी हैं अपने,
इधर भी हैं कांटे, उधर भी हैं कांटे,
कहीं जाना है तो तुम जाओ मगर,
आये संकट पे तुम यूं भगवान तजो न।
धन-दौलत पे इतना ----------2
इससे अपनों क इतना अपमान --------2

पंद्रह



पराजित व्यक्ति में कुंठा उत्पन्न होती है, निराशा उस पर हावी हो जाती है। हताश व्यक्ति निराशा की गहराइयों में गोते लगा-लगा कर थक जाता है। मनुष्य का जीवन अत्यंत जटिल होता है, हजारों ठोकरें खाने के उपरांत भी वह हार नहीं मानता, कहीं से उम्मीद की एक चिंगारी निकलती है और मन फिर से आशावान होने लगता है, धीरे-धीरे वह दुःख और निराशा पर विजय प्राप्त करता है, अपनी मंजिल को प्राप्त करने के लिए फिर से उत्प्रेरित होता है। कुछ लोग स्वाभाव से अत्यंत सरल एवं मधुर होते हैं, किन्तु विजयी होने के प्रति अत्यंत जिद्दी होते हैं, वे जल्दी से हार नहीं मानते। जब तक आशा की एक भी सांस बाकी है तब तक वे प्रयास करना नहीं छोड़ते, प्रत्येक अगला प्रयाश और अधिक उग्र होता चला जाता है।

शागिर्द का दिल कामिनी की प्रतिक्रियाओं से बहुत उदास एवं व्यथित था। उसने उसे देख लेने की धमकी दी थी। उसने ऐसा क्यों किया ? क्या वह उसे बिलकुल पसंद नहीं करती ? यदि ऐसा था तो उसने एक बार बात करके उसे समझा क्यों नहीं दिया, कि मै आपसे प्यार नहीं कर सकती, मै आपको ठीक से जानती नहीं हूँ, मै प्यार-वार के चक्कर में नहीं पड़ना चाहती, मै अपने माँ बाप की मर्जी के अनुसार शादी-सम्बन्ध करुँगी, आदि; या फिर कोई और कोई मज़बूरी थी तो उसे साफ़-साफ़ बता देना चाहिए।

शागिर्द काफी दिनों तक बेखुदी और मायूसी में डूबा रहा, वह गमगीन और उदासीन रहने लगा। कामिनी उसके दिल की धड़कन थी, वह नहीं मिलेगी तो वह कैसे जियेगा। कामिनी के व्यवहार से उसका दिक टूटकर बिखर गया, जिसमे उसकी जान बसती है वह उससे धमकी भरे

लहजे में बात कर रही थी। फिर भी शागिर्द का दिल कामिनी को पाने के लिए मचल रहा था। क्या करे, क्या न करे, शागिर्द मानसिक रूप से बहुत विक्षिप्त था, उसकी सोचने समझने की क्षमता शिथिल हो रही थी, वह ज्यादातर एकांत में रहने लगा था। कभी-कभी शागिर्द में आशा की किरण आ जाती थी, शायद वह उससे प्यार करती हो, लेकिन कुछ इन्तजार करना चाहती हो, उसकी कुछ अपनी मजबूरियां हो सकती हैं, जो वह कह नहीं पा रही है। भारतीय समाज में लड़की होने की भी कई समस्याएं हैं, कभी-कभी लड़की होना एक गुनाह के समान होता है। लड़की जब तक छोटी है तब तक कोई बात नहीं, जवान होते ही घर वालों की नजरे तिरछी हो जाती हैं, उसके आस-पास कोई लड़का नजर आ जाये तो पचासों सवाल उठने लगते हैं, फिर उसके घर तक पहुंचना तो और बड़ी बात है। घर वालों को भनक तो लग ही गई होगी कि कोई लड़का पीछा करते-करते घर तक आ गया, वे सोच रहे होंगे कि कुछ न कुछ तो लड़की की भी शरारत रही होगी, जिससे कोई लड़का घर तक आ गया, वगैरह-वगैरह।

शागिर्द का मन कामिनी के विषय में नकारात्मक बातें सोचते-सोचते सकारात्मक बातें सोचने लगा। कामिनी की कोई न कोई मजबूरी जरूर रही होगी, जिससे वह ऐसा बोल रही थी। शायद वह घर वालों को बताने के लिए धमकी भरे अंदाज में बात कर रही होगी, कि यदि कोई पूछेगा कि यह लड़का कौन था तो वह बता देगी कि वह उसे नहीं जानती, शायद यूनिवर्सिटी में पढता है और उसका पीछा करते-करते घर तक आ गया, मैंने उसे अच्छे से लताड़ कर भगा दिया, अब वह दिखाई नहीं पड़ेगा, आदि। ये भी एक सच्चाई है कि लड़कियां जल्दी से प्यार के चक्कर में नहीं पड़तीं । किसी से प्यार करने के पहले सौ बार सोचती हैं। समाज से तो टक्कर ली जा सकती है लेकिन घर वालों से टकराना कोई आसान काम नहीं होता। भारतीय समाज में प्रेम-प्रसंग को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता। प्यार करने वाले दोनों लड़का-लड़की कितने भी अच्छे इंसान क्यों न हो, बड़े-बूढ़ों व धर्म के ठेकेदारों की नजर में उनसे नीच व अधर्मी कोई इंसान नही होता; उसमे भी यदि वे बड़े घराने के हैं तब तो कोई बात नहीं, सब

चलता है, मगर गरीब घराने के हैं तब तो खैर नहीं, इनका चाल-चलन ठीक नहीं है, करैक्टर ढीला है, आदि, न जाने क्या-क्या टाइटल नवाजे जायेंगे उन पर।

शागिर्द के दिल मे सकारात्मक विचार आने से कामिनी की ओर फिर से आकर्षण उत्पन्न होने लगा। कामिनी तो वैसे भी उसके दिल की गहराइयों मे छिपी बैठी हुई है, इतनी आसानी से निकलने वाली कहां, लगता है वह शागिर्द की जान लेकर ही निकलेगी। शागिर्द सिर्फ यह चाहता है कि कामिनी केवल एक बार उसके दिल की बात सुन ले। बस एक बार वह कह दे कि वह भी उससे प्यार करती है, शागिर्द के सारे गिले-शिकवे दूर हो जायेंगे, वह कामिनी की सारी गलतियों को माफ़ कर देगा।

दो-तीन महीने पश्चात बी.ए. का रिजल्ट आएगा, फिर एम. ए. में एडमिशन प्रारम्भ होंगे। शागिर्द का तो पक्का है कि वह इकोनॉमिक्स से ही एम.ए. करेगा, किन्तु कामिनी का क्या इरादा है, कुछ पता नहीं। यदि वह एम.ए. मे ऐडमिसन लेगी तभी उसके दर्शन होने की संभावना है, तब तक शागिर्द का समय कैसे कटेगा, यह एक गंभीर समस्या है। कामिनी की एक झलक देखने को मिल जाये, शागिर्द के लिए इससे बड़ी कोई ख्वाहिश नहीं है। कामिनी के चाँद से चेहरे के आगे सोने-चांदी, हीरे-जवाहरात सबका आकर्षण फीका है, यही सब उसका जीना मुहाल करता है।

इस समय कामिनी से मुलाकात करने का कोई उपाय नहीं है, तीन-चार महीने तक यूनिवर्सिटी बंद रहेगी। शागिर्द ने कामिनी का घर तो देख लिया है लेकिन घर जाने से कोई फ़ायदा नहीं, तसल्ली के लिए उसके घर से गुजरने वाली गली व मोहल्ले के चक्कर भले ही काटते रहो। उसके घर के सामने भी एक-दो मिनट से ज्यादा देर तक खड़े नहीं रह सकते, मैडम जी के दर्शन तो होंगे नहीं, उसके घर वाले देख लेंगे तो पचासों सवाल पूंछने लगेंगे, कहीं उसका भाई मिल गया तो और बड़ी मुसीबत। तीन-चार महीने इन्तजार करने के सिवाय और कोई उपाय समझ में नहीं आ रहा है। समय बिताने और मन बहलाने के लिए शागिर्द अपने गांव जाने की सोंच रहा है,

बहुत दिनों से वह गांव गया भी नहीं है। शागिर्द ने छोटे भाई दीपक से अपनी इच्छा बताई, तो दीपक ने कहा ठीक है भैया आप गांव चले जाओ, अम्मा भी वही हैं, अगर आना चाहें तो लेते आना। शागिर्द ने भी सहमति व्यक्त की और कहा कि अम्मा आ जाएँगी तो ठीक रहेगा, कुछ दिन इलाहाबाद रह लेंगी तो उनका भी मन बहल जायेगा, पिताजी तो सब जगह घूम आते हैं, अम्मा कहीं आ-जा नहीं पाती।

शागिर्द अगले दिन सुबह ही गांव जाने की तैयारी कर लेता है, उसे तैयारी भी क्या करनी है, एक झोला उठाना है, उसमे एक जोड़ कपडे रखने हैं, एक गमछा, रास्ते में खाने के लिए दो पराठे, बस, और उसके पास रक्खा ही क्या है ले जाने के लिए। सुबह आठ बजे से बारह बजे के बीच कई रेलगाड़ियाँ हैं जो इलाहाबाद से कानपुर जाती हैं। दिल्ली से कलकत्ता की इस मेन लाइन मे रेलगाड़ियों की कमी नहीं हैं, लगभग प्रत्येक रेलगाड़ी इलाहाबाद व कानपुर दोनों जगह रूकती हैं। ये आपको सोचना है कि आपके समय के हिसाब से कौन सी ट्रेन ठीक रहेगी, किस ट्रेन में बैठने की जगह मिल जाएगी। कानपुर तक ट्रेन की कोई समस्या नहीं है, लेकिन कानपुर से कन्नौज के लिए बहुत कम ट्रेनें है। इलाहबाद से कानपुर दो सौ किलोमीटर में केवल तीन घंटे लगते हैं, जबकि कानपुर से कन्नौज मात्र पचहत्तर किलोमीटर है, फिर भी तीन घंटे टाइम लेती है। कन्नौज से गांव के लिए शाम छह बजे के बाद कोई टैक्सी नहीं मिलती, और ट्रेन शायद ही कभी राइट टाइम पहुंचती हो।

शागिर्द इलाहाबाद से मुरी एक्सप्रेस से कानपुर लगभग दो बजे पहुँच जाता है, कानपुर से कन्नौज के लिए सवा तीन बजे ट्रेन जाती है, जो लगभग एक घंटे लेट सात बजे कन्नौज पहुंचती है। सात बजे गांव भदईंपुर के लिए कोई टैक्सी नहीं है, शागिर्द कुछ देर तक इन्तजार करता है, फिर नाउम्मीद होकर पैदल ही गांव के लिए चल देता है। पैदल चलते-चलते वह पीछे देखता जाता है कि शायद कोई टैक्सी अथवा ट्रेक्टर आ रहा हो तो वह उसमे बैठ जाये। एक-दो ट्रैक्टर आये भी तो वह रात के अँधेरे में तेज आवाज में तेज गति से जा रहे थे। शागिर्द आवाज लगाने की कोशिश भी

करता तो ट्रैक्टर का ड्राइवर कहाँ सुनने वाला। शागिर्द को पैदल ही जाना पडा, कन्नौज से भदईंपुर लगभग दस किलोमीटर है, लगभग दो घंटे का रास्ता है, जाड़े का सीजन था, सन्नाटे के कारण डर भी लग रहा था। उसे दौलतपुर तक की दिक्कत नहीं थी, लेकिन दौलतपुर से भदईंपुर के बीच एक चौगड्डा है जहाँ चोर-उचक्के तमंचा आदि दिखाकर राहगीरों को लूट लेते हैं। पैदल चलते-चलते शागिर्द लगभग नौ बजे दौलतपुर पहुँच पाया, दौलतपुर के मुख्य मार्ग के दाएं किनारे कुछ लोग अलाव जलाकर ताप रहे थे, शागिर्द जब वहां से गुजर रहा था तो अलाव ताप रहे लोगों में कुछ लोग उसके परिचित के थे जो उसकी बिरादरी के थे और उसे अच्छी तरह पहचानते थे, दूर के रिश्तेदार थे और सामाजिक कार्यों में गांव-घर में आते-जाते थे। उनमे से एक पप्पू नाम के व्यक्ति ने शागिर्द को रोका और बोला कि इतनी रात को भदईंपुर जाना खतरे से खाली नहीं है।

पप्पू ने शागिर्द से कहा--हम लोग भी अपने लोग ही हैं, रात में यहीं रुक जाओ, खाना खाओ और सो जाओ, सुबह आराम से चले जाना।

शागिर्द---नहीं यार पप्पू भाई ! हम निकल जायेंगे, अभी नौ बजा है, अभी कोई खास रात नहीं हुई है।

पप्पू---नहीं शागिर्द ! बात रात की या ठंड की नहीं है, बात है चौगड्डा की, वहां सात बजे के बाद जाना खतरे से खाली नहीं है, कोई और दूसरा रास्ता भी नहीं है भदईंपुर जाने का, इसलिए अभी तुम यहीं रुक जाओ, इसे अपना घर ही समझो, सुबह निकल जाना। अलाव ताप रहे अन्य लोग भी पप्पू की बात का समर्थन कर रहे थे।

शागिर्द पप्पू की बात से सहमत होते हुए---हाँ यार पप्पू भाई, चौगड्डा की समस्या तो है, अभी कुछ दिन पहले ही हमारे गांव के पलटू भैया को चोरों ने इसी चौगड्डे पर रस्सी से बांध दिया था, जो पैसा-कौड़ी और सामान था सब लूट ले गए, दस-पांच लात घूसे मारे, वो अलग से।

शागिर्द को पप्पू की बात समझ में आ गई और वहीं रुक गया, खाना खाया और लेट गया। पैदल चलते-चलते काफी थक गया था, कब नींद आ गई उसे पता ही नहीं चला। सुबह सात बजे जाग गया, चाय पिया और गांव के लिए निकल दिया। दौलतपुर से भदईपुर तीन किलोमीटर ही पड़ता है, वह सुबह आठ बजे घर पहुँच गया। सुबह-सुबह शागिर्द को आते देख घर वाले हैरान हो गए, क्योंकि इलाहाबाद से गांव पहुँचने का समय सामान्तया शाम आठ बजे के आस पास का होता है, सुबह पहुँचने का मतलब कोई और बात है।

पिताजी बड़ी हैरानी से पूंछ ही बैठे---शागिर्द ! इतने सुबह-सुबह कैसे आये ?

शागिर्द---कल काफी रात हो गई थी तो दौलतपुर के पप्पू ने लुटेरों के डर से रोक लिया और कहा कि यहीं रुक जाओ सुबह निकल जाना, इसलिए वहीं रुक गए थे।

पिताजी---अच्छा हुआ वहां रुक गए, पप्पू भी तो अपने घर जैसा ही है। इलाहाबाद में सब ठीक है ?

शागिर्द---हाँ, सब लोग ठीक हैं।

अम्मा---बडंगवा और दीपक कैसे हैं ?

शागिर्द---सब लोग ठीक हैं।

अम्मा---तुम लोगों की पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है ?

शागिर्द---सब ठीक चल रही है।

पिताजी---मक्खन और सूरज के क्या हाल हैं ?

शागिर्द---वो लोग भी ठीक हैं।

पिताजी---बड़ी बहू ने तुम लोगों को अलग करके अच्छा नहीं किया।

शागिर्द---बिना भैया की सहमति के भाभी की इतनी हिम्मत नहीं हो सकती, भैया ने हमसे एक बार भी नहीं पूंछा कि तुम अलग कैसे और क्यों हो गए, किसने अलग किया। उलटे सब जगह यह प्रचारित कर रहे हैं कि शागिर्द पढ़-लिख गया है, इसलिए अलग हो गया।

पिताजी---हाँ, ठीक कह रहे हो तुम, वह बड़ा भाई है, उससे कौन क्या कहे, उसे खुद सोचना चाहिए।

अम्मा---चलो कोई बात नहीं, ऊपर वाला सब देखता है। जाकी जैसी करनी, ताकी तैसी भरनी।

पिताजी सिर हिलाकर सहमति व्यक्त करते हैं। शागिर्द घर में नहा-धो कर खाना-पीना खाता है, फिर मोहल्ले में निकल जाता है, सभी के यहाँ जाकर दुआ सलाम करता है और सबका हाल चाल पूछता है। शागिर्द रामू के घर भी जाता है, रामू शागिर्द के बचपन का दोस्त है। रामू अक्सर शागिर्द के घर आकर साथ में पढ़ाई करता था और रात मे वहीं शागिर्द के साथ ही सो जाता था। शागिर्द के इलाहाबाद जाने पर दोनों का साथ छूट गया। अचानक शागिर्द को देखकर रामू बहुत खुश हुआ।

रामू---शागिर्द भाई नमस्कार, कब आये ?

शागिर्द---नमस्कार रामू भाई, आज सुबह ही आया हूँ। कल रात हो जाने के कारण दौलतपुर रुक गया था, फिर सुबह आ गया।

रामू---और सुनाइए, इलाहाबाद में सब ठीक है ?

शागिर्द---हाँ यार, सब लोग ठीक हैं।

शागिर्द रामू के माता-पिता के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करता है, तो वे सबका कुशल-क्षेम पूंछते हैं। शागिर्द भी सबकी कुशलता के बारे में पूछता है। शागिर्द कुछ देर रामू के घर रुकता है, थोड़ा खाना-पीना भी खाता है, रामू बिना कुछ खिलाये मानता भी नही है। इसके पश्चात् शागिर्द

परिवार की बड़ी भाभी व मझली भाभी के घर जाता है। दोनों बेचारी अधेड़ उम्र मे ही बिधवा हो चुकी थीं, दोनों के पति साथ छोड़कर जा चुके थे। दोनों भाभियों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करता हैं। दोनों बेचारी हरदम किस्मत को कोसती रहती हैं, और आँसू बहाती रहती हैं। शागिर्द अपने अन्य हमउम्र दोस्तों के यहाँ भी जाता है और सबका हालचाल पूंछता है। मोहल्ले में सबसे मिलते-जुलते शाम के पाँच बज गये। शागिर्द अब घर आ गया है, पिताजी भैसों के लिए मशीन में चारा काट रहे थे, तो शागिर्द भी उनकी मदद करने लगा।

गांव के जवाहर भैया और आरती भाभी दूसरे घर में अलग रहते हैं, जबकि अम्मा-पिताजी घेरा में अलग बनाते-खाते हैं। शाम को आरती भाभी ने चना का साग बनाया है। शागिर्द को चना का साग बहुत पसंद हैं, उसपर बाजरे की रोटी के स्वाद के क्या ही कहने। शहरों मे तो चना का साग और बाजरे की रोटी के दर्शन नहीं होते। शागिर्द ने चना का साग और बाजरे की रोटी बड़े चाव से खाया। शागिर्द गांव में ज्यादातर जवाहर भैया के घर में ही सोता है, सोते समय शागिर्द अपने दिल की बात को आरती भाभी को बताना चाहता है। उसने अपने बेकरार दिल की सारी बातें आरती भाभी को बताकर अपना दिल हल्का किया। उसने बताया कि वह कॉलेज की एक लड़की से बेइंतहां प्यार करता है, उसका नाम कामिनी है, वह पढ़ी-लिखी और बड़े घराने की है। शागिर्द ने आरती भाभी को निःसकोच सबकुछ बताया, क्योंकि उसे पता था कि आरती भाभी राजरानी की तरह बात का बतंगड़ नहीं बनाएंगी, बल्कि कुछ न कुछ सही सलाह देंगी। लड़कियों के रुख के बारे में कुछ बताएंगी, वह मुझसे प्यार करती होगी कि नहीं, वह मुझसे शादी कर सकती है कि नहीं, आदि। आरती भाभी ने अपना अनुभव शागिर्द से साझा किया और कहा कि यदि उसके दिल में आपके लिए प्यार होगा तो वह आपसे बात जरूर करेगी, बात नहीं कर रही है इसका मतलब वह प्यार नही करती है।

शागिर्द को आरती भाभी की बातों से कोई खास तसल्ली नही हुई। आरती भाभी बहुत कम पढ़ी लिखी हैं, गांव की भोली-भाली लड़की है, उन्हें

शहर की लड़कियों के बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं, इसलिए वह बहुत संतोषप्रद सलाह नहीं दे सकीं। शागिर्द का मन दुखी सा हो गया, वह कामिनी के बारे में सोचते-सोचते देर रात सो गया।

शागिर्द दो दिन तक गांव मे रुका, सभी लोगों से मिल-जुल कर हालचाल प्राप्त करता है, अब उसे कामिनी की याद सताने लगी है। वह जहाँ कहीं भी जाता है कामिनी की यादें उसका पीछा नहीं छोड़तीं, वे साये की तरह उसके पीछे पड़ी रहती हैं, वे न तो जीने देती हैं, न ही मरने देतीं। शागिर्द को अब लगने लगा है कि गांव में ज्यादा समय बर्बाद करना ठीक नही है, इलाहाबाद में जाकर वह कुछ न कुछ तो करेगा ही, उसे अपने भविष्य के बारे में भी चिंता रहती है। बी. ए. तो हो गया है, एम. ए. करने की उसे जल्दी नही है, पहले वह नौकरी की तैयारी करेगा। सरकारी नौकरी ही उसका एक मात्र सहारा है, नौकरी लग जाएगी तो उसके, दीपक के और अम्मा-पिताजी के सारे कष्ट दूर हो जायेंगे। हो सकता है कि नौकरी लगने के बाद कामिनी भी उसे पसंद करने लगे। कामिनी को पाना उसकी तमन्ना भी है, और दिल की मजबूरी भी।

शागिर्द ने एक दिन पहले ही मन बना लिया है कि उसे कल इलाहाबाद जाना है। उसे किसी से पूछने की जरुरत भी नही है, क्योंकि सब जानते हैं कि शागिर्द को अपना भविष्य बनाना है, जब उसकी मर्जी होगी तब जाने की तैयारी कर लेगा। शागिर्द आज शाम को ही सबको बता देता है कि कल उसे इलाहाबाद जाना है। शागिर्द ने अम्मा से इलाहाबाद चलने को कहा तो हर बार की तरह कहने लगीं कि अभी नही बाद मे चलेंगे, होली में जब दीपक आएगा तो उसके साथ आ जाएंगी। सुबह अम्मा ने एक बोरी में शागिर्द के लिए दाल-चावल आदि बांध दिया है, रास्ते में खाने के लिए आरती भाभी ने शब्जी-पराठा बांध दिया है। कन्नौज से लगभग तीन बजे एक ट्रेन कानपुर जाती है, जो लगभग छह बजे कानपुर पहुँचती है, वहां से सात बजे तूफ़ान एक्सप्रेस इलाहाबाद जाती है, जो लगभग ग्यारह बजे इलाहाबाद पहुँचती है।

शागिर्द साढ़े ग्यारह बजे कमरे पहुँचता है, खाना उसने रास्ते में ही खा लिया हैं, हांथ-मुंह धोकर वह सो जाता है। सुबह साढ़े सात बजे उठकर वह सूरज के कमरे हालचाल लेने चला जता है।

शागिर्द---नमस्कार सूरज भाई, नमस्कार मक्खन भाई !

सूरज और मक्खन---नमस्कार भाई शागिर्द ! आप तो अचानक ही गांव चले गए ?

शागिर्द---हाँ यार, बहुत दिनों से गांव गए नही थे, एग्जाम समाप्त हो गए, तो मन किया कि गांव हो आएं।

सूरज और मक्खन---और सुनाओ घर के क्या हालचाल हैं ?

शागिर्द---सब ठीक हैं, अम्मा को लाना चाह रहे थे लेकिन वो आयीं ही नहीं, कहने लगीं कि होली में जब दीपक आएगा तब आएंगे।

मक्खन---अब तो पिताजी भी काफी वृद्ध हो गए होंगे ?

शागिर्द---हाँ यार, उनसे भी कहा था चलने के लिए, तो वह भी कहने लगे बाद में देखा जाएगा। गांव के लोगों का शहर में कहाँ मन लगता है, यहाँ न तो उनके लिए कोई काम है, न ही उनके साथ कोई बतियाने वाला। वहां गांव वालों के साथ टाइम कट जाता है, खाने-पीने भर को थोड़ा बहुत मेहनत-मजदूरी भी कर लेते हैं।

सूरज---हाँ यार शागिर्द, ये तो है, वृद्ध लोग बड़ी मुश्किल से तो यहाँ आएंगे, एक सप्ताह रुकेंगे, फिर कहेंगे मुझे गांव जाना है।

शागिर्द---हाँ, पहले लिवाने जाओ, फिर छोड़ने जाओ, बडी जल्दी ऊबने लगते हैं।

सूरज---और सुनाओ शागिर्द भाई, पढाई-लिखाई कैसी चल रही है ?

शागिर्द---अभी तो कुछ खास नहीं, बी. ए. के एग्जाम ख़त्म हुए हैं, अब आगे की पढ़ाई और नौकरी की तैयारी साथ-साथ करनी है।

सूरज---हाँ यार, ये तो जरुरी है, हम लोगों के लिए नौकरी ही एक सहारा है, इसके बिना कहाँ गुजारा है। अच्छा ये सब छोडो, ये बताओ कि कामिनी मैडम के क्या हालचाल है, बहुत दिनों से कुछ बता नहीं रहे हो।

शागिर्द—यार ! कुछ मत पूछो, ग्यारह तारीख को हम लोगों का इकोनॉमिक्स का लास्ट पेपर था, बात करने के चक्कर में उसके रिक्शे का पीछा किया और उसके घर तक पहुँच गए।

सूरज बड़ी उत्सुकता से---फिर क्या हुआ, कुछ बवाल तो नहीं कर आये ?

शागिर्द---नहीं यार, बस ऐसे ही थोड़ी सी हॉट-टॉक हो गई। रिक्शा उसके घर के गेट के बहार रुका, वह रिक्शे से उतरी और तेज आवाज में मुझे धमकी देने लगी, तुम यहाँ क्या करने आये हो, अभी मै तुमको देखती हूँ।

सूर—यार, फिर क्या हुआ ?

शागिर्द---हुआ क्या, मेरा भी मूड ख़राब था, मैने भी बोल दिया- जा, जाकर अपने बाप से कह दे कि वह बन्दूक लेकर आये और मुझे गोली मार दे, या फिर तलवार लेकर आये और मेरी गर्दन काट दे, मै यहीं खड़ा हूँ और यहीं खड़ा रहूँगा ।

सूरज—यार, तुमने तो उससे भी बड़ी धमकी दे डाली, फिर तो बवाल हो गया होगा ?

शागिर्द---नहीं यार, मै वहां काफी देर तक रुका भी रहा, लेकिन उसके घर से कोई भी व्यक्ति मेरे पास नहीं आया, न ही किसी ने मुझसे कुछ बोला, फिर मै चला आया।

सूरज---यार, ये तो बहुत बड़ी हिम्मत की बात है कि उसके घर जाकर आपने ऐसा बोल दिया !

शागिर्द---बात हिम्मत की नहीं है, बात है कि मरता क्या न करता। मै तो जान हथेली पर रखकर उससे प्यार कर बैठा हूँ, अब मै करूं तो क्या करूं।

सूरज---मगर यार, सम्हल कर चलना, क्योंकि प्यार की राह मे कांटे बहुत होते हैं।

शागिर्द---हाँ यार, बिलकुल सही कह रहे हो।

अच्छा अब बहुत बातें हो चुकी, अब चला जाये। शागिर्द विदा लेकर अपने रूम चला जाता है।

सोलह



पांच माह बीत चुके हैं, बी ए. का रिजल्ट भी आ गया है, एम.ए. में लगभग सभी विषयों के एडमिशन भी हो चुके हैं, कामिनी के बिना शागिर्द ने ये समय बहुत तकलीफ एवं बेबसी मे बिताया है, अपनी दिलरुबा के दीदार के लिए उसकी आँखें तरस गईं हैं। कई रातें तो उसने बिना सोये ही बिताई हैं, कामिनी की याद में उसे नींद नहीं आयी, ज्यादातर रातों में वह सपने में कामिनी को ही देखता रहा। लेकिन अब इंतजार समाप्त हो गया है, जल्द ही उसकी मुलाकात उसकी महबूबा से होगी। यदि कामिनी एम.ए. में एडमिशन लेगी तो मुलाकात हो ही जाएगी, इकोनॉमिक्स में एडमिशन लेगी तो और अच्छी बात है, क्योंकि शागिर्द ने भी इकोनॉमिक्स में ही ऐडमिशन लिया है। वह कामिनी की ओर से अभी निराश नहीं हुआ है, उसे विश्वाश है कि यदि उसके प्यार में ताकत होगी तो वह जरूर आएगी। जब कोई नटखट-हसीना नखरे दिखाती है, तब उसे पाने के लिए ये दिल और ज्यादा मचलने लगता है।

फरवरी माह का पहला सप्ताह है, आज से इकोनॉमिक्स के क्लास शुरू होने वाले हैं। पूर्व परिचित ज्यादातर सहपाठी तितर-बितर हो गए हैं, हर कोई अपने पसंदीदा सब्जेक्ट से एम.ए. करने जा रहा है। क्लास प्रारम्भ होने पर ही पता चल पायेगा कि कौन-कौन इकोनॉमिक्स से एम.ए. कर रहा है, बहुत सारे लड़के तो नौकरी की तैयारी में लग गए होंगे। शागिर्द का भी पहला उद्देश्य नौकरी की तैयारी करना ही है, लेकिन उसे कामिनी की वजह से एम.ए. में क्लास अटेंड करने पड़ेंगे, क्योंकि उसके बिना तो वह एक पल भी नहीं रह सकता। यदि कामिनी ने इकोनॉमिक्स में एडमिशन लिया होगा तो वह एक भी क्लास मिस नहीं करेगा, उससे बात हो पाए या न

हो पाए, कम से कम वह उसे एक झलक देख तो सकेगा, आँखों के रास्ते ही वह अपने दिल की प्यास बुझा लेगा।

नौ बजे क्लास शुरू होगा, अभी बीस मिनट बाकि हैं, शागिर्द तो आधा घंटा पहले ही यूनिवर्सिटी आ गया है। कई स्टूडेंट्स आ चुके हैं, कुछ लोग आते जा रहे हैं, लेकिन रवि कहीं दिखाई नहीं दे रहा है, एक वही है जो शागिर्द का जाना-पहचाना, आधा-अधूरा दोस्त है, और किसी से शागिर्द की बात नहीं होती है। ज्यादातर स्टूडेंट्स छह महीने से बिछड़े अपने पुराने साथियों से चिपके पड़े हैं, पता नहीं क्या-क्या बतिया रहे हैं। शागिर्द अलग अकेला खड़ा है, उसे तो सिर्फ और सिर्फ कामिनी का इन्तजार है, लो.... वो आ भी गई, वही पुरानी तिकड़ी, वो बीच में खड़ी बतिया रही है, उसे देखकर शागिर्द के दिल को असीम ठंडक मिल गई। सबसे बड़ी ख़ुशी उसे इस बात की है कि अब यह कन्फर्म हो गया कि वह भी इकोनॉमिक्स से एम. ए. करेगी, अब वह आसानी से उसके दर्शन कर सकेगा और करीब जाने का मौका भी मिल सकेगा। जब भी कभी वह अकेली दिखाई पड़ेगी, वह उससे बात करने की हिम्मत जुटाएगा।

नौ बज चुका है, प्रशांत सर आने वाले हैं, कुछ लोग क्लासरूम मे जाकर बैठ गए हैं, कुछ लोग प्रशांत सर का इंतजार कर रहे हैं। शागिर्द कामिनी के क्लास मे बैठने का इंतजार कर रहा है, उसके बाद वह सोचेगा कि कहाँ बैठना है। वह कोशिश करेगा कि वह कामिनी के जस्ट पीछे वाली शीट मे बैठे, जिससे कि वह उसे और करीब से निहार सके। कामिनी क्लास मे सबसे आगे वाली सीट पर जाकर बैठ रही है। इत्तिफाक से कामिनी के जस्ट पीछे वाली सीट खाली है, शागिर्द यह अवसर चूकना नहीं चाहता था, वह बिना समय गवाएं वहीं जाकर बैठ गया। कामिनी के जस्ट पीछे बैठने पर उसे कैसा फ़ील हो रहा है, ये तो पता नही, किन्तु शागिर्द का दिल बागबाग हो रहा है, ऐसा लग रहा है जैसे कि उसे कोई मसर्रते-बेहद मिल गई हो। कामिनी भी शागिर्द को देखकर वहाँ से हटी नहीं, यदि उसे ऐतराज होता तो वह वहाँ से उठकर कहीं और बैठ सकती थी, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया, ये शागिर्द के लिए एक अच्छी बात थी। शागिर्द कामिनी की तरफ अपनी नजरें गड़ाए

हुए है, कभी-कभी शर्म से वह अपनी आँखें झुका लेता है, इधर-उधर भी देख लेता है, कहीं कोई उसकी हरकतों पर नजर तो नहीं रख रहा है।

प्रशांत सर आ गए हैं, सभी स्टूडेंट्स खड़े होकर उनका स्वागत करते हैं। कई महीनो बाद आज प्रशांत सर के साथ सब लोग क्लास में बैठे हैं, प्रशांत सर भी आज पढ़ाने के मूड में नहीं हैं, वे सभी का हालचाल ले रहे हैं, और अपने बारे में भी बता रहे हैं, कुछ नए स्टूडेंट्स भी आ गए हैं, उनका परिचय भी पूंछ रहे हैं। एम.ए. के पाठ्यक्रम और किताबों के बारे में भी चर्चा हो रही है, किस लेखक की कौन सी किताब लेनी है, उसके बारे में भी बता रहे हैं। प्रशांत सर की पढ़ाने व बात करने की स्टाइल सबको अच्छी लगती है, उनमे किसी प्रकार का कोई ईगो नहीं है और काफी हेल्पिंग नेचर के हैं। वे स्टूडेंट्स के साथ घुल-मिल जाते हैं, स्टूडेंट्स की जिज्ञासा को संतुष्ट करने का प्रयास करते हैं।

क्लास में शागिर्द का ध्यान प्रशांत सर की तरफ कम कामिनी की ओर ज्यादा है, परन्तु उसे ऐसी एक्टिंग करनी है कि किसी को कोई शक न हो, कि उसके मन में क्या चल रहा है। जब प्रशांत सर ब्लैकबोर्ड में कुछ लिखने लगते हैं, तब शागिर्द की नजरें कामिनी की तरफ मुड जाती हैं, जैसे ही वो स्टूडेंट्स की ओर मुखातिब होते हैं वैसे ही शागिर्द प्रशांत सर की तरफ देखने लगता है। काफी अरसे बाद शागिर्द आज कामिनी के इतने करीब बैठा है, वह अपनी इक्छा जाहिर करने व अपनी अफ़सा को रिझाने का कोई अवसर नहीं छोड़ना चाहता। आज वह कामिनी के इतने करीब है कि कुछ शरारत करने का मन कर रहा है, लेकिन डर भी लग रहा है, कहीं उसने प्रशांत सर से शिकायत कर दी तो उसकी अच्छी खासी खिचाई हो जाएगी, अपमानित होना पड़ेगा वो अलग से, बाद में उसके क्लासमेट भी उसे शर्मिंदा करने से नहीं चूकेंगे। शागिर्द के मन में बहुत उथल-पुथल चल रही है। प्रशांत सर ब्लैकबोर्ड में कुछ किताबों व उनके लेखकों के नाम लिख रहे हैं, सभी लोग उन्हें नोट कर रहे हैं। अपनी हुस्नआरा को देखकर शागिर्द का मन विचलित हो रहा है, कुछ फुराफात करने का मन कर रहा है, उसने अपने पैर आगे की ओर फैला लिए हैं जिससे कि उसके पैर

कामिनी के पैरों तक पहुँच सकें। अभी उसके पैर कामिनी के पैरों तक नहीं पहुँच पा रहे हैं। शागिर्द धीरे-धीरे अपने पैर आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहा है, लेकिन डर के मारे उसकी हालत भी ख़राब हो रही है। शागिर्द इस सुअवसर को यों ही नहीं जाने देना चाहता, वह हिम्मत करके पैर थोड़ा और आगे बढाता है। अब वह आसानी से टच कर सकता है, लेकिन हिम्मत नहीं पड़ रही। जो होगा देखा जायेगा, ऐसा सोचकर उसने कामिनी के पैरों को टच कर ही दिया। कामिनी की ओर से कोई रिएक्शन नहीं हुआ, शागिर्द को तसल्ली हुई और खैर मनाते हुए गहरी सांस ली। अब शागिर्द की हिम्मत और बढ़ गई, उसने अबकी बार अच्छी तरह से कई बार अपने पैर से कामिनी के पैर हिलाये, उसने सोचा कामिनी कुछ कहेगी तो वह सॉरी बोल देगा और कह देगा की गलती हो गई। शुक्र है कि कामिनी ने इस बार भी कोई रिएक्शन नहीं दिया और न ही किसी से कोई शिकायत की। शागिर्द मन ही मन बहुत खुश था, आज उसे बहुत बड़ी उपलब्धि हासिल हो गई। किसी लड़की से कोई ऐसी शरारत करे और वह शिकायत न करे, ये उसके लिए बहुत बड़ी कामयाबी थी, नहीं तो इतनी सी बात पर तो बवाल मच सकता था। क्लास समाप्त होने के पश्चात शागिर्द काफी देर तक बाहर पार्क के पास खड़ा रहा, लेकिन किसी ने भी उसके पास आकर उससे कुछ नहीं कहा, न ही कोई शिकायत की, यह उसके लिए और अच्छी बात थी।

शागिर्द का मन आज बहुत प्रसन्न था, उसने दो बार अच्छे से कामिनी के पैर टच किये, लेकिन उसने किसी से कोई शिकायत नहीं की, अब शागिर्द के दिल में कामिनी के प्रति अच्छे-अच्छे विचार आने लगे, अब यह कहा जा सकता है कि कामिनी के दिल में भी कहीं न कहीं शागिर्द के प्रति चाहत है, इसीलिए शायद अब उसका रुख शागिर्द के प्रति सकारात्मक हो रहा है। आज एम.ए. की क्लास का पहला दिन था, अब समय-समय पर क्लास चलते ही रहेंगे, कामिनी भी साथ में क्लास अटेंड करेगी, अब वह कामिनी की ओर से काफी आश्वस्त था। कामिनी ने घर पर जो धमकी दी थी, शायद वह उसकी मजबूरी रही होगी, अब शागिर्द उन पुरानी बातों को भूलना चाहता है। सबसे बड़ी बात यह थी कि आज उसने शागिर्द की कोई

शिकायत नहीं की। शागिर्द मन ही मन प्रफुल्लित हो रहा है और सोच रहा है कि आज तो शुरुआत हुई है, आगे वह मौका पाकर उससे बात करने का प्रयास करेगा, लेकिन इस प्रकार टच करने की शरारत वह बार-बार नहीं करेगा, यह अच्छी बात नहीं है। अब शागिर्द अपने प्यार को लेकर काफी आशावान हो गया है, आज की सफलता से शागिर्द के मन में लड्डू फूटने लगे हैं। आज पहली बार वह इतना खुश हुआ है, अब तक तो वह डांट ही खा रहा था।

एम.ए. के क्लासेज रोजाना नहीं चलते हैं, किस दिन किसकी क्लास लगेगी, यह नोटिस ऑफिस में एक सप्ताह पहले ही लगा दी जाती है। क्लासेज शुरू हुए लगभग एक महीना हो गया है, अब तक दस क्लासेज लग चुकी हैं, शागिर्द कोई भी क्लास मिस नहीं करता है, इसलिए नहीं की उसे एम.ए. की पढाई बहुत अच्छे से करनी है, बल्कि इसलिए कि उसे कामिनी का इंतजार रहता है। कामिनी ने सिर्फ पहला क्लास अटेंड किया था, उसके बाद वह क्लास अटेंड करने नहीं आ रही है। एक दो बार वो नहीं आयी तो शागिर्द ने सोचा कि शायद कोई बात हो गई होगी, या तबियत ख़राब हो गई होगी, या फिर किसी एग्जाम की तैयारी कर रही होगी। लेकिन अब तो पूरा महीना हो गया है, क्लास में कई चैप्टर भी पढ़ा दिए गए हैं, आनंद सर भी क्लास शुरू कर दिए हैं, अब तो उसे आना चाहिए। कहीं ऐसा तो नहीं कि शागिर्द की शरारत की वजह से ही उसने यूनिवर्सिटी आना छोड़ दिया हो, नहीं...नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, वो ऐसा नहीं कर सकती, कोई बहुत बड़ी बात तो हो नहीं गई, फिर, शागिर्द ने यह भी सोचा है कि अब वह ऐसी हरकत नहीं करेगा।

शागिर्द लगातार यूनिवर्सिटी आ रहा हैं, क्लास अटेंड कर रहा हैं, किन्तु कामिनी का कुछ अता-पता नहीं हैं। शागिर्द के परिचय में ऐसा कोई नहीं हैं जो उसकी मदद कर सके, कामिनी के बारे में कुछ बता सके। उसका मन जितना खुश था उससे कई गुना ज्यादा दुखी हो गया है। अब उसे इत्मीनान हो गया है कि उसकी शरारत की वजह से ही वह यूनिवर्सिटी

नहीं आ रही है, उसे अब पछतावा भी हो रहा है कि काश! उसने यह गलती न की होती, तो कम से कम कामिनी क्लास अटेंड करने तो आती। यदि कामिनी उसकी वजह से यूनिवर्सिटी नहीं आ रही हैं, तो वह क्लास छोड़ने को तैयार है, लेकिन एक बार वह अपने मन की बात तो मुझे बता देती। मै उससे इस गलती के लिए माफ़ी मांग लेता, आइंदा ऐसी गलती न करने का आश्वाशन दे देता। अब तो लगभग दो महीने हो गए हैं, लेकिन कामिनी क्लास अटेंड करने नहीं आयी, इससे यह तस्दीक हो गया कि कामिनी शागिर्द की वजह से ही यूनिवर्सिटी नहीं आ रही है। कामिनी शागिर्द की हरकत से खुश नहीं, बल्कि दुखी हो गई, उसने शागिर्द से तंग आकर ही क्लास छोड़ा है, एम.ए. की पढ़ाई भी छोड़ दी। शागिर्द का मन बहुत हैरान और विचलित है, वह सोच रहा है कि कैसे कामिनी से मुलाकात हो और वह उससे माफ़ी मांग ले, उसने शागिर्द की वजह से पढ़ाई छोड़ी ये बात उसको बहुत तकलीफ दे रही है, वह बेबस है, सोच नही पा रहा है, क्या करे, क्या न करे।

सत्रह



शागिर्द का दिल बहुत बेचैन है, कि वह अपनी जान-ए-मन का दीदार कैसे करे, वह उसके करीब कैसे पहुंचे। उसका दिमाग काम नहीं कर रहा है, दिन पर दिन उसकी उलझन बढ़ती जा रही है। एक दिन शागिर्द बिना कुछ सोचे-विचारे साइकिल उठाता है और मीरापुर की तरफ चल देता है। सोचते-सोचते चलते-चलते वह कामिनी के घर के निकट पहुँच गया, लेकिन घर तक जाने की हिम्मत नहीं पड़ रही है, कोई मिल गया तब क्या होगा। शागिर्द ने हिम्मत बाँधी और सोचा कि वह तेज गति से घर के गेट के सामने से आगे निकल जायेगा और दूसरी गली से बाहर निकल जायेगा। शागिर्द ने ऐसा ही किया, वह घर के सामने से होकर गली में आगे निकल गया। जाते वक्त उसने देखा कि एक रिक्से वाला घर के गेट के बाहर खड़ा था, शागिर्द ने सोचा ये रिक्से वाला शायद उसकी कुछ मदद कर सके, क्यों न उससे कुछ बात की जाये, यह सोचकर शागिर्द कुछ दूर जाकर लौट आता है एवं रिक्से वाले के पास खड़ा हो जाता है, कोई पूंछेगा तो वह कह देगा कि वह बेरोजगार है और स्कूल में पढ़ाने का कार्य मिल जाये, इसीलिए यहाँ आया है। कामिनी का घर बहुत बड़ा है, घर में एक कान्वेंट स्कूल चलता है, घर के बाहर इतनी जगह है कि दस-बारह रिक्शे आराम से खड़े हो सकते हैं, शायद यह रिक्शे वाला स्कूल के बच्चों को ले जाने के लिए खड़ा हो, क्यों न इसे बात की जाये।

शागिर्द रिक्शेवाले से पूंछता है---ये मकान बहुत बड़ा है, किसका है ?

रिक्शे वाला---यह कर्नल साहेब का मकान है, रिटायर्ड कर्नल हैं, इनके घर में कक्षा आठ तक का कान्वेंट स्कूल भी चलता है, इनका एक और स्कूल है, मॉडर्न गर्ल्स इण्टर कॉलेज, इनकी पत्नी वहां की प्रिंसिपल हैं।

रिक्शे वाले से एक बात पूंछो तो चार बात बताता है, इससे शागिर्द को और अधिक जानकारी मिल जा रही है।

शागिर्द---इनका दूसरा स्कूल- मॉडर्न गर्ल्स इण्टर कॉलेज कहाँ पर है ?

रिक्शेवाला---सिविल लाइन में मेडिकल कॉलेज रोड पर है।

शागिर्द---आप यहाँ क्या करते हो ?

रिक्शेवाला---स्कूल के बच्चों की छुट्टी का इंतजार कर रहा हूँ, डेढ़ बजे छुट्टी होगी, तब बच्चों को घर छोड़ने जाना है। बच्चों को रोज सुबह स्कूल छोड़ता हूँ, फिर दोपहर में छुट्टी होने पर घर छोड़ता हूँ, यही मेरी नौकरी है। आप कुछ काम से आये हैं ?

शागिर्द---हाँ, मै भी स्कूल की छुट्टी का इंतजार कर रहा हूँ, छुट्टी के पश्चात् मुझे स्कूल के प्रिंसिपल से मिलना है।

शागिर्द रिक्शेवाले से और अधिक बातें नहीं करता है, कहीं उसे कुछ शक न हो जाये। एक पल वहां रूककर, रिक्शेवाले से--अभी आता हूँ, कहकर गली के बाहर चला जाता है और एक गहरी साँस लेता है, फिर सोचता है कि चलो कुछ जानकारी तो मिली, कामिनी के घर वालों के विषय में। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसे एक नए स्कूल के बारे में जानकरी मिली, जहाँ कामिनी की माँ प्रिंसिपल है। अब वह वहां के स्टाफ से मिलकर और अधिक जानकारी कर लेगा, आज जाना ठीक नहीं है, फिर किसी दिन जाकर पता किया जायेगा, यह सोचकर शागिर्द घर चला जाता है।

आज रविवार का दिन है, रविवार के दिन थोड़ा-बहुत समय मनोरंजन के लिए निकल ही आता है, कुछ काम जो अन्य दिनों मे नहीं हो

पाते हैं वो संडे को पूरा करने का प्रयास किया जाता है। शागिर्द सूरज के कमरे जाकर कुछ गपशप करने एवं मन बहलाने की सोच ही रहा था कि अचानक उधर से सूरज शागिर्द के कमरे आ गया।

सूरज---नमस्कार शागिर्द भाई !

शागिर्द---नमस्कार सूरज भाई, अच्छा किया आप आ गए, नहीं तो मै आने ही वाला था।

सूरज---बहुत दिन से बातचीत नहीं हुई तो मैने सोचा कि आज रविवार है, कुछ देर बैठ लिया जाये, कुछ तफरीह कर ली जाये।

शागिर्द---हाँ यार सूरज, यही तो मै भी सोच रहा था, मेरा भी मन काफी बोझिल हो रहा था, सोच रहा था थोड़ा मन बहला लिया जाये।

सूरज---और बताओ शागिर्द, क्या चल रहा हैं ? पढाई-लिखाई कैसी चल रही है ?

शागिर्द---सब ठीक है यार, एम.ए. की क्लासेज चालू हो गई हैं, सप्ताह में तीन दिन क्लास चलती हैं। आगे का मुख्य उद्देश्य तो नौकरी की तैयारी करना ही है, लेकिन कभी-कभी एम.ए. की क्लास अटेंड करता रहूँगा। एग्जाम के दो महीने पहले ठीक से पढ़ लूंगा तो पास हो जाऊंगा, लेकिन किसी भी नौकरी की तैयारी के लिए तो बहुत सारे सब्जेक्ट्स पढ़ने पड़ेंगे।

सूरज---हाँ यार, नौकरी के बिना हम लोग को कौन पूंछने वाला है, नौकरी ही हमारा भविष्य है। मेरे इंजीनियरिंग के डिप्लोमा कोर्स का एक साल बचा है, उम्मीद है कि कैंपस इंटरव्यू में ही किसी कंपनी में मेरा सेलेक्शन हो जायेगा।

शागिर्द---ये तो अच्छी बात है, लेकिन हम लोग तो आर्ट साइड वाले हैं, बिना अच्छी तैयारी के नौकरी कहाँ मिलने वाली। मक्खन का क्या इरादा है ?

सूरज---वो क्या करेगा ? आर्ट साइड में जिसकी इंग्लिश-मैथ अच्छी नहीं है उसे तो नौकरी मिलना बहुत मुश्किल है। आपकी इंग्लिश-मैथ तो काफी अच्छी है, जबकि मक्खन की दोनों जीरो हैं।

शागिर्द---तब मक्खन क्या करेगा ?

सूरज---शायद बी. एड. करने की सोच रहा है।

शागिर्द---उसके लिए यही ठीक है।

सूरज तबस्सुम फरमाते हुए---कामिनी मैडम के क्या हाल चाल हैं ?

शागिर्द---कामिनी मैडम का कुछ पता नहीं है, शायद वो भी तैयारी कर रही है।

शागिर्द कामिनी के विषय में किसी को ज्यादा कुछ बताना नहीं चाहता, क्योंकि प्यार में बहुत कम लोग ही किसी की मदद कर पाते हैं, प्यार मे सारा संघर्ष स्वयं की करना पड़ता है, सारे रंजो-गम स्वयं ही सहन करने पड़ते हैं। किसी को अपना गम बताने का मतलब हंसी का पात्र बनना है। सूरज भी कभी-कभी शागिर्द के प्यार का मजाक बनाता है, मक्खन तो और ज्यादा मखौल उडाता है, वह तो शागिर्द को कभी मजनू तो कभी देवदास कहकर मजाक उडाता रहता है। इसीलिए शागिर्द मक्खन से अपने प्यार की कोई बात शेयर नहीं करता है।

सूरज कुछ देर बैठने के बाद अपने रूम चला जाता है, उसे भी अपनी पढाई करनी है, आज तो कपडे भी धुलने और प्रेस करने हैं। शागिर्द को भी कई सारे रविवारीय कार्य करने हैं, इसके बाद पढ़ाई भी करनी है। शागिर्द प्रतिदिन कई घंटे पढ़ाई करता है, लेकिन उसके दिमाग में कुछ घुसता नहीं है, क्योंकि कामिनी जी ने दिमाग पर कब्ज़ा कर रखा है। कामिनी के चक्कर में उसका पढ़ना, न पढ़ना सब बराबर हो जाता है। कामिनी की याद के आगे उसे और कुछ याद ही नहीं रहता। कामिनी के बिना शागिर्द की

जिंदगी बिना पानी के मछली की तरह हो गई है। इसीलिए शागिर्द अपनी जिंदगी को पाने के लिए हर पल बेचैन रहता है।

आज मंगलवार का दिन है, शागिर्द मॉडर्न इण्टर कॉलेज की खोज में निकल पड़ा है। सिविल लाइन में मॉडर्न स्कूल खोजने में उसे बहुत मेहनत नहीं करनी पड़ी। चूँकि स्कूल का मुख्य गेट मेन रोड से थोड़ा हटकर है, इसलिए एक-दो लोगों से पूंछना पड़ गया। शागिर्द को पता है कि कामिनी की माँ-कविता वर्मा इस कॉलेज की प्रिंसिपल हैं, उसे सिर्फ कामिनी के बारे में पता करना है कि वह कहाँ है, क्या कर रही है। कहीं ऐसा तो नहीं कि पढ़ाई-लिखाई छोड़कर इसी स्कूल में पढ़ाने लगी हो, या फिर घर पर बैठकर किसी एग्जाम कि तैयारी कर रही हो। इसलिए वह वहां के चपरासी से कुछ बात चीत करेगा, शायद उससे कुछ जानकारी मिल सके। छोटे पद पर कार्यरत कम पढ़े-लिखे कर्मचारी से कोई बात पूंछो तो वह आसानी से बता देता है, ज्यादा तीन-पाँच नहीं करता। इसलिए शागिर्द को उम्मीद है कि उससे कुछ न कुछ जानकारी जरूर मिल जाएगी।

शागिर्द अपनी साइकिल स्कूल गेट के बाहर खड़ी कर देता है, फिर वह गेट के अंदर चला जाता है। विद्यालय कैंपस में खुली जगह पड़ी है, जहाँ पर विद्यालय का स्टाफ अपने वाहन खड़े करते हैं, उसके पश्चात् विद्यालय की मुख्य ईमारत है। मुख्य ईमारत में एक लम्बा सा बरामदा है, बरामदे के दाएं साइड में प्रिंसिपल का ऑफिस है, प्रिंसिपल ऑफिस के बाहर एक दुबला-पतला अधेड़ उम्र का व्यक्ति स्टूल पर बैठा है। शागिर्द ने अंदाजा लगा लिया कि वही व्यक्ति प्रिंसिपल का मुलाजिम ही होगा। शागिर्द उस व्यक्ति को इशारा करके बाहर बुलाता है। शागिर्द ने उसे नमस्कार किया, पूंछने पर उस व्यक्ति ने अपना नाम- हीरालाल बताया।

हीरालाल---हाँ भई, बताइये, क्या काम है, किससे मिलना है ?

शागिर्द---कोई खास काम नहीं है, बस एक एडमिशन करवाना है, उसी के विषय में थोडी जानकारी चाहिए, वैसे यहाँ की प्रिंसिपल कौन हैं ?

हीरालाल---कविता वर्मा हैं यहाँ की प्रिंसिपल।

शागिर्द---मीरापुर रहती हैं ?

हीरालाल---हाँ, मीरापुर रहती हैं, रिटायर्ड कर्नल साहेब की पत्नी हैं, मीरापुर में भी इनका एक छोटा सा कान्वेंट स्कूल चलता है।

शागिर्द अपने पॉइंट पर आता हैं---इनके बच्चे कितने हैं ?

हीरालाल---मुझे कन्फर्म तो पता नहीं, इनकी एक छोटी बेटी है कामिनी, वह पी. सी. एस. की तैयारी कर रही है।

शागिर्द---पी सी एस की तैयारी ?

हीरालाल---हाँ, हनुमान मंदिर के बगल में कोचिंग पढ़ने जाती हैं।

शागिर्द---अच्छा !

शागिर्द हीरालाल की अंतिम बात सुनकर मन ही मन काफी खुश होता है, आखिर उसे कामिनी का पता मिल ही गया। वह यही तो जानना चाहता था कि घर के बाहर कामिनी कहाँ मिल सकती है। शागिर्द हीरालाल से हाँथ मिलकार वहां से विदा लेता है। अच्छा भाई, हीरालाल जी, मै चलता हूँ, पुनः जल्दी ही आपसे मुलाकात होगी।

हीरालाल---ठीक है भाई।

शागिर्द ने यह तो पता लगा लिया कि कामिनी मैडम हनुमान मंदिर के बगल में कोचिंग पढ़ने जाती है। हनुमान मंदिर सिविल लाइन चौराहे के पास है, शागिर्द को यह भी पता है कि हनुमान मंदिर के बगल में एक ही कोचिंग सेंटर है- कैरियर कोचिंग सेंटर। अब शागिर्द के दिमाग में एक ही बात चल रही है कि वह कामिनी के पास कैसे पहुंचे, कैसे उससे बात करे। कोचिंग क्लास में कई स्टूडेंट्स होंगे, टीचर भी होंगे, क्लास में डिस्टर्ब करना ठीक नहीं है। शागिर्द को एक उपाय समझ में आया कि वह भी कोचिंग में

एडमिशन ले ले, इसके बहाने वह क्लास अटेंड करेगा, यदि कामिनी होगी, तो पता चल जायेगा। शागिर्द कैरियर कोचिंग जाता है, वहां जाकर कोचिंग संचालक से संपर्क करता है, उसे किसी तरह क्लास में बैठने की अनुमति चाहिए। संचालक से बात-चीत होती है, एडमिशन के पहले शागिर्द को एक सप्ताह के फ्री ट्रायल की अनुमति मिल गई, अब शागिर्द एक सप्ताह तक बिना फीस दिए क्लास अटेंड कर सकता है, यदि उसे पढ़ाई अच्छी लगे तो आगे वह एडमिशन ले सकता है, नहीं तो कोई बात नहीं। आज कल कोचिंग का बाजार बहुत फल फूल रहा है, गनीमत है कि शागिर्द को एक सप्ताह की फ्री ट्रायल मिल गई, नहीं तो ज्यादातर कोचिंग वाले यही कहते हैं कि पहले कुछ फीस जमा करो उसके बाद क्लास अटेंड करो।

कामिनी को देखे बहुत दिन हो गए हैं, शागिर्द अब और इंतजार नहीं कर सकता, उसने निश्चय किया कि वह कल ही क्लास अटेंड करने जाएगा। शागिर्द अगले दिन क्लास के टाइम कोचिंग पहुँच गया, उसने एक नोट बुक ले ली है, वह क्लास में पीछे जाकर बैठ जाता है। पढाई किसे करनी है, उसे तो सिर्फ कामिनी की तलाश है, यद्यपि वह क्लास में मन लगाकर पढ़ाई करता है, पढ़ाई गई सामग्री को वह इंग्लिश में नोट करता है। कामिनी क्लास में आगे की लाइन में बैठती है, शागिर्द जानबूझकर कामिनी से दूर बैठता है, कहीं वह यह न समझ बैठे कि शागिर्द पहले की तरह पुनः उससे शरारत करेगा। कोचिंग में पहला पीरियड सामान्य ज्ञान का है, आकाश सर सामान्य ज्ञान पढ़ाते हैं। जब तक आकाश सर हिंदी में लेक्चर दे रहे होते हैं, तब तक शागिर्द चुपचाप सुनता रहता है, लेक्चर पूरा होने के बाद शागिर्द उसे इंग्लिश में नोट करता है। आकाश सर को लगा कि ये लड़का ठीक से पढाई नहीं कर रहा है, तो उन्होंने शागिर्द को खड़ा कर दिया और डांटकर कहने लगे कि ठीक से पढ़ना हो तो पढ़ो वरना क्लास के बाहर जाओ। आकाश सर की डांट को पूरा क्लास देख और सुन रहा था, कामिनी भी पीछे मुड़कर देखने लगी। शागिर्द को यह सुनकर ख़राब लगा, आकाश सर ऐसा क्यों कह रहे हैं, जबकि वह तो मन लगाकर पढाई कर रहा है और नोट भी कर रहा है, वह कामिनी की तरफ भी नहीं

देख रहा है। तब तक शागिर्द के बगल में बैठा एक लड़का खड़ा हो गया और आकाश सर से कहने लगा--नहीं सर, ये लड़का पढ़ने में बहुत ब्रिलियंट है, चूँकि ये इंग्लिश में नोट करता है इसलिए थोड़ा आगे पीछे हो जाता है, तब आकाश सर ने तुरंत सॉरी बोला। शागिर्द को एक पल लगा की आज उसे बिना किसी गलती के डांट पड़ी, यह उसका अपमान है, किन्तु बगल में बैठे एक अनजान लड़के ने उसकी इज्जत बचा ली।

शाम को पांच बजे कोचिंग के क्लास समाप्त हो जाते हैं, सभी स्टूडेंट्स बाहर चले जाते हैं, शागिर्द भी सामान्य गति से बाहर जाता है, बाहर जाकर वह चारो तरफ कामिनी को ढूंढता है, लेकिन वह कहीं दिखाई नही पडी। शागिर्द को बड़ा ताज्जुब हुआ कि इतने जल्दी वह किधर से कहाँ निकल गई, वह एक बार फिर सीढ़ी चढ़कर अंदर क्लासरूम तक गया कि शायद ऊपर ही कहीं हो, लेकिन वहां नहीं थी, वह रिसेप्शन रूम भी गया, लेकिन वहां भी नहीं मिली। शागिर्द समझ गया कि उसके डर की वजह से ही कामिनी क्लास समाप्त होने के कुछ मिनट पहले बाहर निकल गई और रिक्शे मे बैठकर तुरंत निकल गई, ताकि शागिर्द उसके साथ कोई हरकत न कर सके, या वह उसके रिक्शे का पीछा न कर सके। यह भी हो सकता है कि वह किसी दूसरे रास्ते से बाहर निकल गई हो, जिसे शागिर्द न जानता हो। कामिनी के इस व्यवहार से शागिर्द को बहुत तकलीफ हुई, लेकिन उसे इस बात की खुसी है कि उसे कामिनी का ठिकाना मिल गया, अब कभी न कभी बात-मुलाकात हो ही जाएगी। शागिर्द अब कोचिंग के अंदर कोई ऐसी वैसी हरकत नहीं करेगा, जब कभी वह बाहर मिलेगी तो वह बात करने का प्रयास करेगा। दूसरे दिन भी शागिर्द कोचिंग आता है, दूसरे दिन भी कामिनी उसे चकमा देकर किधर से निकल गई, वह देख नहीं पाया।

पहले दिन कामिनी चुपके से छुपकर निकल गई शागिर्द को बुरा नहीं लगा, किन्तु जब दूसरे दिन भी वह इसी तरह छुपकर निकल गई तो उसका मूड ख़राब होने लगा। अब तो वह शालीनता से क्लास अटेंड कर रहा है, कामिनी के पीछे सटकर भी नहीं बैठ रहा है, कोई शरारत करने की भी नहीं सोच रहा है, फिर वह चकमा देकर क्यों निकल जा रही है। शागिर्द

उसकी एक्टिविटी का मतलब नहीं समझ पा रहा है, आखिर वह क्या चाहती है, इस तरह छुपकर क्यों निकल जा रही है, उसे तो केवल एक बार उससे बात करनी है, उसका क्या इरादा है उसे स्पष्ट बता दे, वह पीछा करना बंद कर देगा। आखिर एक बार उससे बात कर लेगी तो उसका क्या बिगड़ जायेगा, उसके मन में जो है वह बता दे। वह उससे प्यार नहीं करती, यह भी प्यार से बता दे, उसक भी संदेह दूर हो जायेगा, सारी कहानी ख़त्म हो जाएगी, वह उसे परेशान करना बंद कर देगा। यह सब सोचते-सोचते शागिर्द अपने घर चला जाता है।

शागिर्द शाम को खाना खाकर सोने के लिए लेट जाता है। आज उसका अंतर्मन बहुत गमगीन है, वह समझ नहीं पा रहा है कि क्या करे, क्या न करे। कामिनी के मन में उसके प्रति क्या है, क्या नहीं है, वह समझ नहीं पा रहा है। अभी तक तो लगता था कि शायद वह उसे चाहती है, लेकिन वह कुछ कह नहीं पा रही है, अथवा उचित अवसर की तलाश कर रही है, लेकिन अब उसके सारे भ्रम टूटते नजर आ रहे हैं। घर पर उसका कठोर व्यवहार, उसकी धमकी भरी बातें, रुख न मिलाना, बात करने का तनिक भी प्रयास न करना, शागिर्द की किसी भी एक्टिविटी को सपोर्ट न करना, क्लासमेट से शिकायत करना, आदि का मतलब वह क्या समझे। दूसरी तरफ शागिर्द को मदहोशी नजरों से देखना, रिक्शे का पीछा करते-करते घर तक पहुँचने पर घर वालों से शिकायत न करना, क्लास में पैर टच करने पर किसी से शिकायत न करना, कोचिंग में चुपके से चोर दरवाजे से निकल जाना, आदि को वह क्या समझे। कभी-कभी ऐसा लगता है कि वह शागिर्द के प्यार, उसकी गरीबी, उसके भोलेपन और उसकी अच्छाइयों का नाजायज फ़ायदा उठा रही है। बिना सोचे-बिचारे शागिर्द ने उसे अपना बना लिया, बिना किसी लोभ-लालच के उसे अपना दिल दे बैठा। अब वही दिल उसे रह-रह कर तड़पा रहा है।

अठारह

बेकसी व निराशा में डूबा व्यक्ति इतना व्यथित हो जाता है कि उसे लगने लगता है कि उसका जीना बेकार है, वह मृत्यु के बेहद करीब पहुँच जाता है, जीवन-मरण के बीच का फासला समाप्त हो जाता है—

निराशा भी क्या चीज है, जिसका कोई पर्याय नहीं,

आशा भी क्या चीज है, जे बिन कोई अध्याय नहीं,

वह आशा ही थी, किसी को किसी से,

जिसने पहना दिया था, मेरे सिर में सेहरा,

यह निराशा ही है, किसी को किसी से,

जिसने छीन लिया है मुझसे, मेरा हंसमुख चेहरा।

वह भी एक दिन था,

क्या रुआब थे मेरे,

क्या ख्वाब थे मेरे,

क्या जवाब थे मेरे,

क्या शबाब थे मेरे,

यह भी एक दिन है,

क्या हिसाब हैं मेरे,

क्या किताब हैं मेरे,

दुःख-ज्वर से जकड़ा हूँ,

बस, यही मिजाज हैं मेरे।

निराशा मनुष्य को अंदर से तोड़ कर रख देती है। प्यार वो मंजिल है जिसे पाने के लिए अपना सबकुछ न्योछावर करना पड़ता है। दुःखी और कुंठित व्यक्ति अपना हरकुछ गवाने की जिद्द कर बैठता है। जिसके पास धन-दौलत नहीं, वह अपनी हयात हथेली पर रखकर निकल पड़ता है, अपने प्यार की मंजिल की ओर।

शागिर्द के पास धन-वैभव तो है नहीं, दिल था तो अफ़सा बेगम कामिनी चुरा कर ले गई, अब उसके पास खोने को केवल उसकी काया ही बची है, परिस्थतियाँ भी कुछ ऐसी बन रहीं हैं कि शागिर्द को अपनी जिंदगानी की क़ुरबानी देनी पड़ सकती है। यदि वह कामिनी को पाने के लिए, या उससे बात करने के लिए जिद्द करता है तो निश्चित तौर पर उसकी जान पर आन पड़ेगी। अब निर्भर करता है कि शागिर्द किस हद तक चला जाता है, अपने प्यार को हासिल करने के लिए।

शागिर्द कभी किसी चीज के लिए जिद्द नही करता है, वह बेतकल्लु, भोला-भाला एवं कम से कम में संतुष्ट रहने वाला इंसान है, लेकिन उसकी यह इकतरफा मोहब्बत शायद उसे कयामत तक लेकर जायगी। खुद-फ़रामोश शागिर्द ने निश्वार्थ भाव से मन ही मन कामिनी को अपना सबकुछ बना लिया, धीरे-धीरे उसका बेशकीमती दिल दूसरे के पास चला गया। कामिनी की दिलकश अदाएं उसके दिल को लूटकर ले गईं, वह कुछ न कर पाया। शागिर्द अपनी जाने-जहां, जाने-जिगर, हुश्न की मल्लिका को पाने के लिए एक आखिरी प्रयास करेगा, इस दृढ संकल्प के साथ उसे देर रात बमुश्किल नींद आ जाती है, और वह सो जाता है।

सुबह सात बजे नींद खुलते ही शागिर्द का दिलो-दिमाग फिर कामिनी के पास पहुँच जाता है, आज उसे कोचिंग जाना है और कामिनी पर नजर रखनी है, आज वह उसके नजदीक बैठेगा, और जैसे ही वह उठकर निकलेगी वह उसके पीछे-पीछे निकल लेगा। आज शागिर्द को जिद्द सवार हो गई है, आज वह कामिनी का पीछा नहीं छोड़ेगा, चाहे उसे उसके घर तक क्यों न जाना पड़े, चाहे उसे उसके माँ-बाप से क्यों न बात करनी पड़े।

शागिर्द चार बजे कोचिंग पहुँच जाता है, डेढ़ घंटे की क्लास है, कामिनी आगे वाली लाइन मे बैठी है, शागिर्द भी जस्ट उसके पीछे वाली सीट में बैठ जाता है, जिससे कि क्लास समाप्त होने पर वह तुरंत कामिनी का पीछा कर सके। आज शागिर्द वह सबकुछ करेगा जो प्यार में जायज होगा, उसे जिस हद तक जाना पड़ेगा, वह जायेगा। यदि आज उसे अपनी जान की बाजी लगानी पड़ेगी तो भी वह लगाएगा, आज उसे अंतिम और अडिग प्रयास करना है।

आकाश सर के आने के पहले सभी स्टूडेंट्स क्लास मे बैठ जाते हैं। आकाश सर आते हैं, डेढ़ घंटे तक लेक्चर देते हैं। आज शागिर्द पढ़ने-लिखने के मूड में बिलकुल नहीं है, उसे तो सिर्फ पढाई का अभिनय करना है। कामिनी को कुछ शंका हो रही है कि आज शागिर्द उसके बिलकुल निकट क्यों बैठा है, वह यह भी समझ रही है कि आज शागिर्द की नजरों से बच कर निकलना बहुत मुश्किल है। आकाश सर का क्लास समाप्त हो गया है, साढ़े पांच बज चुके हैं, कामिनी अपनी सीट से उठकर तुरंत क्लासरूम से बहार निकल जाती है, शागिर्द भी तुरंत उठकर उसका पीछा करता है। कामिनी मुख्य रास्ते से बाहर जाने के बजाय पीछे वाली पतली सीढ़ी से उतरकर साइड के रास्ते से कोचिंग के बाहर निकलती है, आज शागिर्द भी उसी रास्ते से उसके पीछे-पीछे चलकर बाहर आता है। बाहर आकर कामिनी एक महिला से बात करती है, वह महिला साड़ी पहने हुए है, उसकी उम्र लगभग पैंतीस वर्ष होगी। वह महिला पीछे मुड़कर एक बार शागिर्द की तरफ देखती है, फिर दोनों रिक्शे पर बैठकर चल देती हैं।

शागिर्द ने बिना देरी किये अपनी साईकिल तैयार कर ली है, वह कामिनी और उसकी महिला साथी पर नजर बनाये हुए है, जैसे ही रिक्शे वाला कुछ दूर पहुँचता है वह उसके पीछे-पीछे चल देता है। कामिनी समझ चुकी है कि शागिर्द आज कुछ न कुछ शरारत जरूर करेगा, उसे डर है कि शागिर्द कहीं रास्ते में कोई शरारत न करे, लेकिन उसे तस्सल्ली है कि आज वह रिक्शे में अकेली नहीं है। शागिर्द ने भी निश्चय कर लिया है कि आज वह रास्ते में डिस्टर्ब नहीं करेगा, न ही रिक्शा रोकने का प्रयास करेगा, यदि

कामिनी रास्ते में रिक्शा रोककर बात करना चाहेगी तो वह बात कर लेगा। लेकिन कामिनी शायद यही सोच रही है कि शागिर्द रास्ते में कोई हरकत न करे, घर पहुँचने पर जो होगा निपट लिया जायेगा। शागिर्द भी आज उसके घर तक जाने को मजबूर है, आज उसे जिंदगी की जंग लड़नी है, आज उसे जीने-मरने का फैसला करना है।

रिक्शे वाला अपनी गति से मीरापुर की ओर चला जा रहा है, शागिर्द भी आराम से दूरी बनाकर उसका पीछा कर रहा है। साड़ी वाली महिला बार-बार पीछे मुड़कर शागिर्द को देखती जा रही है। धीरे-धीरे रिक्शा कामिनी के घर के गेट पर पहुँच गया। कामिनी ने रिक्शे से उतरकर शागिर्द को साड़ी वाली महिला के बारे में बताया कि ये मेरी मौसी हैं, इनका नाम नीलम है, साथ ही अपनी मौसी को बताया कि ये वही लड़का है जिसके बारे मे मैने आपको बताया था। शागिर्द ने उससे नमस्ते किया, तो नीलम ने शागिर्द से कहा, बताओ बेटा क्या बात है ? आओ घर में बैठकर बात कर लेते हैं। शागिर्द ने कहा, ठीक है मौसी जी।

शागिर्द अपनी साईकिल गेट के अंदर दीवाल के सहारे खड़ी कर देता है एवं कामिनी व मौसी के साथ घर में ऊपर फर्स्ट फ्लोर पर जाता है। ऊपर ऑफिस रूम में एक बड़ी टेबल एवं कुर्सी रखी है जिस पर शायद कान्वेंट स्कूल के प्रिंसिपल बैठते होंगे। टेबल की दूसरी ओर तीन अन्य कुर्सियां रखी हैं, कामिनी की मौसी नीलम ने शागिर्द को कुर्सी पर बैठने को कहा तो शागिर्द कुर्सी पर बैठ गया। ऐसी गद्देदार कुर्सी पर शागिर्द पहली बार बैठा था, मन में अच्छा लग रहा था। कामिनी घर के अंदर चली गई। एक मिनट बाद कामिनी की माँ कविता आकर बड़ी वाली कुर्सी पर बैठ गईं, शागिर्द ने खड़े होकर तुरंत उनको नमस्ते किया और फिर बैठ गया।

कविता शागिर्द की ओर मुखातिब होकर---हाँ, बताओ बेटा, आप क्या चाहते हो ?

शागिर्द---मम्मी जी, मै कामिनी से बहुत प्यार करता हूँ, मै उससे शादी करना चाहता हूँ।

कविता---बेटा, ये सब कैसे संभव है, अभी तो आप लोगों की पढ़ाई की उम्र है, पढ़ाई करो, फिर सोचा जायेगा।

शागिर्द---नहीं मम्मी जी, मुझे अभी पूर्ण आश्वाशन चाहिए, जब तक आप मुझसे वादा नहीं करेंगी तब तक मै यहाँ से नहीं जाऊंगा।

कविता---शागिर्द बेटा ! ऐसे जिद्द नहीं करते, हम लोग ऐसे कैसे आश्वाशन दे सकते हैं, आप अभी अपनी पढ़ाई करो, फिर देखा जायेगा।

कुछ देर बाद कामिनी का भाई-- पवन ऑफिस में आता है, शागिर्द उसे भी खड़े होकर नमस्ते करता है। पवन शागिर्द को बहुत समझाता है, कहता है कि अभी मान जाओ तो अच्छी बात है, वरना बाद में बहुत पछताना पड़ेगा। वह अपनी मम्मी कविता से कहता है कि इसे ठीक से समझा दो, ऐसी फालतू बातें न करे, समझ में आ जाये तो ठीक है, नहीं तो इसे कार में बिठाकर यमुना के कछार में ले जाकर काट कर फेंक देंगे, साले को !

शागिर्द भी आज अपनी जान हथेली पर रख कर आया था, उसे या तो शादी का आश्वाशन लेकर जाना है या फिर मर जाना है, उसने पवन से कह दिया- भैया, आप मुझे चाहे मार डालो, लेकिन मै शादी का आश्वाशन लिए बिना नहीं जाऊंगा। पवन शागिर्द को बहुत उल्टा सीधा बोल रहा है, गाली भी दे रहा है, लेकिन पवन के गुस्से और उसकी धमकी का जैसे शागिर्द पर कोई असर ही नहीं हो रहा है। कामिनी की मौसी नीलम सबके लिए चाय बनाकर लाती है। शागिर्द का अन्तः मन कुछ भी खाने-पीने की अनुमति नहीं देता है, दुःख से भरा हृदय भला चाय कैसे स्वीकार कर सकता है। शागिर्द की अंतरात्मा यही चाहती है कि या तो उसकी कामिनी से शादी हो जाये या फिर मौत ही मिल जाये, वह मृत्यु को ख़ुशी-ख़ुशी स्वीकार कर लेगा, क्योंकि कामिनी के बिना वह वैसे भी जीवित नहीं रह पायेगा।

लगभग डेढ़ घंटे हो गए, कामिनी की मम्मी, मौसी व भाई पवन शागिर्द को बार-बार समझा रहे हैं, लेकिन शागिर्द अपने इरादे से टस से

मस नहीं हो रहा है। पवन बार-बार चेतावनी और धमकी दे रहा है, अभी मान जा साले, अभी मैं कुछ नहीं कहूंगा, चुपचाप अपने घर चला जा, वरना मेरा मूड ख़राब हो गया तो अंजाम बहुत बुरा होगा। लेकिन शागिर्द अपनी जिद्द के आगे किसी की बात मानने को तैयार ही नहीं। इसी बीच शागिर्द की नजरें कामिनी पर थीं, शागिर्द आज जिंदगी-मौत से जूझ रहा है, लेकिन शायद कामिनी इन सब बातों से बिलकुल बेपरवाह थी, उसे शायद शागिर्द की जरा भी फिक्र नहीं थी, उसके चेहरे पर जरा भी सिकन नहीं थी। ऑफिस के एक कोने में स्टूल पर टेलीफोन रखा था, कामिनी शायद अपने पापा से बात कर रही थी, बात करते समय वह हंस रही थी, इसके बाद उसने एक दो लोगों से और बात की, तब भी वह हंस-हंस कर बात कर रही थी। अभी तक शागिर्द के दिल में कामिनी के लिए बेइंतहां प्यार था, उसे भी विश्वास था कि कामिनी के दिल में भी कहीं न कहीं उसके लिए प्यार है, लेकिन ऐसे समय पर जब शागिर्द अपनी हथेली पर जान रखकर उसकी मम्मी से शादी की बात कर रहा है तब वह हंस-हंस कर बातें कर रही है। शागिर्द मुसीबत में है, उसका भाई उसे धमकी दे रहा है, और कामिनी उसके दर्द से, उसकी तकलीफ से बिल्कुल बेखुद है ? कामिनी को इस समय शागिर्द के दुःख से दुखी होना चाहिए, न कि हंसकर बातें करनी चाहिए। ये सब सोचकर शागिर्द का दिल बैठ गया, प्यार का सारा भृम चकनाचूर हो गया, उसे अब पूर्ण अहसास हो गया कि कामिनी के दिल में उसके प्रति जरा भी प्यार नहीं है। शागिर्द का दिमाग ठहर सा गया, उसे अब अहसास हुआ कि वह उस लड़की के लिए जान दे रहा है जिसे उसकी जरा भी परवाह नहीं, शागिर्द के दिल पर क्या बीत रही है उसे जरा भी चिंता नहीं, क्या उसे ऐसी लड़की के लिए जान देनी चाहिए। शागिर्द के अंतर्मन ने कहा, नहीं, ऐसी बेवफा लड़की के लिए जान देना ठीक नहीं है, शागिर्द के दिल ने एकदम अपना निर्णय बदल दिया।

तब तक लगभग दो घंटे हो चुके थे, शागिर्द ने कविता की मम्मी एवं भाई पवन से कहा कि उसे बहुत बडी गलतफहमी थी, जो अब दूर हो गई। अभी तक उसे यह भ्रम था कि शायद कामिनी भी शागिर्द को प्यार करती

होगी, शायद वह चाहती है कि शागिर्द उसके घर आकर घर वालों से बात करे, लेकिन घर पर कामिनी के व्यवहार से, उसकी गतिविधि एवं हाव-भाव से सारी गलतफहमी दूर हो गई। शागिर्द ने अंततः सभी से माफ़ी मांगी और कहा कि अब वह अपने घर जाना चाहता है, अब उसकी कोई इक्छा नहीं है, न ही उसे अब कामिनी से शादी करनी है। उसकी जिद्द की वजह से सभी घर वालों को बेहद तकलीफ हुई, इसके लिए उसने खड़े होकर हाँथ जोड़कर सभी से माफी मांगी।

लगभग ढाई घंटे हो गए, शागिर्द का ड्रामा, उसकी जिद्द देख-देख कर पवन का पारा हाई हो रहा था, गुस्से से उसकी आँखे लाल-पीली हो रही थीं, मन ही मन वह अपने आपको कोस रहा था कि अब तक वह शागिर्द को क्यों बर्दाश्त कर रहा है, उसकी मम्मी बार-बार उसको समझा बुझा कर उसका गुस्सा ठंडा कर रही थी। पवन का इतना ज्यादा क्रोधित होना स्वाभाविक था, क्योंकि वह कामिनी का भाई था। कोई उसकी बहिन के बारे में इस तरह की बातें करे, प्यार व शादी के लिए जिद्द पर अड़ जाये, तो वह कैसे बर्दास्त कर सकता है।

शागिर्द ने सबको सॉरी बोलकर चलने के लिए सीढ़ी की तरफ दो कदम आगे बढ़ाये कि पवन आ गया, उसने शागिर्द के कंधे पर हाँथ रखा और बोला--अब तो बेटा तुमने बहुत देर कर दी, अब तो ऐसे ही नहीं जाने दूंगा, अब तो तुम्हे परसाद जरूर मिलेगा। शागिर्द को पता है कि उसकी जिद्द ने सबको दुखी और परेशान कर दिया है, लेकिन वह कर भी क्या सकता था, उसके लिए तो आज जिंदगी-मौत का दिन है। उसने सोच लिया है कि आज उसे कोई मारे या काटे, या मर भी जाये तो उसे कोई गम नहीं होगा, आखिर अब वह जीकर भी क्या करेगा, उसका सब कुछ तो चला ही गया, उसका दिल टूटकर बिखर गया। शागिर्द की वाणी निःशब्द, शरीर निष्क्रिय और दिमाग शिथिल हो गया है, जीवन के प्रति उसका मोह पूर्णत: भंग हो चुका है।

पवन शागिर्द को सीढ़ी से नीचे ले जाता है, पवन के साथ एक व्यक्ति, जो शायद पवन का छोटा भाई है, भी पवन के साथ नीचे आता है, उसका

नाम सुरेश है। नीचे काफी बड़ा अहाता है, वहां पर पवन क्रोधित होकर शागिर्द को आदेश देता है---चल साले मुर्गा बन, साला कमीना, हरामजादा, `कलयुग का मजनू'!

शागिर्द मुर्गा बन जाता है।

पवन सुरेश को आदेश देता है---जाओ, वहां से दस ईटें ले आओ ,

सुरेश बॉउंड्री के निकट जाकर दस ईटें लाता है।

पवन---सारी ईटें इसकी पीठ पर लाद दो।

सुरेश दसों ईटें शागिर्द की पीठ पर रख देता है। पवन क्रोध में चिल्लाते हुए मुर्गा बने शागिर्द को हड़काता है---टांग सीधी रख साले ! जरा भी तिरछी हुई तो टांग तोड़ दूंगा।

शागिर्द बिना कोई चूक किये टाँगे सीधी रखे हुए मुर्गा बना रहता है। उसकी टांगें टूट जाएं, शरीर अकड़ जाये, उसके ऊपर और बोझ लाद दिया जाये, वह मूर्छित होकर गिर पड़े, इस बात का उस पर कोई फर्क नहीं पड़ता। जिसका दिल टूटकर बुरी तरह बिखर गया हो, जिसके जीवन-मरण में कोई अंतर न बचा हो, उसके शरीर को कोई कितनी भी चोंट पहुंचाए, लाठियों से मारो या चाकुओं से गोदो, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसका दिल- दिमाग और शरीर सब शून्य हो चुका है।

पवन सुरेश को लाठी लाने का आदेश देता है। सुरेश छह फिट लंबी बांस की मोटी लाठी लेकर आता है और पवन को दे देता है।

पवन अत्यधिक क्रोध में शागिर्द से कहता है---हाँ, तो तू कामिनी से शादी करेगा ? मेरा बहनोई बनेगा ? ले साले, टांगों में पीछे की तरफ पिडरी में जोर से एक लट्ठ जमाता है, फिर लगातार चार-पांच लट्ठ और जमाता है।

शागिर्द अपने दोनों पैरों को सम्हालते हुए लाठियों की चोट को हजम कर जाता है, मानो उस पर कोई असर ही न हुआ हो।

पवन दो मिनट के लिए सुस्ता लेता है, आखिर लाठी चलाने में भी तो ताकत लगती है। दो मिनट बाद पवन का क्रोध पुनः दिमाग पर सवार होता है---क्यों बे साले ! तू मेरी बहिन से शादी करेगा ?

शागिर्द कोई जवाब नहीं देता है।

पवन शागिर्द की जांघों पर पांच-छह लाठियां बरसाते हुए---लगता है अभी साले पर कोई असर नही हुआ है।

शागिर्द की पीठ पर लगभग तीस किलो का वजन रखा हुआ है, एक जांघ में ज्यादा चोंट लगने के कारण शरीर एक तरफ झुक गया है, अपनी साँसों को नियंत्रित्र करते हुए उसने इस असहनीय दर्द को सहन किया एवं शरीर को संतुलित किया। जब व्यक्ति की साँसें शिथिल पड़ जाएं, ह्रदय की गति धीमी पड़ जाये , फिर ऐसा कोई दर्द नहीं, जिसे सहन न किया जा सके।

पवन थोड़ा रुकने के पश्चात् क्रोधित होकर फिर से वही प्रश्न दोहराता है---क्यों बे कमीने ! तू कामिनी से शादी करेगा ?

शागिर्द दर्द भरी धीमी आवाज मे---नहीं।

पवन शागिर्द से---बोल साले ! कि कामिनी मेरी बहिन है। पवन शागिर्द के पैरों में फिर से पांच-छह लट्ठ जमाते हुए, बोल साले हरामजादे ! कि कामिनी मेरी बहिन है।

शागिर्द मरी हुई आवाज में वैसा ही बोल देता है। पवन के ह्रदय को कुछ ठंडक मिल जाती है

सुरेश का मन पहले तो चाह रहा था कि शागिर्द को सजा मिलनी चाहिए, क्योंकि उसकी हरकत से पूरा परिवार सकते में आ गया था, शागिर्द की जिद्द के कारण हर कोई हतप्रद था। लेकिन अब शागिर्द की दशा देखकर उसका ह्रदय द्रवित हो रहा है।

सुरेश पवन से रिक्वेस्ट करता है---अब बस करो भैया ! अब मत मारो, मर जायेगा, छोड़ दो, जाने दो।

पवन---छोड़ दूँ साले को ? इतनी आसानी से ? इस कमीने ने ढाई घंटे परेशान किया है हम लोगों को। पवन शागिर्द की जांघो में फिर से चार-पांच लाठी मारता है।

ऊपर पीठ पर तीस किलो वजन और पैरों में चोट के असहनीय दर्द से शागिर्द के पैर काँप रहे थे, असहनीय दर्द से वह कराह रहा था, इस बार की चोंट उसके पैर बर्दास्त नहीं कर पाए और शागिर्द वहीं लुढ़क गया, पीठ की ईटें नीचे गिर गईं और शागिर्द उनके ऊपर गिर गया। शागिर्द लगभग आधे घंटे से मुर्गा बना हुआ था। तीस किलो वजन और पैरों में लाठियों की बौछार उसका दुबला-पतला शरीर बर्दास्त न कर सका। उसके पैर, उसकी कमर जकड चुकी थी, वह अर्ध मूर्छित अवश्था में पहुँच गया था, बेहोश होने में थोड़ी ही कसर बाकी थी।

सुरेश शागिर्द की दशा देखकर घबरा गया, उसने पुनः पवन से प्रार्थना की---बस करो भैया, मर जायेगा बेचारा !

पवन क्रोध में---मर जाये साला ! अर्ध मूर्छित अवश्था में पड़े शागिर्द को पवन ने दस-पांच लातें जमाते हुए अपने गुस्से को लगाम दिया।

सुरेश पवन से हाँथ जोड़कर---प्लीज भैया, छोड़ दो, जाने दो !

पवन शागिर्द को लतियाते हुए---चल उठ, भाग साले, कमीने !

शागिर्द थोड़ा सम्हलता है, किन्तु उठने का साहस नहीं जुटा पाया, वह पुनः गिर पड़ा। अब उसे जिंदगी से कोई मोह नहीं रह गया है, किसी बहाने मौत मिल जाये तो अच्छा है, दिल में इतने गहरे घाव लेकर वह कैसे जीवित रहेगा। शरीर के जख्म तो कुछ दिन में भर जायेंगे, लेकिन दिल के जख्म कभी नहीं भरे पाएंगे।

पवन शागिर्द से गुस्से में---उठता है साले, या फिर दस-पांच और जमाऊं ?

शागिर्द किसी तरह खड़ा होने का प्रयास करता है किन्तु खड़ा नहीं हो पा रहा है, जांघों में व पिडरी में अत्यधिक दर्द है, जो काबिले-बर्दास्त नहीं है। किसी तरह लंगड़ाकर वह दीवाल तक जाता है, दीवाल के सहारे सीधा खड़ा होने का प्रयास करता है। वहीं पर दीवाल के सहारे उसकी साईकिल खड़ी है।

पवन सुरेश को आदेश देता है---इसकी साईकिल की हवा निकाल दो, जाये साला मुंडेरा, दस कि.मी. पैदल।

सुरेश साइकिल के दोनों टायरों की हवा निकाल देता है ।

शागिर्द लंगड़ाते हुए, अत्यधिक दर्द को बर्दस्त करते हुए, साइकिल लेकर किसी तरह गेट के बाहर जाता है। लगभग साढ़े नौ बज चुका है, बाहर पूरा सन्नाटा है। शागिर्द दस-बीस कदम आगे जाकर, साइकिल खड़ी कर नीचे बैठ जाता है, थोड़ा दर्द कम हो जाए तब चल पाएगा। कुछ देर बाद साइकिल लेकर बेआबरू होकर शागिर्द मुंडेरा के रास्ते चल तो दिया है, लेकिन घर जाने का उसका दिल नहीं कर रहा है। उसका मन कर रहा है कि वह अपनी मोहब्बत के लिए क्यों न फ़ना हो जाये, यमुना नदी वहाँ से लगभग दो कि.मी. ही होगी, वहां जाकर क्यों न आत्महत्या कर ले। फिर सोचा, कि क्या एक बेवफा लड़की के लिए आत्महत्या करना उचित है ? उसके मन ने कहा, नहीं, ये ठीक नही। यही सोचकर वह धीरे-धीरे पैदल जा रहा है। चलने से उसका दर्द और बढ़ जा रहा है, लेकिन घर तो जाना ही पड़ेगा, नहीं तो छोटा भाई- दीपक बहुत परेशान हो जाएगा। दर्द सहते हुए, रास्ते मे कई जगह रुकते हुए, लगभग तीन घंटे मे शागिर्द मुंडेरा पहुंच पाता है।
